Birla Central Library.

बिड़ला सेन्ट्रल लाइब्रेरी

लिपि मूल्य पृ. संख्या १४८ x ३१ पंक्तियां x ८ शब्द / २५०

ता० २४-६-४८ = २८ रु० ५ आ० ३ पा०

लिपि कर्ता — बनवारीलाल तिवाड़ी

BIRLA
Pil
19780
10800
091.954
R142RG
V.13
~~19780~~
10080
C/81
CR-85

विषय सूची

		पृष्ठ संख्या
१.	गीत कवित छंद (राजाओं के) (अनेक [illegible] आदि)	१ से ५३
२.	~~[illegible]~~ पत्र	५३ से ११०.
३.	गोरख जन की बावनी	११[illegible] से १२०
४.	गीत तथा लावणी	१२० से १२५
५	रंकोटा	१२५ से १३३.
६	हूमची	१३४ से १४२
७	हूमची	१४२ से १४५.
८	गीत छप्पै सवैया आदि	१४६ से १४९.

॥ श्री गणेशाय नम ॥

॥छंद दोमलीया॥ चारण माहदान जी रा कह्या॥ माताजी
श्री चालक नेचीरा जी रा॥ दुहा॥ चौले राय री चाल री।
माजी सबली मढ॥ वलीयो दल ढलीयर विचम।आगंण लीयो
अंब॥१॥ छंद दोमलीयो॥ सब माइ कवीठ संभाल कसे वग)
भाल अंबाल करी समडी॥ बकराल कसीह चौठ नर दायक)
पैतर पालक आगु रवेडे॥ चरव नरव सरूप रचे चरतालक
दाणवा गालक सब दीयो। प्रत पालक बाल करो प्रआलक)
जोगण चालक नेच जयो॥१॥ रण तालक मांट सत्रा रस
रालक। कम हो पालक सेव करे।धम रालक सोस दोला
लंक चमर।तेज न नीलक माण तेरे। अंक रालक धार
चालीस ओपत।धार धार लस आज वीयो॥२॥ फर पालक
बजडा क्रम मांकच मांक वते वल हुक चडी खबडा कहुमे
पड डंक वेरांक चमां कंम जावण नाग सुरा असुरा
कनमे। हद धाक सराक पीया कहुमे साथे ले बकरा
कंच ठांक लीयो। प्रत पालक बालक०॥३॥ धम धम
नचे धम धमनचे धरने वरचे झम झम नखर।नम
नम भवर नोच चोसट नाचत डौड मरूड मम महदंम)
छम छम आभुरवण अंग ठणकत माण उद्देरीम सभे
भैर। प्रतपालक०॥४॥ झणणाट उडे डमरू घम नाफर
बबड झणणाट बजे। रवपरा खणणाट होवे मल रेवण
चोलत तणणणाट चंजे। नचवर घुणणाट फणम बजे
नेवर। छत्र छाटं चणण चयो। प्रत पालक०॥५॥ चंड
मंड चमंड वहंड वेहंड कच्चा मंड। नोखंड उडे भुजंड
नमे। पर चंड हुडंड उडंड प्रचंडत। फंड डारंड बीखंड रमे)
मुंड जोगण चंड रवतत जोग डाट। खंड अखंड सरवंड
खंयो। प्रत पालक०॥६॥ मर लक गसुल बंज अंग सुरवण

कोर जरो परलक करे। नखतर खर लक जम बेजै नेवर। तेज
खी भरलक तेर। मुरलक का होप कफल ऊडे मरव हार
लड़ी दूलत क्षीयो। प्रत पालक बालक रोग प्रजालक। जोग
ज चालक नेय जीको॥७॥ चरत राय सवाय चाय सचरख
गाय उमाम रीमहाय गुंज। सुर राय धनो माहर माहर
माय सबकीय। धाय स्वसर खयकं चरा। गाढ गांम
मंदिर चगय गंजा परे आप भवानी स खोह अयो। प्रत
पालक बालक रोग प्रजाकल जोगज चालक नेय जोयो।
जोय जोगज चाहत करै चंजीयो॥८॥

श्री तुलेशराय प्रसादात जी। श्री सरस्वती नमः। श्री गुरुभ्ये
नमः। अथ पुस्तक कव्यात की लिखते॥ रजपुतां का गोत॥
त्यारी कशा तथा पीडावली तथा प्रपाड़ा लीखते। अक
प्रथम जुदा जुदा साख रा कवित॥ कुसम्या सीसोद। पीपा
मांगल मार रूपा। अजब रीयार उडंड। केतवार कड़ हाकूपा
जीमल चीरण तूल। हुदैगो रा गरा हत्ता। नज प्राहुतल
देड। वो सारस भयै बंड बया। आसावत औडा कडो
करा। भरे वडा भड़ अवतरो। सुदोत पालक चोल्ल गाजा
चौबीस साख गैलोत री॥ अथ चहुवाणां री साख॥ कवि
त॥ खीची चहूवाण हाडा वालि चखोलंगा हुवा। माद्रे
चामेलण। गरहर दतर वोहल गव। वागौड चास्या
चौर वड हुवा कटवांयच। वाल सरवा वे बदण। सेला
नुनुवा मंमरेचा। बालीत बरड अरू देवडा पावी
चंदण पाण री। रेवपरा पला चेचीवा चहीं। चोवीस
साख चहुवाण री॥१॥ अथ राठड़ री साख॥ कवित॥
धाघल सोचल धूहड़। धोरवरी वदल सु बदण। खेडे
चाबड़ खवा। धवां चाचरा चांदिलण। वेहडी या दल
बंभ। वोरे चाक मंदकाहेचे। कोरड़ीया कुल करत। हाथा
अरीया सर चहौये। वेर बाराह मेह सवदू। मुणहेक
सारै मुलक। हरोयंद अंद नर हर तणा। ये रे साख
कुल तलक॥२॥ अथ भाटियां री साख रा कवित॥ भाटि
जादव भला। जंको ग्रुप्त सारो जाणे। मांडे चावडे जुगा

वीर कुपुत्र पौते | जोड़े चीजोड़े का जादव | राज अरीयां दल साजा | बीदा वाहरा चलेइ | जुध कीजे काजा | लंका तोड़ सुसुजस लेहे | धन धोरा उधो धरे | मोंड़े का आज अरीयां मंजण | सात साख जाँदे सरी ||१|| अथ पुवार की साख रो कवित || प्रथम सोड़ पुवार | सारवला पुवार सवाई | चवड़ बेड़ जुचत | खेरी अरया दल खाई | खड़ सागर खेर | पाणो सामल पड़ कोरा | मारवल मौमल भला जुधा हु मड़ बोड़े मोहर | काला पुवार कोवा वाहर | कार सुधा ड़ोड कोड़क कहे | उमट चोडु समर धता | रेवड़ जुग कीरतार हो ||५|| कादल दाता करण | हुस खेरीया बोड़ण | पिटी टेवा पुवार भला दातर देवा भण | बेह वाबल हर बोड़ | जहलड़ अरीया गांहे | जीधा पुसरे जको दोहा अरीया दल दोहे राख मुआ दीघ तोण खद | बल बेरण डीके धार हो | सुड़ फरक बारड सही | पतीस साख पुवार की ||१|| बालवोत रा कवित || बहेला बाल सोल | रे हल दीयण नर लीजे | करवा राड़का दल बेरर | सुड़ भण खट रच बीजे | महोड़ा आलमैच खोड़े चरेव राड़ा खग | तबड़ कीया महल गोत | अरवड़ बोल सो ओर | बड़ सुड़ मुसुड़ा भण गोत हेद राण का मोहारा हर हुता | दला वड़या ने भड़ || अथ जुदी जुदी साख रा कवित || कुमीयो थोक हो रूक | छेरे मोरी कज दाखा | मोरी मोहल राखा | राक चोपत भड़ अखा | वे गौरी कज धार | कछुवा बीरज कस कहीये | बलो भलो भला कहाख का | गौरवो अंक जग होये | बागड़ी फो रूक न कुपये | दखा साखन को हुई | खड़ वड़ सा कहीये खत्री | जथ साख जुदै जुदै ||१|| अथ गौड़ जलाम के साख रो कवित || गोड़ बड़ गज खंभ | छोड़ अरीया सर दहीजे | उरे हुड़ा मड़ आज | जको सुसबद जुग लीजे | सलीयल सो सारा खेरे | तुवर डाहड़ोण तबीजे | बोड़जा बडदे देत | गौड़ खट साख जाणीजे | मकवाण राजा प्रवो मही | हे औरबल देवा हमल | खट साखण प्रबो मही | हे औरबल देवाह मल |

रवट खातोड़ कहो रवरो। दिय सारव म्हाला दुजला ॥१॥ कवित
वड़ गुजर सड़वाल। बेतु तड़ अंक बंदीजे। ईदो अर पडीया
रथ मल बड़ सुजरग धरीजै। जेठ वासो धन र कावा।रग
अंम मर आरवा। ऊड़वा बीराक। खतीयां सुला दारवा।
बालीगे हर बाल। जोड़या बले। पडीरे कोइल वलावजा
सर वहीया रोम र माल सरस। गाजो सा गुई २ गाजा ॥२॥
अथ सूर्य वंश वर्णन॥ अवतार चरीत्रै वार्तका है सो लीखा
कथ्यते। आद श्री भंवत सेस सजयां प्रज जख पर पोढ्या
प्रलय को जल वढो। जेठे नाभकंवल कोना कुपसे से सु
कमल फार हुवो जोंक मस्तु ब्रह्मा अवतार भयो। अर
ब्रह्मा ने बीस्मय हुवे मे कुण हु मारे मात पिता कुणा
है या नाल नीलम धण प्रत पार नही आयो। कलप
तीर वहो भया जठा ताई पछे काहीर आयो। पछे
गरभ ज्ञान उतपन हुवो। पछे नेम वाणी बेदि सु कहो।
॥दुहा॥ मुल वंश धरि सोड़ सम उक बीसम कीय आनो
साध हुवा पंजत न तु। बीहसु कह्यो नम वाण॥१॥ पछे
ब्रह्मा जी तप कीयो कल प्रयंत॥ छंद पद्धरी॥ सोई गान
संत मन वच्य सेमत होरि दयो दरसण तप उग्र हेत।
तिहो छबी देह जति लिखो अनंत। कर परस करेयो
तब रंभा कंध। चेतना संबी भई वदन चारो। निज रूप
सगुन नयन निहार। आनंद अंचु रोमांच अंग। उर
उपज भाव सांतुक अभंग। देवा धि देव बिधि नाम
सेल। पद दियो स्त्रीष्ट करता नवीन। बिधी भये प्रजा
पति चित बीचार। उतपन तेज मोरगो अंधार। नव
द्रव्य बीन उतपति नाम। तहां भये चराचर जीव ग्राम।
महो, बाव, गगन, जल, तेज मेल, रवे, भूमि, सलील
चर चरित रवत; धरो काल मूल आदि जीव धात।
बीस्तार श्रीष्ट बदन बीरख्यात। चतु रवान चतु भव आखो
चार। वस करम जोग दुरव सुरव विचार। बीस्तार बीरव
माया विलास। अर रहत सवन तो दूर आप। कत उयो
पाइ पद ब्रह्म लोक। सब वस्त भंम मय सुर अशोक।

चववदन बेद बाणी सुचार। कत करम लोक उधार कार।
उपंजे मरीची विधि उदर आय। सुत भये तरन कस्यप
सुभाय। कस्यप प्रजा पउर सान कुल। बिव स्वान भये मनु
धमि मूल। मनु वैव वस्त। भये महीपाल। बिस्तार बंसनि
नैते बिसाल। ईछ्वाक भये आखंड लेस। सुत तिब कुच्छ
उपजे बिसेस। उपजे ककुस्थ। अति बल अमीत। पृथी भये
अनेनार प्रथु पुनीत। भये बीरव कोच सुत चंद्र बीर।
जुव नास्व धमि सावस्त धीर। ब्रह दस्व कुवलया स्वक
बिनीत। उपंजे दृढास्व। तिहि सुत अमीत। हरी नास भये
सुत पुन्यहीन। मंहि भये नीकुंभ दल बल समेत। बरबीर
भये नृप बरह नास्व। सम धरम करम राजा कसास्व। सेन
जित भये जुबनास्व सुर। दिवे समान धातार सपुर पुर कुस
पुत्र मधद्द स्पु वाय। अनि रण्य गेह तुकीज स्व आरे। अरण
हिन बंधन पुत्र नाम। सति व्रत नृपति त्रिसंक नाम। चक
वेद सहाय कहरी श्चंद्र। अवतार सत्य [illegible] अवनीस
ईद्र। रोहीत नरेस भये हईत राज। चंपक सुदेव छत्रमाज
पुनि विजय रुरक भये वक्र धीर काहुक सुधरम जुत। सगर
धीर असमंज से राजा असमान। प्रगटे दलीप गुण पूरी
प्रमान। क्रम नृपति भागीरथ उग्र कीन। पुहु मी सु अभिन
तोगा प्रवीन। सुत भये नाम पुनी सीधु दीप। अय ताव
प्रगट पुर नृप वीप। रिपर्ण भये मही सरब काम। तहां
भये सुदास स्योदास ताम। असमक पुनि मुल दीप।
बरवे सट भये। खट्वांग बीर। भये दिवे बाहु रघु।
अज सधीर दसरथ दुतीय भये विरव देव सबसेस
सुर नर करत सेव। राजा धि राज सुत रामचंद्र।
अवतरे धवर प्रहुमी सु ईद्र॥

गणेशाय नम॥ अथ ग्रंथ उमेद वृत्त प्रकास लिख्यते॥ चाप
जीवर्णो रो कह्यो॥ दूहा॥ सुरसती उमती समप। गुनती
अरच सुजांण। मह माया पाय नमु। देसणोक दो वाण॥१॥
बारवीणी सारदा वंस। सुपर गुकुल मांण। चत्र धर नृप

ऊमेद सो। हे कीनो है दीवाण ॥२॥ करन भोज बीक्रम कहे। भाखवं नव रस भेद। अरु रीह छत्र धारीया। कायौ तुर रो उमेद ॥३॥ छंद भुजंगी ॥ जब वंस लाख्या जसा भुप जोपै। अजौ रणमल जोस सर लाज ओपै। जैनै बंस सारंग सीसोद सोभा। जीने ठेल पत साह मुज राजथोभा जीनें वंस जोगा जसा भुप जग्गो। रखा बीच गाढो करी कीत रग्गा। जैनै वंसनवदु कुल सुर नेणा। पत्री गाया जगनाथ सु भलो जेण। बीने भान महा सोग भुग्गबीराजै सारंग अनी अंग कीत छाजै। प्रथी नाथ पीथल कमौर पती। जीने काच काच लछमन जती। जीने वंस जगतिस जालम जालं। अने देस बेस धंरो पेड जाल। अजीत जीने वंस पे भुप रखो। जीने कन भोज भजे भोम जेसो। जीने वंस उमेद सा भुप आया धरा धम छाये जे कुल धन्य छाया। जीने वंस नाहर कुंवार सो जगै। जीने वंद हो लछमी आय पगै। जाही कलौ धर कमोर कासो कहायौ। वले पुन प्रताब से कुंवर पायो। असो भाग उद्योत कारी सो अगै। जसा नरींद सरव के राम जगै ॥२॥ दुहा ॥ प्रगट पुनो प्रताब पुनो। उमेद नंद अकार। हुवो कुवर हुमेर के। कमा अलन हुन कुवार ॥१॥ लखन राम के पुत्र वेहो। बडो चुंड अब भाल। बीखु राय हिंदवाण। धराधत्र गढ पाल ॥२॥ जंग करण नेउ औरंग जेब। अपौ चीतोड सु ओप। जेपुर अरजोधाण के। भड सोहम भोपत भुप ॥३॥ छंद त्रोटक ॥ जंदसाहस कोज केर नवरे। मनु अंबु धरा सु चढे अमर। सज चढि पयौन भिखार दिसा। रंग जंग करन चीतोड रखा। नव रंग चढे रखा तोल नव। जनु जोध सुरवे ले परात जव। अज भाल सु जोध भराथ अरे। भर भुप गोगेस अजीत भरे। कायद पर भांर सुरताण करंग। जीमवन भारथ जान जो जिदम पर जान अजीत जोगो दवरे। कउ होय सुरीत गजेद्र कुटे। लख जान तुरंग नसीरस कुटे। भड भुप पडे कोही सुर भेडे। लखन रखित रार आय लडे।

गर्मके ही सूर मेंडे। लख तुट किन सर आप लडे। गगंकत
सु धोम सुरंग मेरे। अद पंत दुत स्याल आय ओरे।
जटि हथीन होय सुरवागन के। फर फर रमें तेर फगन
के। नव रंग भगे ढलि धन नव। सीसोद अंजन के
बल सीव॥ दूहा॥ अब भगे नव रंग पहु। धरक जीयो
दलि धन। मेद पाट फर हमर दे। युध नर करे तुधान॥
॥१॥ मोर धीज पत साहं मोत। सज आयो धन सेन॥ लखु
दल सोयि लोपी तूर मेवार धर लेन॥२॥ छंद भुजंगी
प्रीयात॥ यहां जाय मोर धीज साहा सज्ज आयो। नरंद
सैव साह पीवान मायो। अरी रवेग साहस मेवार आये
जिन पर धरन लेन सुतन जाये। जरी फोज अंडबर किस
कीते। जिते धार धानंक कर नाल जीते। किते तोलेह नदूक
धते अग्ग सुर। हरख साथ जोध वहरखे हुर। खाग
मार वजि अरी होय खंड। मेर मुप मरी बजे के बिरवंड
तुटे रुंड मुंड कटे हस्ती तुंड। मनो जगन तव बुज तुटंत
मुंड। खंर के मरके लरके खगार। मरके अरके लरके
भुजार। अंजे सुत गेलोत कोमो उबार। मुडे मोर धीम
दल भार मार। धर काज आयो मोजा छोड़ धारंग। [illegible]
मुगल पठान फेर के कमंध। मेर सुर खाग पेरके कजुध।
अंजे चीन अखो पत राड़ अखंड। मेंधो जगन मरधजोदुध
मेंड॥ दुहा॥ अजा राड़ जोतया अमंग। मोर धीन जुध
मेंड। कुल नायक गेलोत के। खगं अरी दल खंड॥१॥
लखन रा तूटो लरन। मुप अजा कुल मान। फोडे सख
खगां प्रसण। मोर धीम तज मान॥२॥ कवित॥ मेमद खास
सु प्रीय। मनहू तुटो मदम पीय। प्रगट धरनि धर परहु।
पुनह आयो चीतोड़ पर। गुण गाहक गेलोत कुलो
धर खाग गही कर। अड पत नूप रांण ओ। उतन
खाग लगी अमर। कुल माण राण मोकल कहुं। दयत
फोज मेली उमर॥१॥ छंद पधरी॥ बज खाग मोर
बीराद बीराद बीर। अध पती बजो तुरा अमीरे। कटके
कसूमर तुरंत केव। उड़ बीर खाग मारा औरक।

चल बोचल सुचल सेसनाग सोय। देक पतौ न भुव नोक
कुराय। लड़ पड़ तके फ झड़ पड़त लोक। झड़ परबत सुर
जंग तुरंग ज्यं क। रवर मरत ~~बक~~ कायर सुकोन। धरकत
जमन तु अरज सुद्रोन। भभद रवान मोर सुमीर। अधपति
अजो जीत्यो अमीर॥१॥ छप्पय॥ रच ~~वर~~ नप्र सरफ। पात
साह आया धरगये। अजो जुध क्रम उठे। लारव दलु टलर
गये। कर पकड़ी के थान। नृप हीदवान ने मजुमरा। अजो
चुर अत भंग। जोध रवागा बजे कर। असुरान दलाखवा
आछटे। बीर मतुर भड़ बीजोयो। अड़ पात नृप नूरि अजो
सम हुव अमरष साजीयो दल छड। मेघ धार नवि मरहं।
मिली फौज करभेड॥२॥ दूहा॥ राज लखन के पुत्र वेहू।
बड़ो चुंड अजमाल॥ कीधू मांण हीदवांण के। ~~धर~~
चत्र नट टाल॥१॥ निरद जोध पुर नाथ री। पुगी राफ
रवरूप। सनथ कमंध बीच्यारी यो। भुलो चुंड कज भूप॥२
॥छंद पधरी॥ कम धाज चद रान बंध काज। बो हो दुब
नीलर लेगाजपु वाज। अधपत चीताड़ नृप कमंध आय
पाह कुवर चुंड के लीग पाय। वहां कुवर दरप कीमो
उछाह। बाजंत्र बाज गायत सुगाय। रंग राग सुन्यो लरव
सुराज। भारवोपाण बंद उम्त भाज। कुवरे गुल सु नई
चुंड काज। राज चिराज तुम पर न रान। कम धान जोध
नट गये कोप यह करहु स्यापन जाय ओर कहे चुड़
अजमल सुनहु काज। मज लखल ये है कर दीनो दान।
मोतिज मोह नृप होय मुकार। करी पतीरव दीनो
कुमार। चुंडे कर अजमाल लखन साह। कर सौभ
ठाकुर सो कुवर। देह रानी के रहो गम आस मोक
मौसो जनम नव मास। समयो देथ सोक वत मे गुर
बार। कर दोयो वारसव कुर कमाल। चुड़े अर अजमाल
कर वीचार। बांहा गृहे रान मांहि बेसार। धर रस्मो
कमधं रड़ मल सधीर। बाइ से कहो कम धान बीर।
चुड़ अर अजमल रहे चीताड़। तो करही कदव नाधर तेही
केर। राणी कहे अजमल चुंड राज। अब छोड चलो चीताड़

आज। चुंडे जद अज कहे सूर। फोहर बहु गतन मोकल से
पुर। निकसीया मुध कुल वंस सूर। कर साम धरम मुकल
नकिरूर। मांडू गढ सधीर बिच रख्यो चुंडे बोराद बीर।
पत साह तणे लगा अजो पाय। पाहर जोर अरद चमर
बगसे सीवाये। सुंपीयो काम सब पत साह। अजमल
सुतेज बधीयो अथाह। अवनै गजनी चढ साह आय। फोहु
नृपत भुप सबल जे पाय। सजीयो कटक गढ पत साय।
अब अजा कहे कीजे उपाय॥ दुहा॥ गजनी साह अगाजी-
यो। सेज फोज धम साल॥ आयो मांडू गढ सुपायो। भुज
अजमल के मार॥१॥ कहे अजो पत सोह कु। मन राखो
मज बूत। हीतो साहे जादो हुआ। तो गाळ रजपूत॥२॥
॥छंद भुजंगी॥ जुध मार अजो उहे सार झलै। हुये बीर
हल्ला वा रत लचार तुल। अहे सोह गादर तणी फोजआंग
जुडे जोध खाग जुटे बीजंग। अभंग उहे तेग गैलोत
अजं। धन तुर बड बादल नेम गाजं। भुजंग खगाट
दीपे बाग मूर। लायो चोसटी घुमर अता तुर। पटक
परात पेरे रेन पातो। खुले कंधके तंमते धरमे जाते।
हुये हुक मुर बजे अक बीर। नृप सू अजमल कुल
चाचं नीर। उभै तुरंग नृप बाग केलम। मुदे साह
गादर उर सांग मेल। छणी पावद तुसक रेर पडी।
कटे होट री दवडा नेम कढे। पेर साह गाद लरे फोज
धूरं। हुवे अपछरा रथ वर पाय हुरे। बरे सूर हूरचंदे
के वेवाण। रक पर पाय तुरे। बरे सूर उरे भुजा रोक
रथ रहे रेख भाग। खगा मार सुर रखे उठ खेत।
छत्री तुर चाहंत मुराल वज मेत। कते गज बाज हय
गजोसान। कीत आपरा मार लुटे कीवान। मनामन
छत्ल लीये लुट मार। जगी माल सांग लुटे के नगार।
लुटे रसय अरला लीये के अपार। ई धजा सोवन के
लुटे सुपार। चंव चामर कारत लीने लुटके। लीये सु सकरी
बाजे बाजे तुरके॥ अजो राठ जीत माडू गढ आयो
बाजा बाजत साहु भोत्या बधायो॥ दुहा॥ अजमलीयो

अलगेह| तांथो नारखण सीलु उत| रतु सल पांदेह
अबाड़ी हुलीयो असुर|| चौपई|| अजमल जीत माडू गढ़
आये| पेटो महो सुरा तब पाये| ईडर गढ़ अजम कर
रावत| पदमी कर थापे| अजै राजाव कीयो अधिचाहू|
पोहरावत पदवी नृप पाई|| दुहा|| करी अरज पत साहसूं
चुंडो तंड सताव| मात बधीरा साह मड़| नीज तुम बचन
सुभाव||१|| तेड़ाव चुंडो तुरत समप पेटो पतसाह कांसेअव
राभु रातबा| बंद साह तुम रीव||२|| सोरठो|| सेर केवे
सेह सार| राज नांण हींदवाण रो| भुज माडु गढ़ भार|
राज भुजा अज माल रे||१|| चौपई|| अब नृप कमध
सु ढंग उपायो| छल मन अच छेह उर छाये| चुकर
मोकम संचारो| तब नृप बड़ मत धार तुमेरो| राणी
सुतं कहे जुब आरन| पट राणी कहे तु आई पायन||पुत्र
मारस रा माई तुम पेरे| चलु तुम बठ रहो सुरव भेरे|क
यह सुन राणी बचन उचारा| पुज रहे जीम करो बेचारा|
||थरीबाच|| अब तुम राणी करी रख रसी| जानु पतीलरन
रवव मन जेसी|| अजमल चुंड बंग ना उभे| पेटुमोकल
मतु का फल पावे|| अब तुम सोहे करो नृप रा अब ही|
नहीं तो जावे मद पार कर जब ही| माड गढ़ कागद मेल्यो
जोये अजमल चुंड कर भेल्यो| बैच नृप कागद उर धार|
कंत मु दीमु सरदार| चढीयो अजो चुंड कल सुर|
हरख बोर वाजन रव हुर| जोग न पाया रसुत सकुंड
माहर माख अजमल सडंड|| होय असवार तुरंग सब
साते| साह सेन श्रव हीन साथी| अजो चुंड चीतोड़ नृप
आयो| सब परजा उर आनंद छायो| आतर रवाग
उडी झड़ रसी| जानु मारव उरजन धन जेसी| आयो
अजो धम दलां उपर| बाजे रवाग बजे रंम तुपर|| छंद
भुजंगी| बजे रवाग बीराद| बीरं बजांर| खड़ तुरंग गाजे
दुतु रारं| हुके सुर सुरं बजे तेग तेगा| कटे सीस के
पर धरनी बेगा| ठरके ठके ठेके ठरके| परे
गज बाज सु कंध करके| धरा वाज अजो लरे सुर

~~[illegible]~~ धार। धरके खगार जनु वज धार। तुटे रुंड
मुंड ~~मु~~ धुटे के कराल। बरे अच्छ सुरं सुलौवे बे वान।
गेरके फेरके लेरके गुजार। खेरके तुरंग तुरके खगार।
कमद वो लोथ तुटे करारा। तुटे जान लगो खुतुटे
सरारा। करे खंड खंड धार धार न्यारे। बीकट छती
काहु वारहं कीरे। मुसमन तुंड तुटे ~~[illegible]~~ केक भुप।
रेरे रुंड मुंड सुतर भुज रूप। गुध मार अंजे गहेसण
रमत्त। मनो मारव गीन जेदेव मत्त। ऊटे सुर केते
पाय रुद्र काली। नचे जोग माया देवे बीर ताली मनो
माल रुद्र कीर लेर मुंड। ऊले चासठा खपर आय
मुंड। परे तुट अश्व अभ माल वीर। धरा धरा वे
छांड नप होय धीर॥ दुहा॥ करे तुरंग अजमत्त को।
बाये पवन चट बीर। अब गोके दल उपरे। नजर
चालव नीर॥२॥ छंद मोती दाम॥ न्रप अजमल्ल चढे
कुल नूर। छकीय कमधाय रंग कर सुर। हुये हे
हुहुकारन सुर हुकार। बके बका जुटत भुप बीधार।
ऊटे सुर शेप तुटे नरे तार। छुटे हेत खाग पर सीर-
बाग। लडे कमधाज सीसोद लखान। बरब्बर बाजत
चौड बखान। धमकंत सेल धमक कटार। मनो चमकंत
दामनि बादल धार। हुये लघ वयन सुर हुकार। मनो
दल आम रव सुर मन सुर हकार। मनो पतन आक्रव
जुगम नार॥ भणे कम बाबत तम शठ खेत। सुध अस
मात वीरे रन जेत। मारव धर लोथ मंडोवर भार।
बीच रत धाम रेरेव सीर दार। मठा धर अंबे वेर
अम मारव। धरा चत्र कोट रखी हुय दात्र॥ चोपई
अजमल्ल आद मातु ताइ उरार। रीके कमंधा छोड़
पलट्या धुर। राज रान हुके धर राखी। सुर चंद नृप
कीनो साखी॥ दुहा॥ मण धार रडमल्ल मरीओ। मामो जो
रसभुज। कीने नीर जुडे [illegible]पार। राज जोधा कुलरज
॥छंद भुजंगी प्रीयात॥ पडे रड माल रुक चीतोड पाये। जुन
भुप जोरे सो भाजे पहोसे। उहां जाय जोधु सुतुटे

अकरीस। वहे नुरमे वाड़ खाँवे विरवांसे। नुरे. गाम द…
कर तेज मलि। हत नमन दीन कोरो दो सुहली। छत्री…
ठुडर मान ऊंचो सुरस्प। ठवं स्पार मेग्म. मपो धोल…
मेच। कोचो का चल मुप नुरे सुकंप। ठेरजोग मग…
कोचो ~~क~~ जगत ठत। बंजे बोर बोर-फेर लोर खोर…
गरजे मनो गंग फुरे गहीर॥ छुरे श्रोण जेम खरस…
धारा। करे कच बोर-फेर श्रोण धारा। नुरे सुर…
मेरे केक मीर। उठे केनुरे कोक टेके सरीर। पिं…
मचोले हुचोले सपुर। परे कापल नुम्के सुर पुर…
ओहे ठुडरो माम जीते उजकवलं। मेनो जीत जोचो…
देवे हमल। येते सुर अजमाल केलोत ओपे। घउ…
हुंट आरव उठवे। अजो सर मुप गडे तेग उठो।…
माद्व जेम वरवा सु बुठो॥ करे अंग अंग सु जो…
कटार। मसुंड नतुंडनेकरे गरार। करे हरवो टेल स…
सुंड कसे। उड पोने के जोकतक आर जवेते। मेव…
माल नुरे लेवेक मुप। अवर खंग तेग उछरे अमु…
करेक धके त छुटे केव सुर। हरकंत खड्दवर पा…
हुरं। मठाइ हुर माम किवनले उठे। करे मा…
प्रान सु छुटे सरीर। वजाइ जठे तेग अजमालव…
~~…~~ नप कापल मंतर कोवेर लोमो। अजे ठुडर मान…
वमं कीतो। उलट नरजे मच रमो प ओपे। खव…
वल जोव अजमाल रहो। जठे सुरपुर सु उड अ…
मेर मागीचो जोध पेले मरक। यह पेर अजम…
धोरे उठारू। जेने ठेर जोचो सुमंग न जाए। अ…
अगमेरे मुप मंडोवर पे। जन श्रावन मार उड गर…
खग बीजली बाढ़ रसी खनके। जीतो धोव धन…
मच उलके। असी रीत मंडोवर लोल अजे।…
रवाग त्याग मुज मार लजे। वरवे खन धान…
वर मोले। धन जेम वड वन नले तेग जैले। करे जी…
माल आपो धावार। जेने जीत मारथ मीमे जे…
॥दुहा॥ कर ओपो फते उराल राज माल्म अजग…

मंडोवर जुरे मही रवल कनधाम उधारत ॥१॥ धराजज
रारवी धज राय कन धान उराण । सधान मंडोवर
अजा मत्त मरद । कर भाले कोवाण ॥२॥ अजत रे
सारंग असो । जोद रवाग रण जीत । धरा राखराखी
बे । गड जुड़ लड़ मजीत ॥३॥ राक दली धर उपरा
आयो रौ धाधार । कीयो साहू सारंग सु । समहर
मेलो मार ॥४॥ भेमेत दल मोकलो । पाताल मेगल
सवार । वेजे से वन्है कीयो । खास दली धर खार ॥
दली हुत सारंग दुझल । मौज भो गीर भेर । सो बोके
पत साहू री । समरह जुरो सेर ॥५॥ छंद हनु फाल ॥
रण भूप कस सरंग । आकास लगि उत वंग । करन
सस्त्र असत्र कहर । गज राव मुरव चढ जुर । कस
सुभड भूप करोध । जनु भीम मरत जोध । अति रोध
फसुज अभंग । जुध करम असरन जंग । पीजाय मरी
जस सब । पुनी मरवहि मन जुड पसाव । उस रन
सजध मसान । अर सुभट जुट अरान । मनु पाराथ
अहुंग कोव । दल हाक वले बस देव । होतंर लंकाल ।
अरा दला रान उचाल ॥ रवाग भार बजे अरि खंभ ।
जनु सर पर तले तनु संब । बजी सु भार वेरार
अरी सीस तुटत ओकार । गजडगहि तबन तग बहे परव
सीस धर वेग । उर हार पुरन होय । सुभ पाय रंभ
वर सोय । भग तुरक खेत अभाग । निज राव मुजस
लाग । पत साहू राज प्रमान । हे छत्र तुरी नवान । कर
जोड़ सारंग कीन । मुज करो मेहेर नबिन । मेद पठस
लाख भाफ नव मेहोर कर छे आप । पत साहू हुकम
प्रमान । रसा खरन छुरी पयान । नव मेहोर सारंग लीन
कीत काजनज रस कीन । मन रान अती फुरमान ।
हीद कोड लाख हिवान । पटोल हु खग भुज पान ।
हेतु सुनाम हीद वान ॥ दुहा ॥ राज सारंग रान जाग
मर डमरी वसु मान मरद पार धन मेदरे । लज तुज
हीद वान ॥१॥ साहू कीयो सारंग सु । गाड़ वीर-हो मेहे

राजा। खम पडिले चीतोड़ सू। फेरे मैले फूर जाय ॥२॥
॥छप्पय॥ सुनहू राव सारंग। कहे माडवी साह कर। प्रुथी
राख प्रनाय। धरा चीतोड़ राज धर। कवरी हैके मोहलोत
चहू मोलोतम सुभट। ते मिक पाट चीतोड़। तीर राज
दउत कहे। सारंग नृप रवीज्यो लिय खाग हाथ उरे
वरन। फत साहु तुंत सारंग पुने। अडी खंम उठयो
अरन ॥१॥ दुहा॥ कही साह ओलग कजे। कुम छोटो
सुन कान। राख धर धर राज के। जकार बहु चे जाज ॥१
॥छंद भुजंगी प्रयात॥ करे क्रोध सारंग उठ करर। ~~[illegible]~~
ग्रेहे रूप ~~[illegible]~~ हेत भगे केक सूर। उठे वीर सारंग चीतोड़
आके पत प्रतम खल खज सपाके। हुवो पात साह
मांडवी मान हीन मत अस छोरी तुरा हीन होन। करम
रंक पात साह धारे मकद। जुरे नागेर वार फिर साह
जुध॥ दुहा॥ कुल नायक सारंग कहे। असी करे न कोय
कोय। प्रुथी समुरन परखीये। खल कलम भ्रम खाय ॥१॥
॥कवित॥ रजत अमर पत साह। सुर लीनो सुरताण भर।
कीतब्बत सब सूर। उठ भागे सु चहु अरके जेठ। ~~[illegible]~~
भइत सारंग। जाय वदन हि सुपते। गढ जीतम
अम जीत। फीहू बरण थंभ पोहेतो। कीता वतनणी
सोहे सु फेरे। भवन गहु जस भारवीये। सारंग सार
मार्के समर। रज तम भर पग रखीये ॥१॥ दुहा॥ कुम
रान आमल कहर। सारंग नृप सरदार। जुध जीतण
खाग सुडण। भुज राखण ब्रद भार ॥१॥ हमानप
साह तता जोर दे। कीतो आय करर। धवत कचन
सारंग सुन। छुटी कोप सूर ॥१॥ कीनो अरज कुंभे नहु
सारंग भड़ कुल सूर। मुगल रज मायर अनस। हुण
के छावर हूर ॥२॥ दीपो हुक राखी दुमल। भड़ सारंग
मेमीत। कीतो वाजा आप कर। जुध जीतो अम जीत ॥३॥
॥छंद भुजंगी॥ चढे सुर सारंग मेले के वात। मत सुर
रूप तासि चढे समात। हवाले तुरीयर पाय से ~~[illegible]~~
सुरहे के। खत्री सांग सेल तीपे बीरध के। मुजाले

वीसाल उजाल सुभाल। घर घार फूटे मनु मग ताल।
प्रहार तस खीन वैतन प्रान। अबारो नीचे ध्यान नैव
उग्रने। करे मुंड टस्सी नंचे सुंड फेरै। सिर मारवल मुंड
लरे संमरे। घेरे सुलह स्वान के श्रोण धार सरस्वती
समान। परे सुर वेते वरे रंभ पान। ठेने काट सारंग
लै तेग हथ। मनो नाग द्रोन चले पथ मंथ। गट
गज काट सुपने नहीर विसाट कलो तोड़ने भेर
बीर। उजरे कितो गाय लीनो सुडक। बरावर खाग
उड़ी भार बंक। करी सोहे सारंग गाय करारो। गज
साहे को नोजतो चल धारो। भूजग न तोले सजे
फान सैन। घजा बच सारंग तारो सुचैन। घनो
देखत खाग हथ धारो। वहे गान सोसु पाल जुरो
बोहारो। कुदम जान खत मनो न को सोहे कोमो। असो
लरे सुर सवंगी पसु लीनो लडी खग खग तुटे कंड
मुंड। खरंग मारे बीर सारंग खंड। दई राम साबास
देखत दूर। हुसो हरबर पाय सारंग सुर। गढ तोर
नागोर मगल गरारु। सारंग करी काम धेन जु सोहे॥
॥दुहा॥ पडतां धार सारंग प्रथी। पडे मुगल पछाण॥ अमरो
नाथ अभंग। बने रंग दे कुंभो राण॥ दुहा॥ कुवर
राणा राय मल के। कुंभा उडणे प्रथी राज। छोटो कुवर
संग्राम सही। मण्ण हिंदू कुल भाज॥२॥ पीपल पूछी विप्र
सु। हम राज जोग सो होय। वहो जनम पत्र बंचके।
करम छत्र नह नह कोय॥२॥ चौपई॥ यह सुन करके
भेम उठे अर। चुव मोहि मार लेहि सागे धर। कर
देमंत सारंग न्रप सुर। पून मोडी राजत देव पूरं।
यहु वीचार मन मे अत आनी। जबर पीपल मन सांत
सुजानी। पुनि यह चलहु मात के पास। स्थानी न्याय
जु करेह खुलास। स्याणी पास जाइहु मिलो आस। पुनी
चंडी के लागे पाये। कहे सगत प्रत न्याव सु कीजै।
देस चीतोड कनह तुम दीजै। स्याणी माता कहे तुम त्यांरे
बंद बद बेदहू कारण बीचारन। घर बेठे न्रप अप अप

धाम। पुन स्वामी कहे वचन प्रमान। पीथल तुम बैठे चट
पाट। धर मा दीसांगे नृप काट। पुत्र सारंग माहे दल
पास। मेरे सुरज मल बैरे निवास॥ कहे स्वामी न्याव
तुम कीनो। देस चीतोड़ संग्राम कु दीनो। अचर पीथल
बैठे उड़ जासी। घर माहे सांगे नृप थासी। घर सारंग
कार रेहु धारे। मेरे देस सुरज मल मारे। यह सुन
बचन पीथल अकुलाय। यहु रहु मारन करे उपाय।
सारंग सुर सांगो घर बंटक। कार वहु घर करे
नीकंटक। सारंग सुरज मल नीकारन। मो हुथ जाय
संग्राम संग्राम कमारुं। यह गुध पीथल रच्यो अकारो
कहे बेरव पड़ेव जिन कीरो॥ दुहा॥ सारंग सुरज मल से
जंगल रत कर जोव। प्रथी राज धारी पचल। अध पत
स्वकु न ओव॥१॥ छंद पधरी। कुल भान नृप प्रथीराज
कोप। अध पत मयंद जनु भीम ओप। सारंग हुत
नृप के सधीर। बेहु सुभट सुछोड़े देस बीर। सुरज
मल सारंग कहत सोय। कोबी का गाम जाय कोय। प्रथी
राज आय मत करुहु पेच। स्वाम बत देखा धरा रेच।
सारंग सुरज मल चरण सेत। यक दीवस नीकलीया
देहु अचेल। पठीयो गह जांहे खद वाले। कुल नायक
कीनो कर कृपाल। कहे सुरज मल कहत नाम कीन।
कुकल सारंग स्वर बर सुदीन। यह बात क तीछे
स्वर वढाय। उपर बहु सारवा सुत उ आय। रहु
लीयो बाल सारंग कैद। अदभ तीर सी स्वर वरसु
ओद। अड़ पायत स्वखर भयो अग। गुद जीतो सारंग
और जंग। यक दिवस सारंग जबर सु आय। चीत
कुवर रो धरीयो सीवाय। प्रात समे करत सारंग पुजा
दल ध्यान सामी स्वर क्रम दुजा। चमीराय करत
पुजा सवाय। यह समे कुवर प्रथी राज आय। कुव पिछे
आय पाही के वाम। भड़ धधक उठ सारंग धाम। वहु
कुवर दुरव कीनो बीचार। पाट बाव करे करवद
प्रहार। हे कुवर देरव तुम मुक्ं उाय। स्वार जडी

फरवान खान। कर बीकट पंग नीकसो केवान। परीजाय
बीज मान हु प्रमान। यह देख कुवर खत्र वरह अंग
भुक तेग समरन हो करु जंग। प्रथी राज कहे सारंग
पुत। नर मल सु आप जल जंग जोर। आप हुमे
मरन कार उपाया। सारंग करी तुम मुझ साया। यह
साम ध्रम को सुनह वात। धनी पेलह पन रही अख्यात
धन कहव कुवर तुम साम ध्रम। बन काज हम कीनो
बीक्रम। आप सु दुज नह धर ह आज। पीछु लीयो समर
पन कुवर पाज। आपसु कहु जो जुध आरव। तीन से
तीन वेला तलाक। वहां हुत सूरज मल पास आय। वहीं
कुवर नृपन लीनो बचाय। प्रथी राज काज करि खान
पनि। वही राजी जे तुर कीनो बेखान। निज प्रथी राज
सरन किदगन। पंकि काज लेहु हम कुवर पान। वहे
धार कहे गजे सुवार। पडु फेर वडग रन जो उपार। देख
धार वड के अग दीन। नरमल सुवाल सुरज मल लीनो।
कुवर तुम चाल मत जीम काय। हुवो जीन पनमे नेहव
होय। देख चाल रवान हुवीयो उर। बट घर होय जेडक
पडके बार। हे नृप कुवर जब जीव होय। कर है न समर
नृप तुम कोय। तुम साम ध्रम नर मल सरीर। अध
पतीय सुरजमल तुम अमीर। आपनु करु नह जुध
आज। रखव दजो धरम तलीक राज॥ कहे सुरजमल
प्रथी राज कुआर। उन ठोर छोर हम जाय और। चलो-
पो धर मेवाड़ छाड़। अधपती न आवे जेण आड़। के
तान बीप्र घर दान कीन। जक भुप दुनो धरम लीनो॥
॥दुहा॥ सारंग सुत जो जो सुधर। गढ़ तोडण कहे जीत॥
कुल नायक चढती कला। जगो सूरज ज जीत॥ २॥ सोरठा
रावत जोग कर रार। बीर धायक लीनो वहर। भीषण
रखो मार। बीक रज जस रप वह॥ २॥ छंद जोरका॥ भेड
खाग रहे यह आप साड। अध वत सारंग नु आप अड़े।
लखव ब्रद लीयो बजाय कोड़। वह गगन फरव गमकार बढे
किय सुरज को क्रम जीत कढे। उलटे पुलटे उलटे जवहां

गट खाग पलटंत जावे जहां। गंगक ज्यु श्रोन को धा
भर। कुल नायक खाग सु जुड़ कर। वट खाग कितन
आप बटे। कुन भगन कि तरवांग होय कटे। नड़ जाम पे
सुभड़े जु तरवां। भरदा पत सीस जु बोल मुरवां। अड़ पा
अत जुटल उठ स्से व्रज राज न चार सो खाग बडी।
असमाल मसा रंग क्रीत उडी। गमेक जहे श्रोन खरख
भर। कुल नायक जुटत सार कर। केती पाल ध्रे बार सु
आप करी। धज बंध जोगे कर खाग धरी। बज राज सो
खाग बनी बजरी। अडपा अत सारंग री अजरी। कौ
मोण कपाड़ स जाति करी। पौहु खेव हेर खत देव जुरी
लाड भड़ सारंग सुजीत लीयौ। गोत लघु कौ सु
राज कीयौ। लख मुख सो साारंग लियो॥ दुहा॥ च्यार
वरस जोगे सुरद। मोण लीया मार। वांटो गले धर
लीये। सारंग झेले सार॥१॥ मोरे देवी मोण को।
नगर देवलीये नाम। थो नी खव रंग जाल कर। नव
खंड उपर नाम॥२॥ यह आयो मेवाड़ पत लो लसक
लेर। अदपत जोगो उठीयो। सारंग फोजा सेर॥३॥छंद
भुजंगी॥ उठे जोग राज जेहे खाग हुय। चलीयो जाम वाद
नहसी मच। कर खाग कटी बटे वीर। लेर सुप जोगो
कुल चांड नीर। लखा उपरे सुप जुटत लख। भेरु जाम
बतीस कुलन भरव। बजे सार सेल परे केक मीर। अडे
खंभ जुग राज जुटे अमीर। कटे केक हेतु सत सुंड
वारी। मगे मुरव चंडी दीपे पल कारी। वहे वीर
वेताल नचे वीरमाल अडे खाग आग मनो को मसा
कोटे बाल बाज चलतो कराग। दव मदंर कटे खवोल
डार। धरे सेल कुंभ सुलंबी र जंग। मनो टुक गोर
जात कर लाल रंग। खगाट बजे भाट होड खवके।
जोतो झालर मंद्र घंट झनके। भयो जुध तोडा पडे जुध
मारी। अथ मनो जोग सोग उमारी। हुवो हेकलु तो
संग हुवो। सेले साथ जीव गयो हुर संथ। भमाइ मेवा
... ... भय। सरे खात की कोन कुसन खप

कैरै जीत जोगण मर आय कांम। नर तीन लोक वचे
राख नांम॥१॥ दुहा॥ जोगी भड़ जय आयो जुडे। पांडेल
लोप जाय। जुटो भड़ रोंडे जदो। बीजा अदपत धरव्या
आन॥२॥ जोगी भड़ कीनी गजो बीला। अदपत ऊरा अभीर
पण धरल लोप छोडीयो। मरद खाग भड़ मीर॥२॥ दोहे
राम सोलेह जु। दीयो इण भड़ दोय॥ करी राव [struck out] जोगी
कहा। असो करे न दुजो कोय॥३॥ पतो गेमल राठोड़ पोह
साई कास नृप साथ। पुन भड़ पग चोपडे हद जुदे खाये
हाथ॥४॥ जुडे भीम भारथ ज्यु। रंग धाणा जोग राज।
अडे तुरक दल उपरा। बैठ चीतोड़ सुकाज॥५॥ छंद-
सावला॥ जोग राग जुटे मेरो सहुग ऊठे। खाग खग
भारे। पैरजु पाहारो सुर सीरत छुटे। मेको तर बुज तुटे
श्रोहे सीस हसे कुट डार बव। धर धर नीसवे। जोतहुर
सेवे। दैरै बेब खंड। तुटे हस्ती तुडंग करो जंग करूर।
जोगी राज सुर पैरे धरनी आन बवे हुर प्रान॥ दुहा॥ जेरे
सुजोग राज नृप। सारंग बीर सुजाण॥ सर लोक कैलास
मे। बर अपछर प्रान॥२३॥ जोगाहि सुत होय जवे।
पुज हुवा पर भाम॥ बडो राय सींग बीर बर। छत्रीधर
बद सुजाण॥२४॥ राय सींग कुल राण रे। भुप भयो
सज मांण॥ पाछे जोगी नृपत पड़ गयो। देव लोक दीवाण
चुगल खोर रखाई चुगल। राय सिंग कोप राय। वहां
पाट बैठे नबद। जुद करण वह आय॥३॥ छंद पधरी॥ तहां
कोप राव रायि सींग तब भारू जोंद अये सुभय।
इक तुरंगचांढ आके अडाय। पाट की नबद पर तेज
आय। आडे सुद सुदो नाराज आय। कर ऐहन
तेग केली सुजाय। बर होयके भोर धनी बंधाय।
आडो तह भारथ बीच आय। कहे नबद भूप तुम कहां
कीन। रायि सींग कहे कुल सुनो नवीन। पुनी जाय्यो
नबद बहु वेत पाट। धर बैठ राज सब करहु थाट। यह
भाम खाग जो की अजाण। बन धाली कोय कोनी [struck out]
बखाण। यह जात सांत मे चल्यो आय। कीन काज तुम

सीर खाग वजाय। तुमे साम धम मुज सरम सुर। वजा
तुज मुख नरबद सुनूर। तुम करतु राज आवाद तुम्को
मेरी असम ज्यो राज मुज। यु कहै सुर नीकस्यो बार।
तोले मुज राउ सीर नवार। घर आन पणी पीको
न धम। तप चलत लोक चले सुजन। कीयग करन
थाट नीकस्ये नहोर। अल मालम सारंग गड अमीर।
वरु देव नाम चहुवान धम्म। मण घर तप कीनो तह
मकान। नामरव जहां केतेक सेर मबा। यह ठोर केतेक
दन कर उजार। पुनी कुक करत परजा अपार। लारक
कुण जावे सेर कार। सारंग सुनी यह कुक सुध कुत
नाग साग लीनी सु-दच। वह ठोर रोस चढे अपार।
पर वत मनु हनुमत लोपार। कुदो सारंग मुज ठौर
सार। हुलकार होय ललकार बाग। मनु बोल गद्द गद्द
सीह कोग। हुहकार जहां ललकार होय। कलकार
करंत चडीप कोय। यह बाग गरज गरजत अकास।
रमीयो जहां सुरंग खगं रास। कटक तहुर लीयो
पछाड। कुल भान नृप सारंग कोय। हरक कीयो रानी
कवन होय। कुलगुर लिपे रानी दरबार। नीज कचन पुछी
हरखी सुनार। नृप कहां रेतक नंद भतेज। मो कहै
दुसरव केतन तेज। मेर हत भेद पारन सुभाय। कुल
वंस भुज सारंग कहाय। चहुवान तेणा भणोज होय
कुल कीयो रानी मुमन मी होय। तुक राज पाट सुपुत
रवत। मम पुत नहीं देरव य वखत। पुजीयो वहां सारंग
जाय। नर पती केक औ मो नमाय। प साह पास
लीयग आय पुर। करवाय वेरा नव मोर कर। भनीज
राज दीनो भुवार। काम कतो मर दीनो नीकार। पर
देस राइज नृप कते पाय। सारंग केरक लीआ भयो
साय। लरव ग्यार पर धरा परो लीन। कुल भान च्यार
जागन कोन॥२॥ दुहा॥ परदेस रारंग पाट। नृप हुके
कुलमांय। देव नाम जीणो पुरस। राज लियो नृप रांणी

॥खुरसाण जुद्ध॥

॥दुहा॥ खुरसाण मिलाय परवेरी नरबद खान। प्रबल जन
प्रहार पर। उठी पासन आन॥१॥ छंद मोती दाम॥ उठीजु
पासन आग अरौने। छुटे रन पार तोप मनु द्रोन। उडे रवा
न्मार सुमेघ अखंड। परे मनछार पत सेमरोय पडलहै
मनु भव गाज को लार। परे मन श्रंग उपल प्रहार। करे
खुर सान मंगा तुरकान। हठी कल मुख रखे होदवान। होये
मनु अच्छर राजीप डुर॥ दुहा॥ खुरा सान करे सुरवंग
तो तुरक पुकार। नर बदहु की कीत नव। आखे जगत
उधार॥२॥ अड़ पाये तने तो अडे। अकबर हुत अभंग। पग
ता लगे पंग पर। आब लगा उत बंग॥३॥ छंद भुजंगी॥ जुटे
सामके काम नेत सधीर। मनो राम के काम हनुमंत बीर। उडे
मनो वार तेरवग ~~[illegible]~~ (उठ) मनो राम रावन पे जाम कंठ।
प्रहंरे दल मे होय रवग पान जने हुडे नानाथ की फुरजना।
करे तीर मोरे कबान कदुर। परे प्रान पार मंचे कोच पुर।
नचे जोग मायर बजे बीर हडु। द्वे खेत्र पाल वगमवत
डेक। जने खेत सौमे चंपे रवग मारी। मनो फूल हेत उतारत
मारी। गहि सेल हतं उचारत मेच्छ। मनो नट पलट करे
खेल पेच। किधे गहे कटार अर उर चंपे। जनो नागनी
खुली बारी न कंपे। हकारे दल पात सा अरव हैके। महे मद
अलो उचारत मंक। जुरे नेत सौमे चलो धारे जुध करे
जाग कोठो नेचे भीम क्रोध। तुरे कंड मुंड परे तेग अंग।
जुगा जानन मे जके होम अंग। करे सुंड हस्ती नेक कीच
कारी। मनो जन मारूत उड चारी। मुगल पठान परभीम
मान। जने गरड़ होमे जुग नाग जान। जुरे खेत असुरान
के वार जंत्र। मनो जान जाल होन मुच्छी तरछे। परे खेत
फतं बरे हुर पुरं। सर गंग रवि उवे वर उठ सुर॥ कवित्त
परे तुरी सत च्यार। परे मद भर प्रेती पर। परे मुगल पठाण
सेक सेद हुरे धर। परे कते भड़ खेत। करे चहुके जफरा
रं। चाकर पड़ चालीस च्यार उमराव सरावरा। पतसाह
खीसाणो आप पड़ मन धारी नाकी मलो। नेत खेत अडता

नृपत। दुग्गम उसर भोम हतो॥ दूहा॥ नेत रैवत जीतो नृपत।
पाड़ असुर दल पुर। फम रांग लागा प्रगट। नज बंस चाढे
नूर॥२॥ सोग सलुवर को॥ दुहा॥ नरबंद नृप के नेत नृप। मड
पाट कुल भूप। अक वरस जुटो अभंग। राजधरा चौरूप॥२॥
॥छप्पय॥ कहत नेप सुन राम। पावल बैर पसार हु। राज
कहत सुन राव। सिंग धर लीनो सार हु। दीपो हुकम दीवान
नेत रैवत हु चढन उर। भर भो होत हो भूप। आपजे सोनहु
अडर। सारंग सेन उबर सजहु। अत पर कीत उबारीयो। करे
रीस सारंग फेर ने तह नृप बोलाय सागपण भो सन बंध।
जे नरव गके सैमे लीये। राम कहे सुन राव। लव नतारसोर
नमानो। जैसे क्रन अरजुन। के भैरे भारत तुम जाणो। रवग
तोल बोल जुटो रवगो। सर बरा न सेना सैज। सल बर सोंग
करवा समर। भुज नेत रवाग वजे॥२॥ छंद मुजंगी॥ जोडे
कज उठीयो नेत जुध। करे जान देतो नेप भीम क्रोध। अबे
आप कस धाम जोडे आप अंग। व साल भुजा नत असमर्थ
बंग। नृप केवरा दो भजा पान नेत। रखा छोड़ सेन कियो
लड़े रवाग रैवत। सुने वचन बोल्यो सलुबरं सोग। धरा
काज जुटे तेग धीग। अह बोल कमंधज तेग उठाई। चरव
यंद मेह उरे आग छाई। कमध चढे रैवत आयो करव।
जुटे सेन नेत सु बाजे भरक। धराकाज सरा भडे फुल धारी
करे देत देतो पैरे के पहार। दुलै के मलै के रखुले बार
रंवग। झले के बुले के दीये पाव अंग। हले के मले के
पेर सोग कमधान जोरा परसो तुटे सीस मछो गुरजां बेत
राष्ठे। सलुबर नाथ पेर त्याग रैवत। नृप सुर सारंग
कर जीत नेत। जीने जीत लो मेवल खाग जोर। अछ्यतो
जने चपन लीम ओर। सलुबर लीनो जिने जीव सुरारकी
रान रे नर पावे वृद पुरे॥१॥ छप्पय॥ कार सलुवर कमंधो
सीच पीड रवग भार। चप नली इधर सरव। मरद
मेवल नम मार। जीत सलुबर जेबर आप श्रव से अपनाई।
जीत रवकार न जंग। सारंग जस रान सुनाइ। नेर रैवते
समर जोट्यो नृपत बहु वहर जग बजायो सेवर सारंग रामो

धन जोम सारंग राजी को ||३|| दुहा || भानु सतु जनेंके भयो
ओपो रतो अंटल | कुवर सारग न सहे सको | जोध बलु
खग झेल ||१|| राव कुवर पतसाह रे | पोह नृप होयगज्जाय
अब खास दुआ अदल | अद पत होय अजाय ||२|| कहे
लोह राकार कित | जासु बैठ नरा कोपार | कुवर अरज
नृप साह कर | तोली मुज तरवार ||३|| कियो अरज नृप साह
कर | कातु मे हुक कसूर | फेर सीस जोधरन पे | तो
निज कुल चाढु नूर ||४|| विकल नृप उठो बलु | तद कर
गहे तरवार | आवे मेहु कर उपरे जाद कर खग
झाल ||५|| करयो भस हेका सीस कर | रहो न बारी रस |
तब वेरीयां बलुतणो | झरद साहरा के है फस ||६|| कहे
भानु पत साह कु | हुव हुकम पज हल्ला | दीनो बीडो
साह तद | जुरे कर खग झल ||७|| कियो हुकम पत
साह कर | भेसा सम्मुख भार || सारंग जुद्ध भाणो चल्यो |
छत्री पकडे सार ||८|| छंद भुजंगी || करि फर भांणो चल्यो
बढ़ी सु भानु कोधार | जुरे भरत भीम कोपे सु जोधार
पुन परख रूप फौज पहार | बले सात सौगा सो आटा बीहार
खत्री कुण दुजो सजे तण साह | दुजले भेसो उलयो जाय
होरद | रुके भाण खाग झेल चाल राव | तनके तुरख
भगा खाय ताव | छुरी तेग भेसा तणे सीस सार | परे टुट
जोर भेर टुक पहार | खरी सीस सोंग सो धरनी खगनी
के | जंना कातर जोम खाग झनके | प्रवी उपरे नृप सेवा
सपायो | तरवे पत साह झार फोते तरफाई | कोयो मान
आरको | असयो करो नृप काइ | हुतो खाव बलु तणो पस
होइ | कियो पत सा मान सारंग सुर | हुने झल बुंद
भुज लाज नुर ||१|| दुहा || उठे हत रावत अभंग | कटे सीस
नहे काम || तुरछ खोये पडीयो तुरत | फाट रुद चल पाम |
||१|| किनो झट को मान कर | असयो दुजो केर न कोय |
पाडा खरना अपो परक | जाम टुक गिर जोय ||२|| करि
फते हुद राखव कर | पाई फते मयार | लख पेरा दीनो लहर
[illegible]

अनुज कर भीर॥ फिर दायक खाग्ग बखाण। धज राघव
कुल धीर॥२॥ छप्पय॥ भाण राघव लघु भ्रात। यह
सु खग्गं भुज अंबर। कोर खेंडे रठोर। सुर आमेगर
समर। परत केक भड़ पुर। परत केहर बोभाय। कट केक
रठोर। पैरे रन केक प्रमग्ग। अध पत खाग जीत्यो सुरग।
भुप सुमर हुटी भार॥२॥ दुहा॥ जहे रठोड़ पड़ खाग
भड़। भड़ जुटे अण भंग॥ राघव काम अयो सुरग। खत्री
वरण रंभ खाव॥१॥ भाण सुत जगनाथ भड़। पण नृपत
कुल धुर। पाट विराज विरद पत। हुये अद्भ रंग शिवपुर।
भाण सुत जगनाथ भय। भड़ सारंग अण भंग। आयो
दलि दल उपरं जीत खग्ग रण जंग॥३॥ छंद पध्धरी॥
राजान राण जगनाथ राय। सारंग भुजा चंडी सहाय। करत
बदत विक्रम नाम कुन। बारवान कर चहु दसा भ्रम। खसण
गजा तुरंग समप। अदपत सुजस नृप लीयो आप। किते
सु विप्र धर्मे नेम छिन। दुतीया पितर ~~मम~~ गज गाम दिन।
जहां जोर फोजा मेवाड़ आय। पत भुप सेवे पायत लगाय।
ते हुकम राण जगनाथ उठ। रावन पर मनु हनुमान
रुठ। भीकम पराध मनु हुर ~~ह~~ भूप। रायर नराय जगनाथ
रूप। उड़ खग्ग गहि कै पड़ अनेक। कै कटत सीस
पलटंत केक। धसत भरखल कुमट रजइ ~~कु~~धार। सारंग
जगनाथ जुटंत सार। भड़ लडत पडत के फडत जोध।
हड़ वडत हुसती के करत होद। वड वाग्गत गज जिम
मदन बीर। छुटत श्रोण रंगे सरीर। कर पडत कमल
के कलम रोप। अंद सोहड़ जगनाथ ओप। कर मरट
भारट संकत केक। तुरत सीस वायंत तेक। जुधमीय
गीध होत रहकं। दोय मेरद उत बाजत डंक। पहुपाल
पोरसरो कर अरवार। दिरव जंग रुद्र जोरवाड़ कार।
जफरा कर जंबुकर सु जुट। उहे तुरंग डुट खायो
उतुट। फेरंड माल शिव रुद्र पर। हस नृपत केक
चवर जायो हुर। कुल भाण पुध जगनाथ करे घर
परे जंग राजा धराज सबदे रंग। पेतिस पडे रंज

पत पास। हुय स्याम लोग रैम सुख हुलास। वहै फेरो
पतीय सुन सतीय बात। कांनोड़ ते मिकसी जतन सात
सात हु सती पड़ अरव सुर। पड़ कैर राम पदवी
सपुर। गगन नाथ पत संग बलन गाय। धन शाम
रंग रिम्झन सुगाथ। पड़ तुरंग सती चली सुसाथ। हवे
शाह पति जगनाथ हाथ। किते कैने दूब दाम किने।
लच पति य पाग सती जोध लीन। हर उर कर ज्वाला
उठीय होम। धर धरक धरक अंग उठीय धोम। ज्वाला
पर ज्वाला बढीय जोम। ~~अंग उठीय~~ हु अजान बढीय
साग तीन होम। जयकुंड जये जगनाथ बीर। नरींद
कांनोड़ नृप पाड़ नीर॥ दुहा॥ जरिये नृप जगनाथ
सती जावली के साथ। कुल नायक कांनोड़ रो। नर दायक
रही बात॥१॥ जाकर के जीव राज नैवदक कीयो बरकाज।
साहै करो सौला सती। जे चंडी गन गाज॥२॥ कीनो
प्रगट मोर स्वग खल मुंड। चाचो चांमो जोग सुब। रुका
रुड़ बड़ रुंड॥३॥ छंद रसावला॥ जगनाथ तुटे। प्रभो
साह उठे। रवाग खेग मोरे पेरे जो पहोरे। सुर सीस
छुटे। मनो तरबुज तुटे। गुरे से सहत कंठ डार चख।
धर धार निसेवे। जिते हुरलेवे। परे बे विखंड तुटे हुस्ती
तुंड। करी ज कड्ड्र। जगनाथ सूर फिरे धरनि आन। बरे
हुर प्रान॥ दुहा॥ परे सुर जगनाथ नृप। सारंग बीर
सुजान। सरै जैसे केलास मै। बरे अपछर प्रान॥१॥
अजुडे भीम राथ ज्युं। जस खाटण जगनाथ॥ अडे कर
साह अडर। हद सुदे रखया प्या हाथ॥२॥ पतो जेमल
राठोड़ पोडु। सुरचंद कामल साथ। पुनी मड़ खग
चौराड़ये। हद जुनु गया हाथ॥३॥

॥ रावत मान सींग जी॥

॥दुहा॥ एक दिवस सोबे अयो। तुच्छ खमा बल जोर॥
मुमंडल सब मांगवा। अद पत होंदु जोर॥१॥ दली हुत
आयो . दरस। जद खाग कर काल॥ हुकम दीयो पत साह

हेत। चरहत तो गज दाल ॥३॥ छंद पध्धरी। इतो हुतअसुर
ओधो दुगम। येहे माल कोदेस करे अंगम। लोगन के
दुड्ढा असुर लोक। मेरवर पग ये तनु भूलोक। असुरान
पवत्त इल पेंठे उथाय। पग घर केतन गोयत नुपत पाय।
देव लुट धुर के लोथ ढुंड। अधपती प केक कोन उखंड।
कोटत पर दुग कलम काय। बाहूत देवल्ये न आय। ~~सरा~~
खरणो कज दुकीपत बार रवाण। अध पत्थर तोर मरव मडे
आग। यीनो मह खंरणो नृपत दुहलि गये धामो तर आयन
पग लख के पठाय। आपवन मान ग्राप कुंन आज। लख
मुख सुजस भज तुज लाज। अहे सुनत मान चढीयो
अमंग। जावद घर दुग करन जंग। आहुडे असुर केमड
अबार। लश्कर सारंग के बहोत तार। मड़ कड़ यम चक
सारंग भूप। वह फेक चकत रहे माधू रूप। केते क असुर
लड़ जोधे न काज। लख अद सारंग भूज धरी यलाज।
कुसान जु बाहर गज राज कीन। अन बहद जोदउ
बाहर लीन। दुहा॥ करी कुसान गज राज को। तत मर
सुन के तेर। वह पग सारंग बचे। बडहत करीन बेरी॥
जागरे जोधो लयो। मडीये अंग जरद। मर घर राखव
मान रै। बदी धोड़ बरद ॥२॥ इणी पर मड़ खायो बरद
खग झाटा बज खेत॥ करो साय जोधन की। हे कद्ध
मोत र हेत ॥३॥ खल पकडे लेगा खलम। नोरंद धामो
तर नाय। मान छोडाय लीनो मरद। मड मार कीन
मारब ॥४॥ मेवत मे रक मोण को। सब मोता सर
दार॥ जोट्यो खाग केक जग। मडके खाग मार ॥५॥
॥सोरठा॥ अेक चक दो कोनर रामोणे कोयो परणाव मे। दुजी
~~दुजी~~ तुक प्रमाण॥ अरज मान सिहुकु। होत जोर टाह
साह। दुजी मोणे परणले। भुप होत सारंग आह ॥३॥ स्व
साह के दुजी पहर। पग वोदह देरन सरूप। मोणे कोयो
परिणायपो। आ कन्या सो अनूप ॥४॥ कोयो जोम ग्राप
साह को। ऐसो करहु उपाय। मांडो रचे बुलाय मन। वहां
मोणा सब आय ॥५॥ बुलाय मोणा बहुत। मांडो रच्यो

सुमन। जोमण वार कौ कीन जहां। औय सावण अन्न॥६॥
दीनी खबर सारंग कुं। साह जु दीउ सुताब॥ आया मोमण
सरब यहां। उग्गहु नृपत उताव॥७॥ यह नृपत चढियौ
अबै। लै दल भारी लार। पुगा पर सारंग समर पै। बउहत
खागां वार॥८॥ छंद पधरी॥ बैठो उमार बनाय। जगत
मान जगनाय। मतवाल मान मानय। कर गही केवीनय।
अरे सुमीत उपर। चगार वाज घुघर। खग केक खपर।
तुरंत केते पर। नचत जोग मायन। खवी सुमीत खायन
जहां बजत जमर। रैम सुर भर जरं। बजार खाग बजरी।
मृदुर केक भाजरी। मीनी केतान मारैल। दीयै हजार उर
पे। खगार मुज रैवतय। गुच सारंग मलय। वहां सु
सत्री बलय। चमके सुर सेलय। हरंत कहू वेलय।
कटे सु सीस कतय। खगार जीते रैवतय। तर फरंत तुंड
ये। रर वरत हुंड य। भरे के सीस टोपत्व। नही सुनार
उपल कटे न सीस ह् हंच य। मीनार कौनार खमयप।
चलंत ले रसगय। अधक गीस अंगव। बचाव केक
जावय। नृपत चाव आवधय॥९॥ दुहा॥ मार केक हजार
सुमीर कुं। जीतौ मड रण जंग। सीरे रो पाय चौवे
खवत पाधा रंग॥१॥ दुहा॥ काम सीरी पाल माजी। सता
सै सै कात। काछू मेली राण कनै। वह मियजी उत पात।
॥५॥ मोमी छुटी लीनी मरद। पडी हाक पुकार। श्रवण
जु रायं सुणी। बोडी फर उण वार॥२॥ मान मारन लीनी
मरद॥ छंद भुजंगी॥ यहां मान बोडी जु लीनी उठायै।
छत्री भूप सारंग खाग सु सांयै। किछू कुगसो पाल
तूटे कराए। सरंग नृप खाग झाले सरार। चडे जे
तुरंग भर भूप साजै। बजे धूर बाजा निसाण सु बाजै।
गान जेम वीर-नाम लडे रव गाजै। उपारे मनो बाग सांरग
आज। बजे खाग झार खगार सुबीर। भर भूरव
सारंग चढे सुनीर। उठाये तुरंग मनो सेल आग। बल
भडे खग्गो तुं सारंग बाज। अलेरे पलेरे कुलेरे अनेक।
कटेरे मेनो सूर खवंत केक। झरे सूर सूर खंगार

सुजेतं | कल्लार पल्लार मर स्राय केत | मैरे सूर खग्गार
सुभाज | बोरार मैनो रूप खग्गार वाज | किधू कुम्मकी
भारलीमी कसर | सरंग मैनो भान कौतो सरार | ध्रव
लूर सौ कातू लीमी सुसाथ | हेरे आवध लीन भान
सुहाय | लुरै कुग स्रो पाल छोल सुलीन | कलू-बीच
आरव्यात सारंग बीन | परै भीव काचौ क तुरै अपार | सुरं
मनौ भीम भाकाल सार | पहै जीत भान लहै पूर आयो
सुनै वार माम सु फीनै सधायो | ॥दुहा॥ भान नृपत
जो थो मरद | भड़ सारंग कुल रूप॥ कुरै कीनो कुग
रावत छत्री न रूप॥१॥
सो | [illegible] कुरी पाल जु कुमकी |
मरद सारंग जु भान | सै वारसो दीनो अब | राजो जु
हायमी राम ॥२॥ छत्री भीण करवा सरद | मन चौरे
भान सीगर | सारंग दे पठोयो समउ | रज वट राखणा रेस॥
॥छंद उधोन राज॥ चरै समान संगय | जडै सोमील
जंगय | छुटै हजार तीरय | मनो अघन वीरय | फुटै सु
अरव अंगक | मजीह चार मंगक | हुके र वग वाजय | पहार
परव गाज से | उड़त रंग सौरस पै | देडी उडत दीसपै |
फर अंग फारके | छुटंत हुव सारके | करै सेमोर मैनको |
छत्री हकार सेन कं | जुद समान खेलय | सुरक लोजवे
लोय | परै सुपाय भीत रे | जुदाम ले चला तुरे | रवै
सो सेल भानय | परक पाल धामय ॥२॥ दुहा॥ बरछत्री
रोपो भान बहु | परक रहे मिल धाम | पाल मोह गवै
पन हु | अरे न बालक आन ॥१॥ करै वरस रोपी वरस |
हुवत न छोपो हे बान | सो ध्रन ले कांधो सुपै महा तेज
तप भान ॥१॥ पाल सरद कीनो प्रगर | भार खाग खल
मुंड | पायो कीनो भीज ध्रब | जी री रखा रड़ वड कंड॥२॥
॥कवित्त॥ प्रगट रैनट भाल पूर | धजर रहे तो क्रोडो घ |
विन पीसै हेक वीप्र | काम करतो सु सरब कज | उन के लडको
रावक | तनहु ब्यावन कर त्यारो | तब यो विप्रलिवन तुर |
वहु माया धन वीरजीयो | भान सीघ करम लखीयो
[illegible]

PILANI 19780

चालो। यह सारंग पह आयो। आयक राय अरज। नृपत पह सीस नमायो। चीठी कर सारंग। आप विप्र नकु अयो। थारो धन कुल धोम। धरू पढीयो नह थायो। देवगन देख सारंग हरख्यो। देय रहेस रोक वीप्र न दीयो। वर जोर वीप्र अरजो करे। दुम चीठी लख के दीयो॥ दुहा॥ कर सारंग चीठी करी। पांच हजार रूपुर॥ वीप्र जाय लीजे वरा जोधन नाय जरूर॥१॥ पुगो वीप्र सुमाल पुर। जे धन लीधो जाय। पांच हजार सुलीग पुन। चीठी डारी साय॥२॥ मेली चीठी देव मह। थेली बांध सुठार। सारंग नृप माम सोमरी। जेपो मुरब जे वार॥३॥ कवित्त॥ कसन गढ दीय कुंवरी। वडी पात साहन व्याही। मात वेन अव भ्रात। कहा मिलणे कु आई। काई कहे सुन वेन वेई जोमण कु वेठा। हम हिन्दु तुम तुरक आप अट कु नहो रेठा। ~~[illegible]~~ कर करोसचली दली कुवरी। पात साह न परणाय हु। उपाव करे काई अवर। जोध दालिद सजाव हुं॥ दूहा॥ जई वाई दलीस धर। पात साह सुमाल पुर॥ करी अरज पत साह सु। हेवे बन मुझ हुर॥१॥ साहा कागद लख कसन गढ। पुगीनो पर~~[illegible]~~णाव न। सारी ~~[illegible]~~ काज सामान सब। वह नहरेवे उपाव॥२॥ छंद पधरी॥ यह वाई वहीयो करद को उपाय। दुजी कोय करे मोइ सहाय। कर पग लारव कारोद कोन। दुलहो लरव राज काज दीन। राजा धीराज तुम छंजो राज। म्हा धरम भाज हींदु वाम मांझ। रघुवंस तिलक के कुल बंस रूप। भुपाल आप करपाल भुप। गउ वीप्र पाल गुन के गमीर। अध पतीय राम भुज लाज अमीर। परणवा काज वगा पचीर। आप वीन मुझ कुण करे उधार। आवे नह राज परण अजा। यह देह भांग करहु अकाज। नृप हींदु रचपाल मुझ तुझ लाज। श्री राज राजड भागवत समाज। राज सुणे पग आवे न राण। भलके सु नृपत रवछ माण भांग सुण कागद राणा चढ रंजेस। दस दसन धरक धरक वज पेस। सोले बतीस नृप चढीय साथ। हय चौ माम ग्रह सेल हाथ। लरव कोनोड नृप लीय लार।

भुज डंड डंड खत्र वार भार। हरवल्ल रख नृप भान होय।
जिन भान देख रह्यो चकत जोय। काहाँ तो रान सब
नृप कहाय। लखा सुकाज सामात जाय। जद कह्यो रान
मैं पर न जाऊं। वह सरन काज मोह साथ आऊं। साम्ह
राव लीनो संभाय। वाग रैरा पढ़ खतान काय। कसम
गढ़ गयो रहतो करूर। नज छुलह न पर चढ़ियो नुर। केव
राव रान कमधान काज। यह तुक पुगो परणाय आज।
परणाइ पुगी कुल सपुर। हरखे जद नारद बीर हुर। दूब
लखन भर ७ चारनहि सुदीन। लख मुख सुजस सोभाग
लीन। भयो गेर मल रंगो उमंग। रस भय-शृंगार बने
सुरंग। चामनी पर बेठो नृप सुरंद। करे रीझ छोल कोर
कुरंद। यह माल पुरो नृप नजर आय। श्री रान गोप न
पुछो सवाय। राठोर अरज कोनी सुराव। जह पत साखले
कम जान। देख सुन ग्रहय मुछ डार। बणो पाछो देखे
कीयो बीचार। भर हात मुछ देखे सुभार। यह वार माल
पुर करहो चार। अचपतो रासे देखे अपार। करकाज
लखीयो आप काज। मुछ माल परो जाय फजर भाज।
दूब माल सख देहु कोरं डार। सब रान गाम लेही
सभार। पग बंध साहु पुगी प्रमान। जद कीया टीकाने
माल जान। अब चढ़ियो रान बडि फजर आय। घेसा हर
मंगा बकचो राय। अच पतो माल पुर हुट आय। सारंग
रो बचोयो बल सवाय। वह तुरक कमर बंधे सु आय। पठ
पीर नाम कोनो सलाम। कतमर पठ आया सज कलाम।
अला अलाह कत मुख उचार। अठार रची गृह चढ़े आय।
छुटंत तीर ऊड़ी समान। उर फिट लगे असमान आन। जा-
गुलीय भान मुगल सुजान। खाग बल चुट बीर खान।
वहैं नृपत तुरंग दौन उठाय। अगवान राव मानेस आय।
बज तोप गजर घन घोर बीर। छुटंत-धम तुट सरीर।
बज हाक बीर- रण तल काग। यहु मचक उडे पागडे
आग। भान रा हात छुटे मरद। जह टोप बगतर कट
गरद। तुरगान केक तुटेत तुंड। मनु गाम मतीरा खरे मुंड

जोगी प्रजान जुरे जमाव। हद देरव नाम सारंग हाव।
मर जाना पाय जुरे मराय। हल कार बोर ललकार होय।
कीनो सारंग जेम कर न कोय। माल पुर नग्र मोरे
सुमाय। हद देरवे रान मानव सुरूप। मड़ जुर लुर लीने
मराय। यह दीन उनु लीनो उराय। माल पुर नग्र सारंग
भाय। भुज बल जय कीनो अभुत। रन जीत समर पारथ पुत।
मनु लंक राम लीनी सु लुर। कीनो असो सारंग असुर
कुर कर फते मान उमो कुचार। जानकि नीम मराय जुध
र। कर लुर कुरम कान कीन। दरबार हवेली वार दीन।
जहां मान हवेली उतर जाय। संभार दरसलीन सवाय।
यह चिठी नृपत के हाथ आय। बहु कामदार परिबचाय
रक बांच अरज कीनो सुरवंध। पुनी दीये बीप हजार
पंच। वह चीठी आपने हाथ आय। पोहपरे नृपतीकेस
बधाय। सुन रांण बात अच रज सु आय। रवंत सभान
लीने बुलाय। पुछी सुरान अब बात पुर। नृप मान कही
सुनि राम सुर। राजड़ सु कह्यो धान माग राज। अबर
कुण मोके सुधन आज। माल पुर मार अब लरे मान।
सम सेर झाड़ पत साहा साल। यह कुक सुणी पत साह
आग। जुद जुदे समर बांधीस जंग। अचेतन देड़ मेवाड़
आन। राजा धराज सिसोद आन॥ राज धरक सीसोद
आन। यह रानी परम उदो भान आय। परजा सब रान के
लागे पाय॥ पत साह प्रबल दल चेड़ पर। हासंत नारद हरकंत
हुर। औरंग साह चडीयो अरूर धरस मसक कमठ फन
उठीअ धीम हद जान करन जमे जु हीम। उदीयान नग्र
पर फोज आय बीराद बीर रवाग वजाय। बलु मड जुटे
महा वीर। चट परोय लरे मड़ कर सरीर। औरंक साह
मन झंक आन। झड़ पड़त लड़त मेगल सुजान। छुटत
स्रोन झरहु सरीर। धापवत जुरा गढ़ु सार॥ भुज
भार सारखाग उधार। बड़ बड़क खड़ग झुंड केकबाग
हुम पार तीब छुटे अवाज। डेबर रीठ कोजड़ े स्रोक।

नज श्रीत चेत सरस्वती नीर। सारंग उठे भड़ गहो सार।
टर जाय केक कायर सुटार। बीराद वीर खागा वजाय
पह सीस तुट धर पस्त आय। लड़ पडत केक भड़ पडत
लाख। सारंग गेलोत उजवाल साख। पड़ आय खेत
केही पसल पाड़। रण जीत सुभट सारंग राड़॥ कवित्त॥
प्रगट करत जेर। खगांडे कारी रूपत खर। पेर मुगल पठाण
सीस सीव कंपे ले सुर। बज गैंजद्र के बेड। पनह लोरत
धरती पर। कीयो सारंग जध करेा। नाम राख्यो सरणा
नार। हेक पहुंचो औरंग हुब। पाछो दली पधारीये ~~सारंग~~।
सारंग करे कगाड़े सरेद। छगो मरन सधारीये॥

॥ माहप सीगाजी ॥

॥दुहा॥ भग पाट महप सींग। कुल नायक वेरी कहुण॥
धर खागा बल धीग। राण तेण धर राख ही॥१॥ कवित्त॥
जे सारगर जे सीग। भूप वडे कुल भाग है। धुगल खेर
कर धुगाल। राज अग मार सुराण है। सुत सुनत जे
सींग। प्रगट तन रोस अप्रबल। अबो मारो अमेरस। कुवर
नरख याहप कुल सुण वचन अमर मगे सुपह। कुवर
गयो नक नेह। बाट रेड सरणे आय बेद। माहपरख
राखीया मने॥ कवित्त॥ ले माहव नृप लार कुंवर अमेरस
करगेा। चढीयो गढ चीतोड़ धजा बंद रूप धरगेा।
सुनी बात जे सींग जोर फोजा ले टुरो। कुवर माहवत
पकडत छन चीतोड़ न टुरो। गर कीये राम उदीयाण
गर। अमर आग मातर लगाय। महप सीघ उठ नाके
आमर बढे रोस अमरा बधीय॥ छंद पधरी। चढ
चले कुंवर निकसो अमेरस। सींघ नृप माहव चढे देनेस
सुदी नृप पुगे जोण वार। बाहर लीये असर भन मेच
धार। भणीज गंगा किनिस मीर। वर दायक हत जे महा
वीर। आज पर भाड़ लगाड़ सुजाय। बाहर सीघ फोज
लीनी मजाय। कर फोज उबर उदीयाण काज। उदीयाण
नग दस पलेऊं आज। चले धर हुडे अर सुर नज

माहव चाड्को कुवर नुर। सुन राम फोज माके सतब।
अद पतिय जाण्यो रार पडहे आवि। मागेगा येजे सौंग
चाचोर भूप। उदोभाण अमर आयो अनूप॥ दुहा॥ मोटी
मूछा माहुवा। मोरम चढे प्रमाण। आपा करे अमरेस
री राखत किदो राण॥१॥ दुजा दोवा यणी सोहु भेवाडे
साथ। राण जतन कर राखयो। जोडे ओपी नाथ॥२॥
॥चोपई॥ महुवव राण बुलाय माहुव। जे सौंग राम काहर तुम
जाहुव। आप पाट बेरहु तुम आवहु। पुत्र अमर हु लागेहु तोपा
वहु। पहु बंच पणो का राम उचोर, छत्री वचन दो दे सरदार।
केसरी सोज माहा सौंग कहावे। तो उदोयान नग हुम आवे।
राण वचन दीनो देहो राव। एक लोग थान नृप आव। लायक
राण छोड नृप लाये। पहु अमर कुवर पर आये। माहुव
पुंडे मेल कराया। पांव रंवाल चरण मृत पायो। कुव पीता
होहु रक्षा कीना। लायक साम ध्यम मुज लीना। ते उदेयान

जा सांग नृप लाय। पाठ बनाय लगा श्रब पाय। असडो साहब
मुंडे मेल करायो। असडी साहब करो अरवो यात। जायब वाव
च्यार नग जात॥ दुहा॥ कुल नायक साहब करो। करे न
असडी कोय॥ कुवर पात एकट कोया। अमर बंचायो सोय
॥छंद पधरी॥ एक समे बीच नृप उठ अरवर। गाम चगावट विचह
गरवर। जोन फित कड़ बलुटे सुजाय। एक दिवस नग उठो
यान आय। लघु त्रोपा अरव लीनी लगाय। जब दहू घर से
सुजाय। आगल किनो कोन कुना के आय। चठ गयो रान
एक दोन सकार। ला गया मोमी यो राग लार। तब
फार चोरी कीनी सुतान। रंग पलंग बिच जागे सुरान
सेरे सोब कड़ लेगो सरब। वह काढ़ लीया मोती
सुअंब। सर फब दब लेगो सरब। दूह रान जागे बोले
सु आन। पत्र रान कहेत छत्रि सु पुर। सोले बतीरस
सब सुनह सुर। पचगाढ मारो सदुण बंदुस मर केब
वनि उपाय। उम किनहु कौन कहेत आय। यह अमर
हुकम दीनो सुअंग। दोषी परजाह माहू सोग दुर। वह
सारंग बीरो उठाय पण धार रान के लग पाय। उपाय

करे सारंग अनेक। वह मांड नृपत किन विमेक। एक
दीवस मुमीयो मङ आय। जहे लखो आरव धर जीमाञाय।
सर पाव कडा पेपासरब। नर मोती माल पेरे सुजब। फोह
चीरो यो रण रो वह श्रपाव। वह पेर लखु कर श्रबउछाव
दुजी यण नृप माहेव फेर देल। रुका खाग भार बजे
रोल। जीये आज प्रसण सुजोर। अदपतो मलयो सारंग
ओर। खाग बल कोट बीर रेवत। सर पाव सीस लीनो
समेत। कुल भाण राण के नजर कीन। देह कोह श्रब
पाव पुरो सुदीन। गुडली कुरा बड अवर गाम। दीये
रान महर कर अतई नाम। नर इंद्र सारंग नृप श्ररवनाम।
किने अनेक भुज प्रबल काम। पण धर सारंग नृप फते
पाव। अड पायत जीते समर आय॥१॥ कवित॥ लखु
चणाद कर लेर। उरड खाग रह उठे। उदीया पुर
नृप आय लारव दव सहर लुटे। दीयो हुकम दीवाण
फार मीमीयो पछाड़। सोले अवर बतीस भार खाग
कोई झाडे। माहर सीग सनाम कीदी मरद। अद पत
बीड़ो उठवीयो। कर इहे कीयो मरद खाग माहव
कीधु। पण मीमी पछाडि यो॥ दुहा॥ माहव मोमीयो
मारीयो। कर खाग रण भाड। सर लीनो मेवा सहेत।
पण धर सुमर पछाड़॥१॥ कवित॥ एक दिवस अबदुल
बेग। तही सेना सज आये। माहव कु अमरेस। पान बीड़ो
सु पठायौ। उतरी फौज अजमेर। आय हुरड़े चड़ जायौ।
खाग बल रण रेवत वहे तरवार बजायौ। सुर भुप
नायो माहव चडे। वहां सबल दल वाढीयौ। कुल भाण
माधव अरीयण करे। किधु अबदुल सफादीयो॥१॥ दुहा
कुवर सारंग ने अमर कहे। मड़ तुटो रण मार। लाख
पुसे तुरकां लीजे। कोटे मेच कार॥१॥ छंद भजंगी॥
कहो राण अमरेस हुते करीयो। धरा बंद सारंग माजो
धरारो। सुणा वचन सारंग टेल कालू। बजे खाग भार
मलके सुभाल। कुवार तुरकान मारे सुकटे। बको लाग
पुरे भार असुरान बढे। करे जोर सारंग आयो कुवार।

जेठ राम जुहार कीनो जोधार ॥१॥ दुहा॥ मगधर ताड
पुर मारीया। के तुर कान के नाम॥ जुटो सारंग सम जहुं
मेड कुवर सुभान॥२॥ कवित॥ फीत जुके साहा फकर।
तखत वाह दर साहर तेघ। पतर तोपत साह। जगत
रण काज रंक मैये। कि अरज साहकु। चक धर कासे
थोड़ी। केता गहो खाग कदर। साहग कहे पहरो चुडो।
रण वाज खाग बीरो लीओ। मेद पाटले वण मेत। अमरेस
नाण हिंदवाण अत। छत्रो राम बेटा छतै। छप्पय॥ तड
आय तुर कान। मद पाट धर मेवे कजण जंगरण काज।
सेन लरख लीयो साथे। बजत घोर नवात। तोय रतत
होय तपत। किते कवान कबान। सुर रोपे लोज परवंत
सेरव सईद मुगल पठान सब। हेक राह कर वाह लीय।
मेवाड़ देस लेवा मुगल। सेना चीत घोर चलीय। सुनीय
वात संग्राम। आंये तुर कान सु उपर। वाढ पतो परम
वाज। धम धम लेन इहे धर। राम कोप बज रा[illegible]। कयो
जद हुकम करारा। चत हजार वतीस धरम नह जाये
करारा। सज खोल कोल बतीस सेव। सरब सेन साथे
चलीय। कस कमर सजे मेहे ते किधु। गम उमे धमा
लाग कीय॥ छंद भुजंगी॥ सजे सेन चलीय मेते सधीर
अधपती सरब साथे अमीर। तहा अग्र कीध तोपा तीयार।
कीनी मार सा झड़ लीर। डेरा सुहु रडे जाय दीना।
लखु दल तोपा संग लीन॥ दुहा॥ सोलै अर बतीस
श्रव। सज आय धन सेन॥ अस खर लख तेआगम
उडग रज नीम छाई रेण॥१॥ छप्पय॥ कितक देरव
दल तुरक। मुपह कंप थव गय। मेहे तीके हे करि
मिसल। बड़ा रण बाज खग आगमन। करपग लरवे
नृप राम कज। माहग सीग नृप मेलीये। तुरकाम जंग
जोतण सदे। जुझ खाग हक मेलीये॥१॥ दुहा॥ मोहलो
लागद मेरवतो दसगत वाच दिवाण॥ साहब आवे
मान रो। तद भीजे तुर कान॥१॥ पत्र वाच राण प्रताप। दीनो
हुकम दीवाण। साहब जुटा मान रा करजे तेके वाण॥२॥

करे युध सींके वन | बड़ खाग कुन बजे | समर जीत कुल सुर
तान हे जीम कवन सुजंजे || आपवात जुध आगे | प्रबल तुरक
दल दूर | मुजलाजा मेवाड़ री | नज कुल चाढण नूर || कर
जोड़ साहब कहे | दीजे हुकम दिवाण || जुट तुरक जा मान |
मके दल मेचाण ||२|| छप्पय || देहु हुकम दीवान | आज
तुरकान उखारूं | देहु हुकम दीवाण | तुके मे चाकर राहु |
देहु हुकम दिवाण पता चोच्च जीत उखारू | रन बाज
खाग मरे सुरग अब मेल वन खावहु ||२|| दुहा || सजे
सेन साहब चढे | नम मुज लगे न रात | सारंग दल सारंग
चले | जावा देवण खाग भात ||२|| छप्पय || चढीय सूर
महा सीग | धरा धर धरन धस कीय | दुवह छोर दध
पाज | कमठ पीठन कर कीय | सेस सीस चल चलीय |
मोमद लहलो माहा वर | सदुल नीभर जम लीय | खलीय बेमा-
न हुर खर | तुरकान पेड़ आतंग तन | मुवन बहु न देख खल
भलीय | माहा सीघं युध ओके मरद | जट हाक बाग खाग
हलीय ||२|| छंद मोतीदाम | बजे माहा सींग अने रन बाज
जुटे मनु सींग करीन पे गाल | भरे दल मेछर गु कुल
भुप | झटे मनु सुरज राहु अनूप | जुटे रन. थंब देवे भर
जोध | रुटे जपरा सर पे सीव रुद | देवे दल हाक बजे
रन दुंद | अर बीर मद देख पर उठ | जुटे रन जोध अर
हुवा जार | मनु परबंत अंद जुन नृप हार | कटे खल
दल | रुटे मनु रोस | छुटे हल तेग तुटे अर सीस |
करी धर बाहत खाग झोचार | जुटे मनु भारथ भीम
जोधार | अरे महा सींग मुजा असमान | जाने रुठे के
कलास पे रावन खान | भमकंत श्रीन छुटे सीर मुर |
छकी तुरकान लरे हे असुर | उठ खाग जार सीसे छ
अकार | जडे पीर जोगनी रुद्र डकार | खर खर खाग
भर भर खीन | धरकज जुट अंमे मन हीन | उठ हुतबहे
सा युध अंगार | कटे रन हत ~~असा~~ मचव करार | तुटे
माहा सीग के अरद जु रुक | रके दके ओदन कीम उके |
|| दुहा || रुक बल हैमो तेरके | कर चढ बर उरस || माहो

क्रदम रख मनपै। खड़े खग जर रास॥१॥ छंद भुजंगी
प्रयात॥ चंडे दुज अरव महा संग सुर कन-कन ज्युं खग
बहे जु जरूर। अरजन मानो कन के खग उड़ी। गरुड़ जा
दिनों मनो जगन जुड़ी होय लथ पथ सोसे नह जोरे। बर
बर सुर सु उठे बकोर। खरे चत्र धारि पेर भोम मारो। मनो
आगमो रुद्र पीछे उकारो। खरे खेत्र पाल सु नारद खेले।
जुटी धार सोस परे चेत मेले। हुर हुर हुर बर पाय
हथ। करो धार माहे सोग नृप राख कथ। बजे खग
मार अखंड अरवारे छत्री खग खोसोद सारंग सारे।
उरे सेल उर बहे आर पारे। छुटे हत सेले फरे रुद्र
बारे। मनो सेक सोसपे गंगा धार। करारो वरछि लगे
सुर अंग। मनो श्रोन छुटे सुर सी तुरंग। मनो सोस
उड़ धर सो बीचार। मनो माती जाने नारायन तुर कार।
फरे सी मनो सोस हस्तोन के तुट ओर। मनो गनपति
जान रमावत जोर। गहे अपछरा हार सो सुर जान।
धरि जान बरे माल बठे बेवान। उठे सीस हस्तीन के
खग पान। मनो श्रंग तुटे पहार-पान। परे कमोध
धर सुर बारी। अंग जगा सोस जो जुरो अतारो। तुटे
रुंड मुंड मुसुंड सुतुंड। जेट जोगमो बाटी अतारो। जे
जोगनी बाबन जान उडं। बरे हुर सरन देखे बकोरे। हर
धुन लेवे ज्यो रमाड़ कोरे। फरे खेड खेड रो हस्ती भार
परे भावत धरती पे मतवार। अही जान बेवान सुचोन
रखो। परे जान धु सुर लेवे परखे। पड़े सोस धरती
पे रुद्र मोते। जनो जानम जोठ के रंग दीने। उडे
वत सेल मनो धार अंग। उलटी नु गंगा छुटी जोन श्रंग
कोट उर सुर उड़ लोरी अंरव। जने जोर फवाल छोर
मुरव। खरे खग सीस आकास मे बाज लूवा। गहे
अपछरा हाथ झेलत लुंड। कोई जान मगरथ मे दीन
कोप। हजार मरे मेच्छ छत्री हुकोरे। जनो खग मेद्रप
उरजन जोरे। किये फते सरके धर जुट काकर। उडे
[illegible]

मुड़े। उड़ी मार गहे सीम रन बाज तो उठे हात सरंग पेर मेछ केर। तुर काम री पक्रे सीस तुरे। मनो जाम झोट के कुंज फुरे। पेर धरमो काज बाज सेभा पुकारे। फुगे गुम महग सीम मेछ पछारे। हूरसीस इम गहे कंठ डरे। वरं अछरा लेर वेकुंठ बगे। लीये जान सुर पीठ इाव लग्गे॥१॥ छंद रोमकंद॥ करन अस्त्र सु सस्त्र सु कमर। डेवर केतु अदीते दीप। मुड़ टोप सु ओपह सीस झलमल तेज मत झल गाव तो। धड़ मूप तुरंग हु विच दुर्ते गह। मोड़ सुअंग्ग हु आव मेड़। जुड़वां कंज जेगाह उसस अंगह राम विध तन टोड़ रेड़। मड़ खाग उभार सुसार गहया भुज। लारव दल माहर सोीम लेड़। जोय लाख्व हुस बीर तुड तह खाग बजे कड़। सुरंद तु सत्त पाव चडे बज मार बड बड़ मुंड रुड वड। सुंड तेड़ फाड़ लोथ पेड़। बजीते ग्रव रान अमोय डुक नम कीय बाग न जाय मेड़। खग वाड खग कोय। सीस सत कोय ~~भल~~ पाय सार धर आन परे। खगवाड खव कोय सीस सम कोय पाय संचर आन पेर। अज हाड कुमा वत। मु अमंन कीय ताल तन कोय साबुत रे। रंग रेत न खज तुराजु रनं कीय। बाथ रुधकिय हाड़ बडे। मड़ खाग नर जेम उतल दलै ~~दल~~ तन खवार। पीठ पलटन आय परे। मार के मत उलटन बग खाग बज मार बलीवल बीर बाहदर। केक नम सुर मरल करे। गीध आपरन मधाण तेग रके कल। सरड लोउल लेत सिर। इस सीस न काज लेरु जु आगरोय। जेठ पाय गौज द्रन सीस पडे। खग काड़ वर पाय खमग जुहार। बजो बल सीस झल मत ताग सेरे। मने केसीव अड ललाट। मनो मला तेवर मरल कु उरल करे। वर देरव अपछर पत बत कते। खिंच वेमग अकासबु जेडे। मड़ खाग०॥ धन सेल चमंक बजे धन घुघुर। फाग होरी जु झमक फेरे। फेरे अंग पहार पहार सु झरत। कीधु दामनी अभ्र दमंक करे। नमतत जम कार

बजे कानुपर । उठ चीडी भोम असमान ऊडे । भड़ खाग॥
॥दुहा॥ सुतन मान माहव सुरंद । मुप कुवर कुल माण॥ छत्री
भड़ रण बाज से । राखी धर धर राण॥२॥ कवित॥ पडे
सारंग मोहे सोग । पडे रन काज पठान है । कामवत रण
नाथ । धरे मंग पोवे मान । हुये सेद लहुर नाथ । परत
धर २ भले पान । गिरै गेर मोहे सोग । वरे उपछरा
वे मान । भडावत जोगो दास मर । नाराज छास वीलह समर।
चवन राम सुमान सोग । केते खाम तन कटोय । पनहु
सोग सर पसा । जोध खाग बरन जुरोय । मनहु खाग
मोटी मार । अंग ज्वाल तन उठे । कर मोर धर पैरे । की-
रवम सारंग भड़ वढे । गज बाज कीतय जोध सुमेर ।
धरन असुर असुर अमोर टर । रजपुत चाकर मोहे सोग
रा । पांच सात रन खेत पर ॥३॥ पडे भाटी माहर सोग ।
अखा मोड नाथ उजालो । कोठारी रूद भाण । साहवैग
म अरी सालो । सामंत अरख सुर तेस । मरद नाहु रखा
मेर । सारंग रा सामंत । भाट खाग रन भोरे । माह
सोग ओ तुटा मरद । धान कछु धरता धरी । सामंतेस
रक भाके समर । बीजो बड़ खाग दुरा बको॥३॥ तब
महर बन्त लख पैठो तण लार । आप कोनो कहे रानभाम
सारंग कूं । आप ज स्याम हे को अबर । रन बाज मार
जोत्यो सरन । धरम सांभर रख्यो धार ॥४॥ दुहा॥ परे
खेत रन बाजरवा । परे सुर महा सोग । अरवीपाल
राखी अजर । जुर फोनु रन रंग ॥१॥ अन हुसे चौरे
अनुज । नाहर खान सुजा नर॥ सुरत अरख सांमत सो ।
छुरे रन छह सार ॥२॥ छंद रसावला॥ गैहे तेग हथ ।
जुरै मेछ मंथ । असनु उफरै छत्री खाग भारै । तुरै
रोस खग । बूजा आभलाग । उडे श्रोन धार । मेले कंगा
बारं । तुटे हस्ती दंत । बगा जान पंत । हुवे सुर हल ।
मेले वेदवकेव केल । दीये बीर तालो । अभे खेग
फालो । भैरव पकालो । फेर मत वालो बर हर सर ।
चढे, भरव, नर । हके हक बजे । भाजे सोग गजे ।

भेडे नार खान। जुटे भीम जवन। सुरतेस चले। भीको
कन्ह हलै। हने सुर हय। पडे उड मच। भीके नर खान।
उबार सु प्रान। गयो कोस बार हलीवे हुजर॥१॥ दुहा॥
सुरत अरन सामंत छोटे। पीच्छे लेनन प्रान। अड पग
तभारन असुर। रवाग नाहर खान॥१॥ कह्यो साहब
सुरतेस कु। सामंत सुणो सुधीर। भीगे नाहर खान
भव। वखान जोवे वीर॥१॥ हुकम लीया तब वार हय। सुरत
सामंत सीग। सारंग नृप गुल सभेर। बंदी रण धीग॥१॥
॥छंद पधरी॥ जुरत मीच्य दे भीम जगन। भारथ कथ रखै
सुभान। उउत सेल फुरत उर। भम फैत रुद्र सुलतान सु
पुर। कहूंत तेग छत्री बकार। तूटत जगन तिम पैच
कार। सरत सीग सामंत सुर। पाडीयो खान नाहर
सपुर॥१॥ कवित॥ पेरे सुर सत पंच। और मुगल असमान
ह। नाहर खान पडन उर। जाल नाहर जस जान ह। पेरे
लाख तज प्रान। पेरे पठान अपबल। बहोत पेर गजबाज
धरन ने जासु पैर दल। सारंग नाम राख्यो सुभर।
कलम कार जीत्यो सुकर। कोहै असुर मार हिंदवान
पत तुई माल पुर न सुहर॥१॥ लीये दरब धन लुट। बहुर
लीने गज बाज। चत्र वंगी ले चमर। सर बली ने नृप
साज। नोबत गेंजा नीसाण। सुधरी लीनी दल सुर।
सुरंद साहब कर समर। नरंद चौपे कुल नूर। कुल
गाज नूप गोरे कलम पल पर सुजस उबारी यो। संग्राम
राज आगे सुधर। धरम साम मुज धारीयो॥१॥ दुहा॥
सुजस पाय आया छत्री। मार लीया हद खैच॥ पत
साहु मेवाड पर। परतन खेले पेच॥१॥ कवित॥ जुद
जीत्यो धण भाग। आज श्रब राण स आगे। दीयो
श्रब राण दिवाण। बीरद मुरतब महा बल। लख पयो
तर लार। आप कीनो उ सु अचल। कहे राण गग्ग
सारंग कु। आपन स्याम के अबर। रन बाज मर
जीत्के सुरत। धरम साम रख्यो धजर॥१॥ यह सारंग
करी अरज। सुनहु राण संग्राम तुम। पहल रहुन दे पटो

हौत मुरतब मेलु हम। हुकम पटो कर दीम। सुरंद गहु
नाम समपै। बाढ रुडो सुरतेस। अधक सोरंग हत आपै।
बनौ रौ ठोद सामंत बल। मोई मुजरा सीने भलो। साढ
साढा हजार पटो समप। कत सारंग चाढो कलो॥२॥

॥ सारंग देवी छोरा॥

॥छप्पय॥ भार भाज गड़ सारंग। पटो बधारौ पायै।
राव हु की धर रखी। श्री हत गयंद चढायै। छत्री मेडै
माहर सींग। राव हीयौ तद राजो। सुरंद जंपे संग्राम।
विरद कुल राखी बाजो॥ सर पावक लीगी पेख सर।
छत्री राजा सम पोया। अधपती राज सारंग मैं। राजा मुरा
तव अपीया॥१॥ मेघा डुंबर मोर चत। चग छोरा
चंगोर॥ अडाजो करयौ अपीयो। जोरपा रन मंगोर॥२॥
समप राज हय गय सरब। मेद पाट भुज मंड॥ सारंग
~~[illegible]~~ दे माहर सींग रा। रखगी नाम नव खंड॥३॥ करो
भाज गड़ राव को। रस गवाड रोड़। सारंग देने सम
पई। करा नग चानोड़॥४॥ कवित॥ सुरत माहव सारंग
चंढ गयंद ली राजे सर। पत साह लाग पाग। उडंड नप
पायौ आदर। नजरा जो सुलतान। करे सो सोद कलौ
धर। सारंग देले बचन। कराये नव मोहर अप करो
दर वाजो दलो तर। पोल जद अवर मुरा तब आपायो
भर नजर आय दरबार के। परक मगज सव पके॥
॥छप्पय॥ एक वार चहुवान। सीस उजार खव पंमर। अध
पती पह तोर। अडग भड़ लाग अंबर। दीयौ हुकम
अमरेस। भूप सारंग जाहु भर। कहु मारन के वार॥ आप
चहुवान जारु अर। सारंग चढे नीकल्यौ सुभर। अडर
फौजले आवतो। भड़ा हत नपत सारंग गैलौ कीधु
अरा सेन आपणो॥१॥ छंद मोती दाम॥ चढे नपनीक-
लीयो कुल सुर। हसे रख नारद बावन हुर। गहु गहु
बाजत करन तुर। भजा बल सैन करन समुर। उठो
चहुवान हाजे भड़ आप। सुरा तन सीस जु आवि रधाय।

बजे रण तबल बंके केही बीर। नर पत चाढ़ण के मुख
नीर। मंडे दल दो हुन सैन मराथ। कलो धर राखण
के अखो आय। बजे जुग अंग नटे कई सीस मंडे भर
पाय। नर पत के क अनडन माय। खंग खनकार
उडे रन खेत। जुद्ध भर सारंग के खग जेत। गौ चहु
वान हुवे अर नुर। बरा बरु खग कनै उड़ बर। करी
पह सारंग नहर करवर। नर पत चाढ कुल मुख नुर।
सुनी यह बात सुराम सुचंग। रजपट सारंग के भुजरंग
भुज कर मार सेवे कुल रूप। रजवट राखीय सारंग
रूप॥१॥ दुहा॥ जुट सारंग भड़ जीतीयो। समहर पच्छे
सार। बहे चहुवान सुबाढ के। भड़ सारंग धर भार॥१॥
चवै राज संग्राम सो। सारंग हुत सधीर। चंद्रावत उपर
समर। बर दायक कर बीर॥२॥ जहं चंद्रावत जोधोपर।
अनमी हुकम उथाप। समहर करण सीसोद सु। पाछा
फेर न पाय॥३॥ छंद पधरी॥ जंग करण नुप सारंग सु
जुट। यह चंद्रावत पर भय अखूट। चडीयो भड़ सारंग
वज्र समान। यह सीस नृपत जो आसमान॥ आयो
चंद्रावत पर अछेत। छडीयाल गाजीयो नहर सेल। उफडे
बाजे दमाग आय। वह चंद्रावत लडीह सूर। बडबड
करवाण भड़न दीप पुर। हरकंत रंभ वर अर हुर।
खग मार बीर दमिते खेल। होती प्रकार मनु गेहर
हेल। पीवरण कुकडे खर बोच पांण। कुसनायक सारंग
जुटा खग भाड। चंद्रावत भागा कोड सुर। कुलनायक
जोधाक्या खग करवर। मेलीयो पाण सारंग मांह।
सुण राण कथत रंग दीयो बाह। पचोलो कान
भलय प्रमान। जग जीत सुभर सारंग जवान। सुन
बचन राण दीनी से वास। वत भुजाला जेम वार अखस॥
॥दुहा॥ जीत जंग आयो जबर। नुप सारंग खल भाग
चंद्रावत भोग सरब। कीधे सारंग भुज लाज॥१॥ करे
संग्राम फमावियो। राव भुजा धर राज। दरखो आयो
हुकम दल। उठ नृपते भड़ आज॥२॥ छंद सावत्री॥ करी

बांध लठो। सर पेत पेरो। जुपि भूप जाम कट आसमान।
बठ खाग बीर। धरं के सरीर। उठो आग जल और
आसमान। गडे भुप कंत। लुटे सांस लेत। छुटो श्रोन धार
ओठ नचे चंडी गौरे। हहकार हुतो कटे केक केलो। परे
केक बाज सकतो जु गाज। लरे केक सुर। पलटे के पुर।
कटे धट धट। कटे के बिकट। कटे कपाट। असुर उलट।
बिधु खाक लार। नभ गात तैर दुखनी सुधार। गुबरे जोध
जार। महा बीर मान। और आसमान। सोरंग सरीर लैो
धाव बीर। दखनी सुपेर लीये सुर लोट। मो प्रेम संड
करे रूड मुड ॥१॥ दुहा॥ सारंग भड़ जीत्यो समर। केते
दखणी कूर। जंग कर जीत्यो जबर। पो द्रब धन लुट ॥२॥
कर जु पकड़ सारंग के कीनो कंठ लगाय। कहे संग्राम
साकु आप भरोसो आय ॥३॥ छंद पधरी॥ बारठ कवर
परमे बीहव। लाल दीये तुरक बाड़ी सुताव। मेहडु है
कीयर बारठ सुमेल। अबजोगको सुम करो बल। कव
जागर रान से अज कोन। लख दरब बाग सो मागलोक
अठ पत रराज अरज रान कीनो सआराग। उनवास्त
लब बेती उठार। कर दई उठा तरी सुजस काज।
लख बरठ रान भुज सरम लाज। काम दार लखत
ताग बगर कोन। देख रान मोहरत नह छाप दीन।
होरा मास प्रवीमो लख दबार। अब बारहट मनमे
करो उपाय। पोहु मोहर काउ नाप धरी रा पास। वहु
बारट कुम लीयो उकास। कर काज मोहर कव
आप कीन। दल सुधर सागर हात दीन। वहु जार
ततब दीनो उठाय। पो हु असुर आग लीने सुपाय।
जुन कहु कम पोन आग सुकेम। रेहे मोहर सही
कीनी न रान। वहु मोहर तुरक दीनो वताग। आप
को मोहर देख चेत आग। पेज राखनी प्रीत कान्ह।
भुज कर करी रन पद कवच माल। कवी राक सुकेडे
च्यूरी कार। सोले अर बतीस फेरे संवार। सतु बरप
पे बारठ पलार। पन धर केसर के लीनो पार। वहे

वह गारा कवत गीत नवनार। चुडं न तुत बारह सुनार
पग मुज दु केसर कहे सुर। दरार पी दुख कहदुरी
सारंग दे पास गास तब। गास बंच गारा सारंग
गीतव। पोह आरा कवी राजा राव पास। हरक मन
बैठे सारंग हुलास। कव सुजस कीत रकार कीन।
भई नृप सारंग गान ग्रत भीन। अतनौ कलाम कहकहो
आद। धर बाह ग्रह कर कर कवंद चाय। सारंग अर
केसर मन उछारा। पर बात हो बार लगे पार।
~~सारंग अर केसर मन उछार। पर बात हो बार लगे~~
पार। सारंग अर केसर कर विचार। बेहु बाह ग्रहे
लेगे दुकार। सोले वतो बेहेस श्रब। कहे सारंग रान
दीजे कुरब। फेर रान पोठ बैठो फीरार। अह बार
फेर भी नजर आरा। सारंग अर केसर कहे सुजान
राजा धरजा तुम सुनहु राम। चोगणो कर बढो जेस
मान। मेह पत सर पाव दे मुगत माल। सर पावकास
गज पर चढाय। बारठ कु सारंग दीयो बढाय। उम
राव रान रे ढारा अठेल। बार वरो सारंग करी
बेल। कोटीपो कवंद रो विरवम काम। नब खंड सुजस
सारंग नाम॥१॥ दुहा॥ जाग रचो बल राज रमु। सारंग
नृपत सचोर। नृपत बुलायर नुतने। धर उछाह मन
चीर॥१॥ छंद पधरी। सारंग राय जाग रच्यो सुर।
नरीपंद नुत कुल चाद नुर। कवी राज हुते नुतं
कराय। भई लगी देश देव दे देव राय। सारंग
गंजा तुरंग समाय। यक धार त्याग दीनौ अमाय
सौ कपीयर नौमे चाद सुर। कवी पणा देव मरलेगा
कतार। दीवाण सुणी यह वात दुठ। कवी राज कोयर
अभरी अखुठ। संग राम नुत भेजे सकाज। सर पाव
सरव अर गज सुबाज॥२॥ दुहा॥ राजा संग्राम
सकार चढ। भूप गयो सज भीर। सारंग सौवियपहरीये
अधपत नृपत अमीर॥२॥ कीनो भीड़ो आप कर। सारंग
कोर उछाव। सो सो कपीयर सनमीया। बर दायक बण

वोहाव ॥२॥ ते कीनो माहव तण । जग वल राजस जोड़ । ख्याग
वधे छ मास तक । अद पान आवे ओड़ ॥३॥ छंद पद्धरी ॥
एक दीवस राणा सकार आय । जाहें तरर भूप सारंग
आय । वह जग संग्राम ओ दीसु बर । दंऊ लाग प्रसारे
नरि पिठ । हल चलत तोक वील हेक होय । जहें नाहर
उठे गाजत जोय । कर उकर नार चालियो चक्कर । हरवल
चोसटी चले हुर । होय सुर चूर चढ सुहक । दल चार
नार आयो सुडक । बबेरल एक नाहर वीरूप । जहं
जो केक कायर सुजुप । हलकार केक लत कार होय ।
जग वार अरकन मरह जोय । उड़ नुगर चले राणा
सु ओप । अद लड़ि खाग सारंग जोप । बबेरल सीस
पर तेग बाय । वहं नाहर हकार । सारंग कटारो गही
सार । पचीस कटारी दई पार । नमाय रूप सारंग नेहर
उबार राण सारंग अबार । पहु आसमान लीनो उधार
दस सहस भूप सेवास दीज । कुल नायक जुग पुर
नाम कीन ॥ दुहा ॥ सारंग मड़ जुटे समर । नाहर हुंत
न डर ॥ वर दायक जुटे वहे । वाग कटारी विडार ॥१॥

॥ प्रथी सीगजी ॥

॥ दुहा ॥ प्रथी सींग हुन पाटपे । छत्र पत तेपे सीसोद ॥
माधव कज जेपुर समर । जुटे भरत जोध ॥१॥ जगत
राण की पुत्री जहां । जेपुर परणे सोग । माहु सोंग
मोजज मही । बर उदो चत्र चोग ॥२॥ दुसर पुत्र दुजो
आप । मड़ जोधाण मोजज । पो नृप वेठे पाट वे । खाग
मंडे रोपे खीज ॥३॥ छंद पद्धरी ॥ वेहे पाट बेठे ईसर
सुबीर । बाण बंद मोजज जोधाण वीर । पहु सुनीय
राण कथ्थन सु आय । लख करवत देख पहलगोय
आय । होय हुकम राण फोज मदी राम । कर युद्ध
माल जेपुर कीवाम । तद तीम अराबा केक तोप । ये
होय खड़ीय गज खला ओप । सग गज केक चुंडा साथ
हे पचीस केक जे सांभा साथ । कस कमर रूप बंधी

केवान। भाला हत जुरा अरु भान। जेपुर पर-तोपा
जुट जाय। यह उडत मेहल पर पडत आय। दुजाड़
हुलो कर सधीर। भगीय फोज मेवाड वीर। कव सुनीय
श्रवन रोब फोधमर। जेपर नृप गोला को जोधार। अद्र
पतीप नेट ग्रब सुमर ओर। कतेने नृप लीनी लडण
कोर। यह लीयो पीपल बीड़ी उराय। पोहर तेग नप
लखीय पाय। सारंग नृप न्रप चढीय सुर। हरखे रख
नरद अचर हुर। चोसठीय जोगन अरु चलय लेंड।
रिवत चढीय सारंग करण खंड। आकास डोक सेल
उधार। पान जान हुन लीने पहुार। चल चलत धरा
कंपत सधीर। हुवा वन जोगन चतय बीर। जेपर पर
सारंग अडीये जाय। लखव तोप जुटन भल तोप लाय।
कांगरा केक गढ उड़त कोर। पर बाज तुर धनभूधर
धरके दर बारुज रहल के पडत दौट॥२॥ दुहा॥ अडीयो
भड़ खाग जबर। अडीआ सुर असमान। चढीयो
हय सारंग सुधर। जुटो खगा खवान॥२॥ छंद वरघना
राज॥ चढत सुर बाजतुर ध्रम मूधर धर। कुरंब पीठ
बाज रीठ वंध केकर कर। सारंग चड़ सेल गड़ बठ
के बर बर। बजंत हेक बाज उडक धाक केधर धर।
उडंत खाग सीधु राग फाग केफर फर। फरंत सीस
बेलोत ढूस मुंड केर खबर। केतेक सुर लेत हुर
खब केरवर। खगार मार बार खाग तुंग केतर
कर। भरत सुर धीर बीर तीर के नर बरं। केतेक
जोद्द होद्द रोद्द कार के करं कर। गज दुमुंड
फार के मुक्ता वीत सुबीर वरं। मनो सुहार हार खोल
तोल के कर धरं। पेर उलट सुर केक उलट नर सुकरं।
खुरे ह कार केक बाज भूप भूप से भरं। जोगीन दास
रोक रात खाग खाग उबर। लो सु लोह बढ चोह
होत बांह गुहरं। बजंत तोप इंद्र कोप कोल के बंरगरं।
तुरंग खेर पीतु खाग गाय तोपे पहुरं। चढी सुनील बज्र
कात बाप हेक वीखरं। कोयो जोधार कुरव भार याके

टेर टर | उभर पहस सेरेस कु सोभाय भाक कुबांसीकरी
फते दीवान की केवल भल के कर | पदमेस काम
आर के फते सारंग की कर || दुहा || करी फते दीवान
की | सारंग मड़ कर सूर | परे धरत कर का पदम |
हसतेगी वर हूर ||१|| छंद भुजंगी || कछवाह सीसोद
के हो य क्रोध्य | गुरी वे अरवेरे मतो मिल जुध्य |
कछवाह सीसोद जुटे करेरे | हो य हल चल हुरे गेब
तारे | उपारव रका मता बीज ओप | छुटे हते तेग
तुरे सीस तोप | करे कछवाह फते रान पाये | धप
माधो सोग ईसर उठाये || दुहा || प्रधो सोग रा पारेप
राधव है जम तेस | छत्र धारया पाट जगतेस सा |
~~कैसे~~ लिमा देवल रवग रेस ||१|| जनहु पार
री सेवरी | छालद भोगे दूर || सुरव दोला प्राप्रीत
मठे | सारंग बंस प्रताप सूर ||१|| जावद उपर भवता |
मुजरती पर जंग मार | अल मलम तुरी अडर | सम
हुर कालो सार ||१|| छंद भुजंगी प्रीयात || जेहजावद
उपरे माल मार असवार सारंग ओरो अठार || भरजा
पाठा सारंगतेग ब्रहमंड | रवगा काड़ असुराम फाड़
सुखंड | भरेके भरेके रवरेके सुमार | दुमल मनो सीस
ओरत पुरं | हलेके मलेके भलेके सहोत | करेके
मनो जोग माया सहोत | हुरेके भरेके जुरेके हार |
प्रवी नाथ जगतेस पोरे हजार | पचीली जलाब
सुराम पठाये | पहां पीठ सारंग चोलबर आये |
अठाये मनो पीठ सेजंग आरे | धन बाज राजा
भजी ताप भेरे | अलेटे रवलेटे कुटेरे अपार | जैनी
उपरे रवाग सारंग भार | अठेरे तुरंग हैरे गोह आगे
भोरे जावद जाग भेवास उभो ||१|| दुहा || मड़लडीयो
साका सुभड़ | राजा गो कुल रूप || कोजी फते जावद
कहे | मड़ सारंग कुल भूप ||१|| मरहठा आयभरव
भेद पाट बर भाय || सुणयो राणा अरसी श्रवण | सारं
है सुध साय ||१|| अरसी राणा लरवीया अरवर | जावद

नाम लख जाम। साद्‌ड़ी राज रु सीम रै। फेर लखो पै प्रमाण ॥१॥ कवित्त॥ फेहु बीर चड़ फुकल। बीरह कार सुबजोय। मन ह घरा वरा चम चौर। जहाँ वदवान गजीय॥ चडे फौज चतुरंग। जंग करबर कर जौर। सारंग उरचो गाल। अदपत चड़ भड़ ओर। जगतेस भूप चडीयौ जबर। खबर पाये दुजा खगी। अदपत भूप जुद करस अड़। पहौर बहर की पगी॥१॥ छंद कलू-फाल॥ चड़ बीर नृप सारंग। बहै हुरक रब बारंग। खगां वज खगा चमर। जन कालरीपै मन कमर। बहै बउत बडत सबीर। नज तरफ मचो गनीर। श्रोन धार उड़त सरीर। बहे बड़त पंडत के बीर। जुट लरत पड़त के जौर। करी भीम हस्ती पर हौत। उतार के कै उबार। भर परत खगा सर मार। छौगाल अर सारंग। श्रतो बदीप पोरस अंग। दखनम दला कुठार। लख दलन पर फरलार। सारंग जीत समर। धन खवीप खान सुधर॥१॥ भड़ भगडौ कर भाजीया। दखणी लीना हार। रावत जगै अदियात रख। लोह फेर खगा लार॥१॥ खमार जादु तरफा नखर। आयो मेवाड़ सु अप। उर सीराम लखीयौ अबे। भाड़ खाग भल भूप॥१॥ छंद सम-वल्ल॥ कस्यो जगतेस। रिमर खाग रेस य हेखन जादु बर खग ग बादु। अरे आसमान। कर कै केवान तुरीयां देस राम। बजे तीर बान। जगतेस जुटै। मै दोन उठै। भर रथ मीर। सारंग सबीर। कटे सं सुंड। कटे कक तुंड। हुवे हुक हक हक। परे लख लाख। कटे के असुर। वरे हुर सुर। को गौरमहेत। सर घाव फेत। अगादास साह। बर खाग बमर। करी जीत जाग। भले के भुगत। कट्यो खग जादु। अभी कियो लादु। आयो रान असउचाव। तुम मान बगो। कहे रान राव। कर क उचाव। तुम मान बगो। कहे रान राव।

साम धाम। धरा लाज धम॥१॥ दुहा॥ जीत भूप आयो

झाड़ । भड़ झाले खग मार । काढ़ खाग जादुन कु ।
लसकर ले बहु लार ॥ २ ॥

॥ जालम सिंह जी ॥

॥ दुहा ॥ जाड़ पार जालम जबर । बैरी नाप धर देत । खाग
धरवणी खुरसाण । जंग भड़ करणो जेत ॥ १ ॥ छंद पधरी ॥
असरान चकार रैड सज आय । इह धणी राव कीनो
उपाय । कोधु सुमीध गल गल राज काज । भड़ पगा रीस
मनु मेह गाज । सारंग जड़ बीड़िया चढे सुर । हड़ हड़त
बीर हर खंत पुर । जीधाण के रोला चढ़ नेजाग । बीर
सुर केते नेमे छलर भरत पुर । उड़ खग माटी भड़ अमीर
मोरे गड़ लीने केक मीर । डुगला पर चढीयो दुकाल । जालम
बद सारंग मुजा मल । यह उठीय रीठ खग मार उस । झूके
जब सारंग भेछ दूर । कमार माग कते सबीन । लीया खाग
जोर गड़ लोह लीन । सतावो नाम लीना सारंग । अडपायत
जालम मोड अंग । दल मार चढ़ली बाड़ काज । लीख बिरद
मुजा सारंग लार । हत लखीन अरज श्री राव हाथ । नरींद
सुनहु उदीयान नाथ । तोरे खग जावद कस्तार । मे
खाग मारली बहु मार । यह वार करव धरवनी बचाय । फेर
असुर लगाउ सरब पाय । फरमान सुनीय गल राज फेर
हूति आ जामली के सुहेर । इह भीम राज केत पोंउकेल
बहो फोज चढ जालम सबेल । लै अपने श्रब घरको देस
आप । धज बद असुर जालम बचाय । बहु भीम
राज मुज बीरद धार । वह करत खेत के चढत काज ।
पंपेन सोके कपर जीया पाज । धर मेद पार मुज सारंग
धार । अडपत ब्रदलेग मुज उधार । खग माज खग अरी
कडड़ खंड । प्रेह पत मुज जालम मार मंड । मुज रकैल
रव मेलो समीम । चंपे जालम बीन जुंग सीमु । समाचार
बांच जालम सुधीर । बके से सरीर करस हुटीम
बीर । असमान ओड़ ब्रहमंड आन । नीवं तरव खपयान
मबान । चढीयो गण बरीयर भाल सेल । बहु रान फौज

बहु रान फौज मेलें सुबेल । जुटी लीबांडे लडण जोद ।
बीजे के आल जोरख सुबोद । घर लधाक मचक कसक
के करंम । भर भर भरत खर खरत खंम । डर डरत
पचद्रंग पत्त कोम । मनु धरक ज जुरोय पाराब ट्रोन ।
करकंत केक भरकंत सुर । परकंत पार दली सुपुर । हट
कंत ईस उहे रुंड हात बरकंत केक रंभ बात । हसीन
केद कर परत होद । गन पतीय चंड मनु खेलत जोद ।
कक भान कान फते सुखी । लीकार नग्र जालम सुलीन ।
॥छप्पय॥ समर जीत सारंग । भूप मलामर जालम । लीबाडो
गड लीन । जोद कुल भान खाग भर । काड असुर धम
सान । धान सारंग सुधोप । जीत खग्ग अग्गजीत कलम
कपोप धर कैथे । असुराग भार काढ़ेये अभंग । जे के
नर सुरज पीय । हिंदवाण माण सारंग हठा । थपीण जसम
पणीयं ॥२॥ फतय सुजीय मीमण रान अंजस माहाराजा
जालम जीत सुजंग । ऊभौ सायर जस पाज । अमराण
उघरै फिर ज मेलौ तहां फेर । जालम सारंग सूर ।
गाड़ जावद जमेर । कहेतर मीमण की । जाक सी पव
सीपे हुर सीयार वरन । दल मलीय सन रेव ठाड़ मर ।
धरमी खान धुजीय धरन । छंद हणु फाल ॥ चडै फिज
रन धम साल । भंये भेद सीस्त अरन भान । पहो भड
सारंग पास रघु बीर खेलन रास । पह पलयनाव
द आय । बडे फजर जीत बजाय । सब धरन धुजत
सेर । बड़े जगन सारंग बेर । पह छो रंग कोर उड़ाय
धर हल्ल कांगर ठाय उड ठहल्ल केक उतंग । यह
महल्ल बुरज उतंग । पर दीपत्तेल पतंग । भड लडत
केक अभंग । सुर बीर रन छक जंग । पह मेछ चोर
उठाय । पह मेछ छोर उठाय । पह जुरत सारंग
आय । हुड हडत नग्गरद हुर । तड तडत तंबर तुर । घन
बजत घोर नीसान । भर हरत जावद थान । सरदडीय
सज सुरतान । आप देख नग्र कल्यान । गोगु दे चड घन
घोर घोघु । नंद कुकसौर । चुंडान चंड अभेट । खग्ग

जुद आखिर। सब नृपत नर हे क साथ। भड़ करण जंग
भारथ। भग मेछ रन अन भंग। जुद जीत जालम जंग
॥२॥ दुहा॥ जादव लीनो जोर सु। जालम खाग्यां झाड़।
कुल नायक सारंग कहर। रघु वंस जीत्यो राड़॥१॥
॥ छप्पय॥ ली बीड़ो नड़ लोद। फेर जगवद फर कारी। जालम
खाग जुडे। रही पत रर कमी। नड़ लीनो डुंगले।
पुण जुद कीया अपार। यल राखी अखी पाल। छुबे
खगार न धारंगी सारंग के क जीत्यो समर। लख
मुख सोभागे हे। धर राणा रखे राखी धजर। धेन दुनी
रंग भीमेण के। दुहा॥ जगड़ पाट जालम जसर। छत्री
बजाई सार। मुसलमान हिन्दवान मे तिको ही हेकलार॥१॥

॥ अजीत सिंगजी॥

॥दुहा॥ जालम पाट अजीत सी। धारेण जस बद धीर।
उभ रंग अखी पेत पल। सारंग वेस रणधीर॥१॥ तेग
बंधण अजमल तणे। आप नरा उदीयाण। भीमजल
राजे भलो। भुव मंडल कुल भाण॥२॥ सोले बरस
अजीत सी। भड़ जुटे भे भीत॥ जेसो भारथ भीम ज्यु
राखी सारंग रीत॥३॥ ज्यान बकीर आयो जबर लिये
साहर लार। कह बाडु यो अजमल सो। ले भड़ अपणा
लार॥४॥ करलार कपण वेद कहो। असुर धरले आज
आब सू कहेवे अखो। मेद पाट तुर्क लाज॥३॥ कहे
सोतें बतीस मुख। राक फोज कर राड़॥ ईतरं जमी
लीनी असुर। फौक पमंग खग झाड़॥४॥ यह
सुन के अजीत उठ। कंग तोक उणवार। परवाल गी
पहार सुन। झाट उडी खग झार॥५॥ छंद भुजंगीप्रयात
यहां जुत सारंग गोरे उठे। जनु भीम भारथ के जेठ्य
जुटे। बुजे खाग खाग फेरे फाक फौक। मनु नर
कुलर खोप नजीक। परत मनुख मुंड लेवत ऊस।
बिराजी यहां चंड कर धार बास। खबे बाज खाज करे
[illegible] अपचरा आलेबा सौमेल। हय हेकले

सुर मेलत सैल। फिरे रुद्र धारा पग सकी झेल। बजाडे
खग्गर सुजग्गर उठाये। मनु राम रावन के जुद्ध ठाये।
उठै के तुटैके जुटैके अनार। दहू धारी झेलै जुसह। अरि
दल धसे अपार। तोफा तोड उधार तेहि। वै भज घड़
सुभार। तुटै के फुटै के कटै के तो खार। बहै के कटै के
भुजा खग्ग बीर। जुटै नच्चे जोग्ग माया सरताक चीर।
बहुक कहु र तीर बहोड़। कत सुर फिरै सुलगै पहार।
दे बारी उठो नृप जुटै चंद्रोन। कटै सुर केत छुटै
धार धोन। नयन बनास जकलौ र सोव। अजीत फिरंगी
लरै कोय उवं। दे बारी बडे नृप खग्ग दुबाल। हर जुद्ध
कीयो कदम भैर हल। कटै खग्ग फुंग तुटै मोम कार।
जुटै अजमाल करे रन जुद्ध। जनो बज्र अजीत बजे जो
कार ॥२॥ छंद मोती दाम। रुपे रन जंग सरव मन रौद्द
बजे कर माल न जाट बखान। अरे भर रेन री जावन
आन। मनो सारंग नरेंद सु सुर। बराबर उठो सुआगं
नबुर। लडै अजमाल छतीस म लाग। जगे रक रथ
देत सजोगाग। जुरे अजमाल अने अंगरेज। मनो अत
नडू के पंज उमेज। तुरे असुरान छुटे हद तेप। कीओ
मनु ब्रज्ज पे इंद्र सु कोप। के अजमाल असुर अनेक।
मनो कीर धार रखी भज टेक। जुरे असुराम अजमल
जुट। जनो अलु मनन सम चली लुट। उठे अजमाल
कहात सुफर। कटे अंगरेज बहे रुद्र धार। छुटे रंभ
हुर सो झुंड न झुंड। वरे पुरि बीद ग्रहे सिव मुंड।
अर हस्तीन के रुड उरखार। मनो पट्टवंर ओगदबंद
पहार। बजे पर जाम कौतुल बजाय। उठै हत गैरनयत
बजाय। होय अजमाल के सिधुर हथ। जुटै रजपूत
सो आन के बंध। तुटे अंद जीत जने हनुमान। भये
रथ खेचत भासेप जान। अठो अजमल उठो असु
रान। तुटै ग्रहे खग्ग हुटै बन सान। चले रन तोपन
के गोलन छुट। मनो नव लाख सो अरन तुट। उठे
अजमाल के बाज सु तुट। उठै अजमाल गुतीग उछट।

पैरे मनो अंदज बज़ पछट। परे अजमाल के बाज सु
तूट। अरबद रोस रूप जिम उद॥ दुहा॥ अजमल सेन
हकार के। छत्री रहे कर सार। रान बल हनो मो कलो।
फेर तुरर असवार॥१॥ छंद भुजंगप्रयात॥ कीयो हुकम राम
भूप फोज बार कढीये। फरग जीत जीत फेर बेर भूप
बढीयै सारंग चढ बेर सरकल बार कढीयै। बहत बाग
बाज खाग तुर जेम तुटीयै। बजत बेग सुर तेग धरन
पे तोहारीये। कटंत सीस सुर बीस कर ईस धारीय।
बजे खगग बीर बार दोन खग धारीय। परंत सुर
नीर बीर धज खग धारीय॥२॥ छंद पधरी॥ उठत
जान अजमाल राम। तुरंत जान मारथ जेम। छुटंत साम
तुरंत सुंड। होवत हाथ रड वडत रुंड। तोप पे जाय कोको
तवार। मनो कछ कोठी तुरी करार। तोल महर कटे
गरदर। सीसोद अजी फेरे सुसुर। जेहे सेस करन
जेम जुटंत सुर। फटंत मच्छ मुख चढत नुर। फटंत
तोप अंगरेज कोट। धर कर पर ही रंभा सुधार। उछलत
सीस जय रूद्र मोन। मनो जान मुंडे पै रंग दोन। छटंत
रंग सोहे समान। उड़त सीस मनो उंग भान। डरत
खग फाटत अंग। परंत गगन गनहु बीहंग। हेले
चले दल मल दहन होय। करे न असो मारक कोय।
उड़त सेल सेल उधार। कपाल फुर जनु उंड धार।
देबी री मुंडे सीसोद दुठ। अजमाल धपु देहोय
अरुठ। भुर पान जान बतीस मार। कंपनी के दैनी
जे मवार॥२॥ छंद भुजंगी॥ जाने लीन तोप भूज
खाग मार। अठे ठौर सारंग ठीक उबार। कजै खाग
बीराद बीर बहुल जंगे सुर सारंग तेग सुकल। पंत
छुटत तोप होव अवाज। वरी बीर छत्री जिहा उठबाज।
अवाज नवाज जन कोल गा हरि बजे खग मार जहां
सुर बीर। गंडे के पडेके भडेके जवान। भडेके हडेके
अडे आसमान। भुके के रुके के धके धक धक। हके के
बके के हैके लेरे फके लरव। तुटे के खुटे के छुटे केके

प्रान । बंटेके ह्रैके बैठेके बखान । ग्रेहके खेटैके अर-उर
सेल । भंटेके धरनी जहां तुर मेल । पैरे सुर सुर करे
सोरस फोरे । पैर तुरेके लुटतखून न्यौरे ॥ दुहा ॥ सुखे पा
उस बीच मर । रांण समय रूढ़ राण । चंद सोल बतीस
श्रव वड सारंग फुल मांण ॥ देवारो बरे दुकल । फेर
करे सुपुर ॥ अजमल खग्ग भाड़ अंब । नरीपंद चाढ्यो
नूर ॥ १ ॥ छप्पय ॥ कार कलम कल पुर । सारंग कर
कर कोहे । पंडे मीर पठाण । अभंग रेर पडे अकोहे
लखु तुर लखचरत । परल भड़ जगत अप्रबल । बजोये
खग्ग रन बीर । चरन धर सेस चल-चल । चहुवाण पालू
दसहत करी सारंग अभंग । खग मध्य मारग कुलें
खलीव ॥ दुहा ॥ नर जीते सारंग नृप । कुरे केक फरमांण
केना सु दब लुटे सुकर । तुटे ~~केक~~ समरजवान ॥१॥
कंपनी जोर बीलात करे । आये चढ़ अंगरेज ॥ अज
मलोये केके अमुर । खग्ग गही कर खीज ॥२॥ अंग-
रेज हुकारेवो उजे । ज्यान बतीस खग मरर । कंपनी
सेन कटाय के । जोरन वेह उजार ॥३॥ सुंदर वात
बेरे रचे । उठ सुणी बल आंण ॥ अजमल जीत्यो
आवंगे । फेर दीयो फर मांण ॥४॥ कहे श्रव बोली
कहे । मुसद तर करे मेय । रचा अपन वेश रचु ।
जीत्यो अजमल जाय ॥५॥ सुणत नीम राणो प्रवण ।
वजवड़ बहती वाड़ । अवर न भड़ पुग उठे । अजम
करी उबार ॥ ६ ॥ भेज तुरी सुखपाल भल । अवरसुर
सब आंण । दीयो हुकम राणे दुकल । फेर कार फर
माण ॥ ४ ॥ अजमल भुज अरसा अडे । फिर लडे फर-
माण । करे मार खग्ग कोतर । उड़ पत्र वाया राण
॥५॥ मेद पाट बरे मरद । काढ़्या खग्ग कूर । फेरन्ह
आवे कारय । अजमल तुवर अरुठ ॥५॥ खखणी दल आय
पुगम । पर बहुत पठाण ॥ फुमीर आप मेकर ये । अधपत
करे उठाण ॥६॥ जस पर लोरे बहुतले । सजतो पाव
भरन । भरीर भाया फोज बन । उड़ावे असमान ॥ ७ ॥

॥ छंद त्रोटक ॥ सुन बात रसारंग भूप सर । कुल नाम लही
खग भाल कर । हैक मौच नोप तप नौ कहत । सब फौज
न कुल तकार साथ । भय वार उडै खग भार भर ।
करन जिम ठोन समुध कर । बब खंड हुवै किहो रुंड
बचै । रन खेत अजीत सु जुध रचं । धमके किहो सौल
जु खाग घर । पुमरे खग मंकत बीज पर । छित कार सु
जोगन आय करे । प्रगट भगट किहो हुर परे । मुसलाई
टेला सु बोलंत मुख । लल लाल लला कर जुट लख । भर
भूप अजीत सु जुध भरे । पदक नौनदल पर आप अरे ।
खुलत भार बजै रन ताल खुलं । भनु पारथ द्रोन भरात
मलं ॥२॥ भटक बटक किहि खाग भरे । किहि सीस उड
वत रुंड कर । भरके करके किहि खाग भर । जंग जोधिय
पारथ जेमजुरं । बहै खाग बजे रन ताल बिरं । ~~बरमी~~
नरमी चत पतर फनिर । यह तौप नीपै रुक भार
उडी । बैह नाल त नाथ अजीत बडी । दखनाद नौ
दल भाग दुनै । पुनि जीत अजीत न लीन पनै । धनसेन
दखनन भाग गये । रन खेत सुसार गल हुर तरैयै ।
सर वीर सरखाग बजै समर । वह सुर बरै रंब जी
अमर ॥२॥ दुहा ॥ सर वीर जीत्यो समर । सांरग नाथ
भड सुर ॥ दखणी दल भाग्यो दुगम । हरके सीव रंबहुर
॥२॥ आके जीत यहं । कुल नायक कीनौर । भड़ खाग
दल भागीयो । दखणी दल चड़ दौर ॥२॥ चोपई ॥ सद सुत
पाये साह नादन । वर पीरा न पाये करवा दन । पीर
जूनो गढ आये राधन पुर । परे सैन जाय पालन पुर ।
धराजा पीठ हुवै खडी ढालन । जुरे पठान जहां खग
भालन । बाजी खाग जाहर अत बरन । कर साह नाद
रीझै बखेरन ॥ आहां हुत ईडर गढ आये । लरन
कमधज किये तरैये । बडे रांठोड़ अमद खग बीन
चुरे ~~ब~~ धार कतन सरीर । फरा होड़ जीत डुंगर पुर
यलु रावल जीत आये उदैपुर । कीधु रांठो बीडौ
भाल फैल कर । अवर बतीस भरे सब उमर । कीधे

बीडो अजीत लीधै कर। जुडै सारंग नृप खाग झर।
नृप गौड़ हेक भीत महा भर॥२॥ छंद पधरी॥ जदं असन
नृप सारंग जुर। अड कोपित नृप खगन उर। उपरत
रंग दीने उठाय। जब सद्धौ दरस पे लरन जाय। हुंकार
सबद उपार हाथ। रोपे सभा नस पतखत राथ। काढंत
खाग सुर सुर बीर। नाम्रद केक मुरव उतर नीर। बाज
मार खमार बद। भर भरत परव पारत भेद। अचकंत
केक लचकंत और। मचकंत सेत धर फरत मौर।
जुरकंत केक तुरंत कोघार। रू परत सुर हुरन
उधार। लटकंत सीस के पडत लुत। झुरंत सुर भर
लरत जुत। कटकंत नृप परकंत केक। धर मेंरक
अजीत भरे अनेक। बरी धर जार भासुर बीर। खोले
सीगार रंभ सज सरीर। संदीजद नाचे भाग सुर।
तरके रंभ बावन अमर तुर। अजीत जीत कमौर
आय। वेराग लीनो करव दाय॥ दुहा॥ अजीत जीत
औधो अठै। चगी नृप सारंग। कोनो करडो जीत
कर। काटे सीव बारंग॥२॥ पग धर चौक लड़ी गड़
नये बंब पर हत अजीत॥ तब संभत उगणी तरे
भीत हुवा मे भीत॥३॥ भेद पाट देड भेण के खोस
लूट धन खाय। करी पकार सारंग ने अजीत सह
कर आय॥३॥ छंद अरधनाराज॥ चेड़ अजीत सुरथ।
तुर कबीर हुरथ। फगंग डार परवार। कोदु जद रदस
खरं। अरे चुडंग न उपर। नरत रंभ नुपर। बजे
खगाय मारथ। अर पेर उराटथ। खरंत खग
माय। हेर सुरत लगाय। बर नरम हुरप। सुरत लग
सुरथं। बरंत के वरखंडय। जोगी दलछ भडय।
तुरत सीस तेगय। परंत धुन वेगाय। कारखरत खयं
मनाक बोल मुरवय। तुरंत के तुरंगय। रत खाग
जंगय। तुकार सब उचर। चकार केक वधर।
कर खडाग रवंड केत तक। अड पंड के। कटंत
केक मेनक। वहे साबुन तात के। फाड़े सुहुर सुरके।

ठलगर मार बरबे। अंगड मार रुकेस धोलाण गगन
पषस। लसाड लुट केलर। खगार मार देख र। लुटो
देवल गाम ले। देखे पीतोड लुट दे। बो रो कुबरेवर
दे। पुजन सोस मार दे। अजीत राव आप य। अजीत
जीत अबय॥ दुहा॥ चुडो मार किनो सरद। भुप अजि
कुल भुप। मोर ताडुआ भींज कर। रंग सारंग कुल रूप॥
॥१॥ कोसी पहल भगडी कीयो। अड पायव अजीत॥
गन कर जुरो सर गुहे। भड सारंग भे भीत॥ २॥ छंद
वृध नराज॥ करे अजीत जीत काज चेढ के सारंगन।
घोरो निसान नंद गांव राव के रीभा वन। भुज
सारंग मंद पात ढोल मेढ कोधर। उपार अखरखचे
करे खगार लेकरं। बजे खगार मार बीर नीर
कनेमे नरं। सारंग बीर होर चोर पुर करनरे
खर। मुसा मुसेन पातसाह मार के रंग भर। बजंत
मार खाग बीर केत खसर केकर। नरनजे पलर
नर केक [illegible] लर खाकर। भसुंड दंत कार के भर
सु सुंड ले भर करे सारंग जीत के रवित लेर केवर।
अजीत नु कनीर आप मु बधाय भामन। करंत लुन
बार के कराङ अङ्ग कामन। अजी पे उबार केल
बार के लुवार लुन लवन। भुजान के उबार मर धार
भेतो धावन। मनो असाड गाछ मे चले कनोर सावन।
॥दुहा॥ कोसी पल जीत्यो कोधु। राड जीत असुरान।
मुसा मुसी मारीयो। उडगा दल असमान॥ ३॥ तीजो
जंग जोइ तरह। साह जादा कर संद। सारंग जुरे
सोई सु। बर दायक खग बंद॥ ४॥ छंद मोतीदाम।
चढे नृप भुप अजीत सु सुर। हर कोय बीर सु बाबन हुर
सोहे जादन पे नृप रोप सजे। धन जेम सारंग
सामंत गजे। अजमल्ल प्रमु कर भुप अरे। महमंड
लगि असम आम भरे। बज खाग खगार न मार मर।
सुरलोक देख नम आम सर। अफ थान नरथ
धावत आ। जेठे बीर भरंत अजीत जेठ। भसुंड मनु

दल्न केक भेरे । जनु सुंड रवग्गन बाउ जरे । उडे पत्र
सुंड पवन असो कर जग्ग । नेक तर नानक सो । असुंड मनु
दंतन रवाग भेरे । नर जाम दतु सल सुंड जरे । कररव
न रवंडन रवंड कीत । जग जान असुरन मार जीते । करके
कबी रवंडन रवंड केरे । गन जोत अजीत सुआय गेर
॥दुहा॥ जीतियो अजमल जा । सोहे जादा हुत सर । भाग
दल संद देसवर सुभर । सारंग दल ले सुर ॥१॥ कवित्त
करीय जीत अजीत । भुब सारंग माहर भर । भुरका
भुस मरन आप भेद पार धरन अर । फ्रगत दल
साज पुर । धाय बेरवाब भसुर । कुल नायक सारंग
अरी जाहर जार वमन अर । बजराक जग बाजी
वहर । जायर सारंग उचरलीया । असुरान मारग मसान
र । जद रवडग भड़ जातीया । छंद भुजंगी प्रयात ॥
युडे साहो जादा रवडे संद हेते । भड़ केक भुज पल्डे
केक भुते । जुनो गडते कुरे करे रवाग जर । वहे गड
नगंड सु दीने वरवर । उरा हंत रादन पर पेज आयो
नर केक रवाग बल केन भायो । पाल धरनो ज्यो उपरे
ओप वगर । जेठ तेरे वार्कज साम पठान लगे । मुरे
जार जार रवंग धार रवंड मनो सब केतरस ले
जात मंड ॥ दुहा॥ कहे उमेद काम दार कु । अब मद करो
ओ चाव । कागद लरव केत कका । सब नृप तेड़ सताव॥
॥छंद भुजंगी॥ सेवे सादडी नाथ तेड़े सरंद नृप फत
माल सु तेड़ नीरंद । बाठ रडा तेडो तेडीयो नाथ बीर ।
धन सर दल चढ़ि अहीर । भर भुप भारी चढ़े मोही
भाग । धर पातल आय सारंग धान । तेडे राजे तेडावी
यो भुप तेठे । आयो देबी सीग जु कमीर उठे ।
सेबे नृप आये जु कीतर चढ़े । मनो ज्याग बलराव
कामीर मंडे ॥ दुहा॥ सब नृप भुप विदान कु । अबकीनी
उच रंग । बाजंत्र बिबद बजाय । केसद नृप कस्यो
तुरंग ॥१॥ छंद अरध नाराज ॥ करे सिंगार दास यके
हुद के उआसय । धनक पाय घुघर नज बजंत नुपर ।

झनंक पाय जेहर मनौ मदन देहर। करो सु चंद्र चंदीका सभे कला उचंर कर। भुजान बंद मुद्रन औपमा उदै दान। हीये समकंक हमय धरत तेज धारय। चलक दंत चुपंय मनौ अर करू पय। जेर तलंक कामनो दमक जान दामनी। सजे सोनार चलन य मनौ करंम मलय। कुल सबी सधारय करत राज नारयं॥१॥ दुहा॥ सज मोर हाती सरब। तुरग जकीये तयार॥ नपत जु कर पोसाक। नव सजीया श्रब सरदार॥१॥ छंद भुजंगी॥ गुजंद्र सिगारे हाती गहोर। जरे हौद अंबारी खुले जंजीर। सुडाल कपाल गुंगाल सु सारे। चंडे सीस सुंदर साहै उजारे। गरे घुघर घुर चंर घनकै। जने साकल पाय झार झनंकै। धरा जान भादुव की रूप गंज। धरे जेन पीठ नीसान सुधज। कोध काल रूपी गजंद्र करारी। धरे पाव देत सु धुजे धरारी। तुरंग कसे सु आनि तैयार। सपतास रूपी जो केवे ससार। अस्व नाचता मुध रूपी सउंड। मनौ पावक लाफले गस मंडे। तरंछे तुरकी फबे मुग फाल। बने भापल हुर लैवे बीसाल। तुरंग करे लुंब झुंब तीयार। हव भालय बांगा अजे हजार। कते अंर साउ पाकसे च्यार कीनार। लरव लुंब झुंब कर साथ बीना। जती जान मुनेद्र मुनेस जेहा। जने सीस टंमक रते काने जेहा। सब नाद ऊर कर च्यार सोही। हरव साथ सारंग असवार होई॥ दुहा॥ हय गय चढ सारंग हले कि कोतिने भड़ लार॥ घन नीसान बाजंग गजै। ईंद मनो उंधी हार॥१॥ छंद नाराज॥ बजे नीसान रूक बंब कोन भोम गाजयं। उमेद भुप ईंद्र रूप सेन श्रब सजंय। कते गजेंद्र आग्र कोन मेघ जु घटा मलं। तीरवार भार हेक हार सेस धुब चल चलं। घन नीसान घुमरं मनौ क मेघ जु घटा मनं। तीरवार मान देव श्रन सुर देरव सदंय। तुरंग के फरंत तेस घुघर घमं घमं। नचत बाल याल के कजा जरं

जमं जमं | चेतन गीत गाय के सतार तार बजंय | मृदंग
हौर बाज चौर सौर राग सजंय | गजन्द्र पे असवार
भूप रूप इंद्र रावयं | सारंग तेज भान सो प्रकास मोद
पावयं | करत सीस चमर खवास दुल पाछय | असवारी
भारी देख और होत नुद हुलासयं | कते चले जबुर
के बंदुक तोप बजंय | मेनो के मेघ आखड़ घन सरूप
गजय | चले अदार त्यार सुर बेन्त $ जार वारयं |
कुंवार साथ नार लख वहु चडे हजारंय | वारण सुवेश
हौ वहो सुभीत आवंत | मीत सु भूप राव रान राजके
बधावंत | करत राग रंग के उवार सीस मोतीय |
बधाय राव रान राज जान सुर जोतीय | कते बधाय
गाय सुख आप धान आनीयं | कते मकान खान
पान मेल आप मानीय ||२|| दुहा || मान पान सनमान
सु | धरन लाया नप भान || अचब कीयो उमेद सो | अस्वे
राजा कर न रान ||२|| छंद || नृप मेद कीन ओछवनवं
अब देव मेले रख राज सव | कर वेद उचार सुभ
मकुलं | गरीपंद करे जग जान नलं | वह वेदन की
धुम आम बगी | जन मंत्र उचारत ज्वाल जगी | वेह
आहुती देह जोर वर | जह सुर रज सहेत नु
आप सुर | मख मंड नवे ग्रहे खंड मही जीन देत
उमेद आसीस जही | मह मा पत्र कीगड़ थान मंड | कहे
श्री फल सीस मे हेक चंड | कीतने दुरगान पाठ
कीये | द्विज बीप्रने बेद बचाय दीये | कीने फेर
मंद्र वली चे कर्यो | इह वेद गोपाल बेकंट अरयो
बीज भात मको मंद फेर वन्यो | अब नाग कीबसीरव.
उदार सुन्यो | कर रे दीय मंद्र काभेव करचा |
पत्त से भव सागर संत तरा | गरीयाजो कराय सुमंद्र
भल | दीमे के पत्र जाय वेकुंठ मील ||२|| दुहा || साजे
दरी खाने सुभर | वाह उमेद बराम | नृत करस भगत
नचे | सरदा कर सलाम ||२|| छंद फनु फाल || नृत
करत भगतन नच | पुनि बिठ ग्रहव पच | बाजंत चंगी

बजाय | गुन राग फाग सुणाय | गल दुकड़ मद्रंग सघोर
मग जानत बोलत मोर | जो जरन उडे मन कार | छब
आयब जत घतार | पायल पग पर ताल | मनु सुरे गेद
मराल | जाहां गुगर बज रम ओल | अचलित गुगर ओल |
चरन भग मूरख सुचंद मुख वीकस हसत सुमंद | लल
वलत करत सलाम | कर रूप सोरंग काम | बीचीयान
करत अवाज | मंजीर पवन समाज | थब बेठ नृपत ईवान |
भुव जांन दरदस भान | उमेद नृप अवतार | मनु जान
कसन मुरार | सादडीये नृप सब सोग | धर पडीये बेठ
सुधीग | कने बेठ नाहर कुवार | भुज सार लज खम
भार | पुनी लछ कुवर सुभाय | हुई हीरक चीत हुलास
भज बेठ तेइ फत भान | सरपती धम दु चौगान | दलेल
सारंग दुठ | जग लडूये धर खग जुठ | भारी सु पातल
भान | जस जान मोही जोहान | रंग बेठ तोफ राय |
चोगान देव सकाज | यहू बेठ चुंडो अजीत | गडलुण
हो उग जीत || चन राज हुकमो चंद साहा बेठ पनो सुरत
लख हार साज सराज | जाहां मुजा काम सुकाज |
पुनी बेठ डुगर पीठ | रन सेने आकरीठ | भड अग्र चारण
सुभट | जहां करत सुजस जपट | भंडारी खुम समीर | नज
कुलह चारण नीर | चोबदार सीता राम | चंडी माल
करत सलाम | सब अवर नृप सरदार | उमेद ईंद्र अवतार
वहे सो राम चमर वेत | पुनी मनुह सोभा देत | गम रंग
झडत गुलाल | फुती देत केसर डाल | वहे अतर चडक
गुलाब | सुगंद झडत सुलाब | नग मती मसालन जोत |
वहां मनुह सुरज उदोत | सलाम कर सरदार | पुनी
सर डेरे पधार | दोये मगतन लख दाम | गोय नाच
कर हलाम || २ || दुहा || अचो भगतन नाच हे | गुनी
गायो कठ गाम || सबही डेर दिस चले | सुंदर करे
सलाम || २ ||

|| भाई सालिम सिंह जी ||

... हुवे जबर | सालम हुवो सधीर || खव...

शार बाहण नृपत खग। बाढण अर दलम बीर॥१॥मरद
बणायौ सालमे। राज अजीरा रंग। सारंग जद प्रवाये
सुरंद। भुप सारंग कुल भाण॥२॥ छंद भुजंगी प्रीयात॥
सालमै सैतै न ग्रहो हत सार। धरा काज सारंग जुटे
बरार। बडे अंग हुड धरा बीच बाजे। गरे केक हस्ती
चंडी आभ गाजे। कटे केक भील परे सीस कौर।
चपेटे जपटं कटे केक सीस तुटे तेग अंग। मनौ खोय
कुटके सुर मगं। बजे मार बीर खुटे केक बंद। खरंग
मनौ चार चुटंत खंद। कटे हंड हंड बडे कोध वडं।
कोच्यू जाण साबुन मे तात कंड। बजे बीर वीराद साम
बेहंड। खरग औ सीस तुटत खंड। भमकंत सोरौ न
तुटै तेग मुरं। बरा बीर खाग बजे मार धूरं। खरे
खाग खेत खरंग सुरवो रे। करे सीस नाय कोधू
भील कोरे। लसारीयो धो लीयौ लुट लखं। खरंग
अराढ सुबाज खरंग। देव त्यार परे भूप तुटे सुदीन।
जुटे हत सारंग के उडे श्रोण चीत वती परे गवतो
बाज सार। असो खालमे चीत वती परे गवता बाज
सार। असी सालमे कीत खाग उबार॥१॥ दुहा॥
भील मार जीत्यो सुभर। सालम सारंग सुर। धजर
राख लीनो धरण। बाढ खाग रण बुर॥१॥ कवित्त॥
सालम सुध कर सूर। बीर मालम उण बेलग। बाड
भील बर बीर। करो सारंग रूग केलग। पसण भील
रण पाड। खग गेहर रम खेलग। लुंट कुंट धर
लीन। मंडे सुभट रण मेलग। तरवार बाढ भाड़ी तरै।
बरखरवार उर साव बौ। कर पाल सरद जीत्यो सुकर
जोध भूप दूजो अभो॥१॥ छंद पधरी॥ केतन क दम
क्रम नेम कीन। दुचोपा केतेक गज गाम दीन। पनके
प्राहु बढे सुपाज। लाख को सरब भुज सरम लाज। केताह
वीप गउ दान कीन। लख मुखा सुजस जेकार लीन।
अभै मुखो काउ दीनो अपार। अचपतो ये सालम भय
उद्धार कर कलो दीन। पर साण पंचक चेन पानी पीवाय

सालम नृप बधीयो पन सवाय। केहि राज काज प्रबन्ध कीन। दिखीयां खलं सर दंड दीन। ईन साफ अदल केही कर अपार धर धरम नीत सुख परवन धार। राखो अजमल री हुकम रीत। साम धरम प्रत पाल नीत। कानोर मद आनो करार। सारंग यही हत तेग सार। जागीर जीत आजीत औद। रावत खगा मारा कार रीदनार केक अनम दीबा नमाय। असणाण ढुंत नमाव पाय। कानोर उदे पुर नगर कीन। भूपाल रहे रंग राग मीन। सालम करी अखीयात सुर। निज कुल सारंग सुख दयनुर॥

॥दुहा॥ छाजे आणी सालमै। कुल नायक कानोड़। सैले अण सारंग री। अदपत न आवे ओड़॥१॥ भायो नहीं दुजा भड़। उर सल गायो आज॥ सुत आणीयो सालमै राव अजीतो राज॥२॥

॥ भाई हमेर सींघजी ॥

॥दुहा॥ नृप भीमींग प्रणग नृपत। जो कोटे गिड़ खंब। भड़ अजमल सालम सुभरा। परद हमेर धर बंब॥१॥ मण धर रख कानोड़ में। भूप जोयो कुल भाण॥ आर दलेल खंर उपरा। जठ जुटो सुर जवान॥२॥ छंद भजंगी प्रोयात॥ दलेल मनो गज घेरै सदोर। तद खाग हमेर ग्राहे सजोर। किते भट कानोर चढे सकेत। ससत्र असत्र ससेल समेत। उतर सगोरे मनो बीर आग। बर बीर चत्री धरा काज वाग। बजे खग खाग उडे आग आग। बजे मार बिरंद ये सुर मांग। करे सुंड नाग सदंतुर कारी। मनो धोम पंच बजे बिदारी सुभटं मनो डुगर मुर सार। बड बीर लुडो लिया तेग बार। लरे लाल सुर स सारंग देव। खरे खाग जोल धर सीस सेव। भरे मात सारंग खाग उबारो। तरछि मनु खाग तुरत तारो। दिखै खाग मार बैठे बीर ढोल। बरा बीर चंडी करे कीत बोल। कतर बीर सारंग तुरत केवं। छुटे सार धार मनु हुर सेव। भड़

सेन दोहु सु ओप स्रंवे। कटै तेग बेग लडै के धरेपे।
भड़ भार जुटो कटै तेग भारी। अरी खंभ केवल्लर जेत
कारी। बजाई सुरवाग भर साह बीर। उठै सीस तुटै जु
कोटै अमीर। कवी कोद पाघ सरूपी कहायो। पुन जोवनै
पात कोद सुपायो। रजा कोमड़ा जूटयौ खाग रूप।
जुटै सीस आकास सारंग जुप। हटो सींग गोड़ भुज
तेग हुंके। बिहु बाहु बाजू नथा मंड बाके। सुरतान
भान किवान सभारी। जिने आप हातीन पै खाग भारि
कटे हौद मौद पडे के पजांत रुक्क भाड़ ये तेगरा
सीरबात। खव सीग खाग बजे सर सूर। बिचू
सांक लौ तेग बाहु हैक रूर। सुर साकलौ भौकम
तेग सार। भेर सीस असुरान उतार भार। अरे सुर
मा सींग टुटौ अखंड। जटे जोगनी बावन नाय झुंड।
कमेत मनू मेग जुटंत कैसो। अरी खंभ भीमावत दोष
जैसो। सरूपी गराणावत झाल सार। अडे सुर मेछान
भोरे अठार। दिको सीग राणावत खाग दोठ। अरी
उपरां जान ज्वालस उठ। गंजे बाग रूप सर सींग गौर।
करे सुंड दतु सरगज कोर। जत ठाकर सुर सारंग
जुटे। अंग बीर भीमु मनू जान उठ। जुटे राम जुर भंज
खाग भुर। हुसे नारद रंग बेताल हुर। लरे लाल
लारन कटे ठाल ठाल। सिसोदे गहै लौत चुकै न चाल।
सरखो मेने देव जुटै सरारौ। [illegible] लहर बाव सुरखाग
भोरे। भरखी मनू सीस फारत भोरे। हजूरी मनू
मोतियां खाग हांक। दुकल मनौ भैरव बाज डाक। सर
बंद जुटो जटे राम सींग। धजा बंध खागा गुहै सार
बीग। उलटै पुलटै फुलटै अपार। जुटके लटके तुटके
सुधार। पटके हटके खटके सपुर। भटके रटके बजे तेग
भुर। बजे के गजके धजके बजार। रिजिके रिवजेके
लडके खगार॥ अजके जगके रंग केक आब। अरेके
फरेके भरे देर नाब। नरके सुरके फरके न बरब। भरे
तेग सूर कटे तात साब। बरे सूर हूर सुकेतै बिमाय

जुध बोध हमीर भारत जान ॥ कवित ॥ भजी फोज तुरकान। कट दलेरन सु कटेय। चडे तुरंग सीसोद। लार हमीर सु लटय। वरदे दोमाहन सोग। फेर कामदार सुनेन। भेसो कट धर मलोय। बीरखम खग झाड़ बेम। कमेर पतो जु ज्यो सुकर। बीरखम वर कांम दल सुमर। हमेर सोंग जगडो होवत। क्रमल नीर चढ्यो सुनर ॥१॥ दुहा। हत खग झाल हमेर सो। राखो रजपुती ह। कोठ खाग दलेल कु। मण धर मज बूतो ह ॥१॥

॥ उमेद सीघ जो ॥

॥ दुहा ॥ अजमल पाट उमेद सो। नृप बेठो नरखेत ॥ है छोगो होदवाण रो। जंगा करणो जेत ॥१॥ पाट आजम उमेद नृप। भड़ सारंग कुल भूप। पण धारी कमी ड़ पत। राजा धरम धर रूप ॥२

॥ छंद पधरी ॥ अजमाल खाट उमेद आय। सब देस उग्र पर पुन्य छाय। रला पर कीत फली उदोत। जान उमेद नृप सुर जोत। सारंग भूप रुकलिंग साय। पेहो देख सगु सवलेके पाय। धम रूप भूप लगे धियाग। अद पत उमेद नृप बेठ आग। भुपत भुपाल नृप है भुवाल। तेह करन मौज बीक्रम कृपाल। काम टान महल कीनो केतान। धरद भूप जान वेकुंठ थान। जारी पर होरप ना जराय। आरी कीच कंचन नेग अराय। हल वोसके पत बीरे हजार। जाने क नग्र जेपुर जुहार। बरछे उजाल बागन बनाय। छक रही जान केलास छाय ॥१॥ दुहा ॥ कवी बाग वरनन करे। मौकर के जीव राज। बन पईद्र खादुर बन। सब बागन सिरताज ॥१॥ छंद झंझ फाल ॥ बन बाग रूप बोचार। पपीहा करत पुकार। ज्यां मोर करत झींगोर कोयल बोलत चकोर। ज्यां सुआ सारस सार। गे भमर करत गुंजार। फनी कोयर रान फरत। ज्यां नेक पंखीय जरत। चंपा चंबेली चाख। खरम बीजोरी दाख। केते कामरू बोकेत। पिसंगाद सजल सवेत ॥१॥ दुहा ॥ समत वरस नृप चवद में। फरे लोक फरमान। कीनो हुकम सरूपकर

जुर उमेद जुवान ॥२॥ नीमे सीस सारंग नृप । अधपत तेग
उठाय । कुल नायक भडीयौ कमर । जोध लीबाडे जाय ॥ २॥
॥छंद भुजंगी॥ कसे भूप उमेद जोध फक्खर । खरन बैरी साल
कसे जु सुर । चढे भाण पानाथ छत माल साथ । हेली
बडी नाथ जोडे तेग हाथ । पना लाल बीबेल चढे धसुबीर
घन सुर सारंग चढे गहीर । चढे के पठान सय देख सेख
धरा काज सुर बढे नृप देख ॥ अठम करे फोज सरंग
उठ । जेते कुंभ खान रघुबीर जुठ । धरके लीबाडे जुरी फौज
थान । घेरे के पठान जुरे के जवान ॥२॥ दुहा ॥ सारंग भड
जुरे समर । भड़ उमेद कुल भान । खरीयंद बैरी साल खव
हे चोको होद थान ॥ २॥ छंद ब्रज नाराज॥ कठन बीर सुर
तेग बोर करि बजय । उडत खाग होत भाग रेन झार
खंडय । तुटे तुरंग जुध अंग जोग माय झुंडय । धरत सीस
लेत ईस माल रुंड मुंडय । बजंत सार श्रोन धार धारा मेघ
घुमंडय । बजत तोप दुद्र कोप गेन भोम गजय । सारंग सुर
धाट तुर काट खाग बजय । बजंत हाक बाज डाक चोसठी
चल चलं । करत सुर लेत तुर खग मध्य जु खलं । कटे तुरंग
जोध अंग जंग बीर नचंय । सारद के नारद साथ नर
हर नचय । करत जोध हौद रौद कंक वीर कटय ।
जुरे सारंग सुर जंग क्रोन रूप भटय । करत के लगंत
कंक देत भोम डारय । उरत बीर सुर हत जुर तेग झारय
मनोक सीस फल तुत तोर नाक मारय । मनो कमल रुप
भूप आहेरे अखारयं । करत मीरक सरोर बाज बीरबीर
य । निरंद भू कनीर नाथ नाज चढी नोरयं । लीये लीबार
खग झार काढ लोर गंजय । गलाम मोये दोन चीन
मार झाल भुजंय । गुलाम का दूब कसगे लरे मरे
लरवानय । सारंग के सरूप रान बांध के बखान य । लीबार
काढ लेर फेर धप रान थान य । दुने चक्कार दुभरो
सारंग लेर सचय ॥ दुहा ॥ बेरी साल चढीयो वहे । गड
लीबाडे गाम ॥ कुल नायक गाडी करण । नवखंड राखण
नाम ॥ २॥ छंद मोती दाम । चढे नृप बरीय साल नसाम

नव खंड राखन सारंग नाम। भड़ अब राखन भ्रात सुभुप। छत्र धर वीरय छ्रीन सरूप। येहु खग मार उड़ी स अपार। सिंघासन सीस पडे किहि मार। खगार न मार बडो अरि खंब। धरन मयवाड़ लयो लड़ धंब॥ येह तुरकान न और अपार। भड़ भड़ सुर गहो भुज सार। बेबे खंड नाहर रूप बिरुध। जुरे मनु भुप स सारंग जुध। कुलो धर नायक केक लभान। जुरे धर राखन नाम जुवान ॥२॥ छंद त्रोटक॥ पटके खग हातिन सीस परे। कुल नायक खंड सु दुर करे। भुज सेलन से अचकाय भले। कर धार सु भुप लीवार कले। अह जोगन धीसर बीर भले। हलकार जहां जयकार हले। बदनेस कछेर सु आप बल। दुर जोधन जुरत पाथ दल। जवानों दल तेग जवान जुरे। खल मारक जहां रण राड़ खुरे। भड़ कुंभार जुरत सार हुन। महरावन जुर पलके सुन। रघु बीर सरूप सारंग लरे। भड़ खाग खगार न मार मरे। रूप सीग कछेर सु आप लरे। पुनी जान अर तरबुज परे। दीये सीग मात अरव पत देन। मनु कुंभ क्रन जस गाज मन। मदु सीग जुधो सगताग मद। हुद हात दखाय सखाग हद। पड़पे असुरान के सीस पले। मनु भीम बचे तरबूज रुले। लख की लमें पे सग तन लसो। अर कुल बीचे अखोयात सनाम करो। भड़ भैरव सीग सउर कोल मत्र। भड़ सूर मंज रवग मात्र मल। चमनो सगतावत जुर सेरे। वर केक नहार महुर वरे। अलिटे पलटे कलटे जहं। अह जोगन नाचत मुंड जहां। वर दायक भुप लरे बिकरे ॥२॥ क्रन जेम संसार पे नाम करे। बर दायक गौड स हेल्ह वरं। जुट दे मनु कारब केक सुर। चत्र सीग क धेर की भांति धुरे। अड़ पायत वावत खाग उठे। कर नाम स सादुल जंग कर। धज बहद जादु सखाग धर। सुजनेस भरो महबीर धंड। बर दायक के कल मान बडे। भड़ सुर हार जार सजाय मरं। मर फैरन पट पु खाग उर। चत्र अंक प डाल। कुल नायक साह

उजाल कुल। भर भैर हजार दलं। हरकौ जह सूर अनेक हर। पंर पाय छित दल तुर चरं। वहवान क सौर जुटे सेरे। भर भारत भीम क्रपेण भरे। चहुवान लरे खग झाल सुर। अड़ पायत सीस भ्रमंड अर। लड़ डुंगर दोनजु आप लरे। कर भाल सत्रीस रे बाह करे। भड़ वेर सत नृप सुर भेडे। करन भनु पाय भरान जडे। कव रां कर झालस आप कर। हत केक सेव खग सीस हर। नृप सादोड़ नाक सहै नवै। अजेसै नृप कीरत काय अवै। बजरंग चक जिम सोरस पै। भहेते खग जाड़ लिगाड़ भेचै॥ दुहा॥ लीबाड़ै गाड़ लीद। भड़ सारंग खाग भेडे। दुनीयां श्रव रंग दीद। पट झर नृप कांमोड़ पत॥१॥ मेवाती घन सेन मल। दल बल धीनद सौर। आपा छाक्यो उपरा। झल खाग कर जोर॥२॥ काली पाहाड़ तोप कहा। फते लसकर ले फेर॥ हाल्यां रसा सु हालवे। गाड़ नीमच जा घेर॥३॥ सर पंद नृप उमेद सी। भूज लीनो गुध मार॥ करी मदत अंगरेज की। सारंग नृप सर ठेर॥४॥ कवित्त॥ फरै लोग फरमान। लोक कालौ हल चले। केता मार अंगरेज। सौर साहेब उभरे। अत राखो अरवो यात। जोधार तरकां खग झेले। कालग लोक जुटे कहर। अत पर नाम उबारीयो। गह जीत भुप उमेद गज। वह सौर साहेब उबारीयो॥१॥ दुहा॥ जीत खग कांबोजवर ओ नृप भुप उमेद॥ कुल नायक कांमोड़ मे। वेच गीत श्रव वेद॥१॥ कवित॥ मास अगण सुभ मलै। मतै सुद पुख सेरो लर। सोलौ समत अगणीस। वीणौ बद हरख घरौ घर। जनम रछक मजांण। लाव दुकड़ैपो पठ लार। आप होवै उण बार भा उदै। बड़ मधुनो सुभ बदे रे। मे पती जनम कुमारां मुगट। असधारी उमेद रे॥१॥ दुहा॥ औध बहुद अद सी। आतम कीधा उथाग। आदत केता दत केता दत आलवे। जोड़ न लके त्याग॥१॥ कवित॥ फागुण हवा फबे। लखे कानद बड़ लारां। ... जोड़ अतीस। सको सुणीयो जग सारा। भासज

नूर भेज । बड़ा कर आग बुलाया । ईह प्रकार अनेक । ऐसौ
कीरत सुण आया । अणपार रीज आचार अत । तुर हरक
सोभाग लीनो । उमेद सो भूप छत देण अत । कुंवर कुछ
ओछव कीयो ॥२॥ पोसाखा पारचा । आण गनीया अणपार ।
दुसाला दुकूलां । भलां बांण समत भार । मंदेला सर मंड ।
जेह जोत रद अलमा । बेच तागीया मलुगा बसन । चहुं
देसावर छे डीया । आणीया वार करवा ऊकत । हरक
वजा भाहे डीया ॥३॥ देख जो दे सोत । हेत महै राण
हीलो हुल आप उग्र उमराव । कुछ तप तेजं बैठे छत ।
रावत छक छत राह । बांह चहु देस बखाण । उघट कड़ा
द्रव आण । जौर रूपा मड़ जाणै । सर पाव जसां बणी
या सची । लेण गुण महुं गालीया । मै पतो उमेद दत
छौल मे । कवि वंद अमरो कीया ॥३॥ दुहा ॥ सजे चंवरी
भुपश्रव । सोह बैठे सरदार । सारंग नृप उमेद सो । वदन
ईद्र उण बार ॥१॥ छंद पधरी ॥ सब सवा साज बैठे
सुरछ । उमेद भुप नृप बौथौ ईद्र । वेठे चमर चत्र सिर पर
बिराज । सुर जेम तेम अंग तप तेज साज । बाठेड़ नाथ
दलेल बीर । सुरीचंद रीज सम पण सुधीर । धज बंद
बर सल सधीर । बीर ढाड उवाल बीराद बीर । यह कुंवर
मेद न बैठे सुन । मल कंत तेज मह उग्र भान । भातं सु
बठ जुजार भीर । भांत तह गुमान गुन गंभीर । काठौ
ज सीं मड़ उग्र केत । जह मडोप कैक जंग करीप जेत ।
पर संग नाथ लछमण सपुर । नरीपंद सारंग कुल बंस
नूर । रजे चंवर दुलेस रूप । भाण पे नाथ फत भात
भूप । नजे सुमर रूप बगर सुनाव । भुज रवाग कैक जीत मो
भराल ॥ आकौले धणी भैरव अटल । गजा भूप बीर दासां
गमेकल । अत पर जस खाटण मड औताड़ । लोबडी नाथ
के जीत राड़ । जंग जीत सुमर काका जवान । कनी अन
दुत भैले किवान । गज बंद गढ़ ठाकर गहीर । बाराम
वर देख्यो महण बीर । के भाव भारी मड़ कठीर । धज
बंध बीर चहु बांक धीर । धन राज लाल हुकमी सधीर ।

बेहू पास बेठ पत लाल बीर। नखदार बेठ जस राज
लार। बेसाम भ्रम मुज पे उदार। मुव बेठ तेज नर
गुनाथ भर। वरक सनक सौर भेरव सुघट। चोबदार
केक बोलत सार। अहो नेकरख करवे पुकार। पहो
पास बेठ मुगल पठान। जमादार सेख सयद जवान। गज
मृदंग घोर गायन सुगाय। बैन चत पात्र बाजा बजा
बजाय॥२॥ कवित्त॥ बदनो राव लाण बार। सकोर गुनाथ
सहाई। प्रथी राज जे पछ बेडे अत हरख बढाई। रौड
भाजर जण राहू। किवद धुतौ बढ कारण। रौड सरदेपै
राव। सुजोग अमरौ समंप। क्रीत उमेद नामण कीयो।
उरड़ कड़ भौड़ा अधक। रत दुठ चवदे दीयो॥१॥
बडु मकर मेल्यां थंबे। जबर सर साज दुसालम। अचड़
केता उमराव। तकां खुलोयण बड़ तालम। भारी मत गाड़
पत भलम। फगत पोसाक अपारां। करी जोड़ कुबेर भुप
जु रवते भंडारां। अजीत सुतन अणबार अत। दरखत
करत जु दान में। ते उमेद भुप चाड़ी तकां। जस रो
धजा जीहान में॥२॥ पुर भलम पोसाक। केता केव राव
बण कर। ऊंट तुरंग असवार। गुणी पण आप आप
आय घर। फेर कड़ा सर पेच। भरल जर तेज जुहार
आचार पत्र औच बरतौ। जग सके कर जोड़ रो। दुस
रा इंद्र कहवे दुनी। नृपत धणी कमोर रो॥३॥
॥दुहा॥ दीय दान उमेद सो। सुभ धुजावे सीस॥ देवो
चवदो हेक दन। बड़ गम ऊट बरीस॥१॥ छंद॥ समत
ओगनोस तेवीस सवंर। कर भूप उमेद सुमेद्र कर।
सुकल पक्ष मास बेसाख सर। तप चत दन गन वार भरव।
बनी बदन कीधुन आम बणी। जग नाम बत्त क्रीत
आब जगी। कितने जन कू नृप दाम करे। दुने दंड
धजा सु चढो मंदर। पतेछर कर गलोक पावन को। पती
दीन हौ लोक उपावन को। कितनो उच रंग उमेद करयो
पती नग्र आजा अब दुर पसौ। रंग गायन गाय सुगाय
रही। कितने भर नृप असीस कही। कितने किव राजन

कीत करै। सुर राज उमेद नृपाल सरै। किते कड़ासर-
पाव करे। वहे कीत वचे किव सुर वरे। अतेम्बर-चमव
सु आर अचैये। जह संत किते मुख बोल जये॥ दुहा॥
नडर सबे बहा नृपत। भड़ सारंग कुल भाण। कासगाली
जोर कर सगावत चहुवांण॥२॥ छंद भुजंगी॥ वराजे जहां
सादड़ी नाथ वीर। अहे चमर सीस ढले अमीर। फते
देल वाड़ धणी राज कैबे। दुकल खाग झाट दे जोम दैबे।
बाठ रोड़ दलेल बीरोद बीर। वरा भुप सारंग कुल
चाढ नीर। नीके राज देवी भुजा खाग तोले। वरद केत
कीव राज बोले। भर मीर मोहर धणी बेठ भारी। खाग
पातंल जीत केवार खारी। वराजे जहां भुप उमेद राव।
तन देख सत्रु अर खाय ताव। छिंद पास बेठे सबल
कुंवर। जीन भज लाज सोहे कीत सार। वहे राव के
अग्र बेठ लछन बीर। इही बिध सबे सु बेठे अमीर।
नृत कार सितार बंदे सुनंद। बजे घोर चोपर पंचे
सबद। उमेद उजाल धरा भेद ढाल। बीरद बीसाल
नृप सत्रु साल। जहां करे पातर नृत करो सकेत। जोहर
सरदा सजे हुत स्याल सेत। नृत कार भगतण नाचे
अपछर के अनुहार। कीजे अनवट बीछीया जांझर के
झनकार॥२॥ छंद॥ नृत कार स भगतण आय नचै बहे
गुमरह चातक बाल बचै। झरणाट उड़े तन झांझर को।
धर देत छड़ा पग लोर धकै। बीचीया अनवट को
बाज बहे। कंत कोकल हुल सवाय कहे। मरदंग
सुतान बजे मधुरी। सारंगी कर तार बजे सधरी। लज
हाल सु देख मुराल लजे। सरदा नृप उमेद पास
सजे। जोहर कोतीने जु तुरंग की रीझ करी। धज बंधवता
मद्दरा सधरी। किव राजन कु सनमान केत। जीत देसर
पाव करन जैत। कितने नृप कु सर पाव कर। बीर जाय सुग
बल राय बर। गज भीम तुरंग बेवस धन। जसकोन जु
जय नृप जन। अतनो मद मादे पे कीत उठे। गर जान
धणेनृप दीन जुड़ी। किते अत नेत फुकेत कहे। वहै

प्रेम सुगायन सुर बंदै | मीलन्त रंग उगत मौम घन |
जनो थस्ती तुरंग प्रवाह जने | कोत तार सतार बजाय
कर | हैक गायन सब्द सुजीव हर | कीतने ग्रंत कार
सुनार कर | सारंग फो जीत बंठ सुर | कीतनो दुर
नुप औच्छाह कर | धन तुर गबिल नीसाण धर | बहौरे
जब्द चेरीय नुप बर | पोहौ आवत ईद्र सुईद्र ईद्र पुर |
धन पाग न चावत मेल्ल गयो | लख दारयार अप
बका पलीयो || छंद भुजंगी प्रयात || देवे मंछर धाट बंदे
दवार | केते बन भाीज प्रनांये कुवार | केते बेद बेद
बीप्र बचांये | रसा रंग मेहेल सुकेत रचांये | जने ओरी
ओग बंदे सुनारी | हुई आड फाग सत्त मोह गारी | केते
चत्र धारी सुकंद सरुप | रचे ओरीयां जान बेकुंट रुप |
कराये मन मंदर नुप केत | जने पन अमर कीये फ्रन
जेत | बगीचे फेर बंदये कोट कीर | गाड़ गाट केते सुबंद
गहीर | नृप राव राज सुकत चाड़ मोर | धगा बंद जुद
लंडे सुर धोर ||१|| दुहा || करत मच कीलो रैवे | लेत
हीलोल तलाव | आवि नृप उमेद सी सारंग करे उचाव ||२||
|| छंद उधोर || के करत मच कीलोर | हल चल कलोर
हीलोर | फुली कमल के फुल वाद | सुर लेत भमर सवाद |
कमला सोभा कर कोर | ज्यां मतन रत धरत केमोर |
सगाट देख नराट | ज्यां धरक पन गट गाट | करेगा
उमेद कोम | दलम नाम सब धाट तीन | सारंग बेरोप
सात | सुनीसरन करत प्रत पाल | पन वारी ज्युं पुरघाम |
धर करे सीव को धाम | वह वर्ई है नागर वेल | सारंग
ज्यां कर सेल | हद तर तनाव हजार | रेहे राग रंग
उचार | केई लास मनु नृप कोम | भये भमर सुगंद
सुमोम | देख सारंत स्वर देव | जरे सारंग क्रतनत सेवं |
बको रख्क सारव ब्रख | तहर केफ ब्रख समल बख ज्यां
बन बाग बीसार | ज्यां पपीये करत पुकार | ज्यां मोर
करत मीमार | कोकल न बरत चकोर | ज्यां सु आसारस
सार | रेहे भमर करत गुंजार | फन कोने यह नफरेत |

जैतक पंतीय जंत। चंपा चंपेली थे चक। दाडम बीजोरे पे
रक। केतकी मरवा केत। वे घाट सुजत सुवेत। यहु सीव
गीरन मंदर सक। दल सक उमेद देक। सक री सारंग
उचार। अब करन मेद्र उचार। दीप हुकम जब कामदार
सीव मंदर साहु सुधार। सब करीय मंदर सब। पेहे
लगीय चाडीय अब। मंदर बनाय उमेद। कहे वाच चोहु
रव वेद। पुनो बंद पन प्रवाहन। उमेद उरन उछाहन।
तलाव पनव कर तत्र। पन दीघे दोनु रा पुत्र। पडे
ज्याहां सारव ग्ररव। मई बुदत सारवा ग्ररव। मंसली
चत्रीव नाय। सारंग साग्त सहाय। बर बरन के चकबक
रस रंग मोर कर राग। ज्यों दरी पाव देत हीलोर।
कम गार करत कीलोर। देवे रासु गाज प्रदोर। गअ
मत्त जत्त गन गोर। गज गोर गाट सुगाट। पुनी आय
त्रीय पज गाट। पहु गज गोर सज अमाम। भय बगत
रंभ रत भाल। गन तंबर पड पर गांव। मह उमेद नायत
उचाव। गाज तोप बज गत गोर। सुर पतीय इंद्र न सोर।
यह हस्तो नृप असवार। मुज लोया व्रद सब भार॥२॥ दुहा
यहु नृप चडे उमेद सो। मज सारंग ले भार॥ राग रंग
हद रीज वन। से हली बार सकार॥२॥ छंद मोतीदाम
चडे नृप भुप उमेद ससुर। चढीत हरोल बनाय सारंग।
तरफत जान बीज तुरंग। बनी मनु अग्र करी घर-बगज।
गाट घन घोर न तोप न गाज। करे सडीयो नर बगर
न फेर। गोरुप रगुगर पारवर गेर। गोरे नोबतं नीशान
सुगाव। रसा चड अंद्र उमेद सुराव। जवुरन तीर
बदू कन जोर। जानु गम बाजत बोलत मोर। सबे
सणगार सहेलीय सात। हरी रुमाल ग्रहीं रक हात॥ उबे
होय भाल जगीन सुओप। जडे जरी नक रोप सुजोप। हाती
नृप चमर होय होवे। दनी रमनु सारंग चीत सुबोल
मुरव। अणवद गन गोरस गट आय। सारंग नृप बके
राग चय। गज गोर के वाव सु लागन। पवी दीन
हुकम सुतोप पन। गोहरो घन बादल तोप गंज। रेन

मनु उचल-चाप रंज। गज कौर के आगल नाच गज। जन कार उडे गुमरान जम। कर हाव सुभाव अनेक कुला। भड़ देख सपागर लुर। रु देखत असमान मेडु सतर दी हुर ॥१॥ दुहा॥ नाचै पा दसो नरत स्वपात करे मन खांत॥ मानु इद्र लोक में भुप चले अजमात॥१॥

॥छंद भुजंगी प्रीयात॥ बजे गाज बाज तमासग अवाज। रसा तीन लोक बन्चे कीत राज। केते मार हो गोर चुटे न जाम। पन सोर करत उडोरे प्रमान। कोत गाज बाज सु घुरे गहीर। असे रंग राग सुऔव अमीर। कैते नूर हार करे दीप कारी। रहे कामनी रंग राग उचारी। पधारे उमेद नृप रंग मेल। सारंग वदाय लीपे नु सेहेल ॥१॥

॥दुहा॥ राग रंग रस रीत। अल पर नृप उमेद रे। गज ग्राहक अग जीत। सारंग नृप दुजो सुरेस ॥१॥ वेद च्यार नव व्या करण भाषा गगण भेद॥ सारंग सोनो सोल मे। अल मालम उमेद ॥२॥ परवो पा तोगा पी पाग वड परवो चाल परवारो पारव॥ मण घर भू कारो मालवो आचा हदे सारंग आरव ॥३॥ सत रो हर चंद सार को दत रो करन दतार। म रो सागर मे वलो गज सारंग ग्रह भार ॥४॥ रावत पर के तीर रवग कतार खेत। पग नाग पी चा पारबे। ओतो सार नर अद मेत ॥५॥

॥छंद॥ हुकमी चंद्र ग्रही खग हत। भिगर केतन के कट मन। बज मार खेत खगार बीर। चग मन मीठो केते सरीर। ते जोग तुरंग उडाय तद। मानु क गयंद आयो सुमद। कर करत भेगो सर लेत केक। भट भट बनो मनु चंद भेक। कंच र डुल ग्राहो के वाग। मल कीघो जग रग बीच भाग। लच्मन जद ग्राहो सार लंक। अरीयग ~~सारव~~ सर वीरो दाट अंक। केते सर मीचो सीस कार दबी पर कुवार नृप गाम दार। खग भार बीर रग खेत खेला। जद वदले सारंग कुवर मेल। मुंडम बत भड़ जुटे सरदार। गज ग्रहो जंग खुमाण भार। कातोर पलो पह कुवर कोप। जोहर लीघो गाम मारे सो जोप

रण नाद भार बजे रे सुरंग। वे खाग मार बाजे बरंग।
दल पत सुलार सारंग धोर। अलमाल मसौरे मेन ओर
लखमीणा मार दुब लुट लीन। फुल नायक नाहर फते कीन।
अभय कुवर जीत यह थान आय। पुनो कुवर गय धायक
मीणा मराव कार। यह धवल मंगल कर औ धाम। बोर
धायक मार लीयो पंडो भैरव हुवो वेग साथ॥२१॥
॥दुहा॥ कव राग रंग मांडे कीयो। मीणा लीना मार।
नायर कुवर नाहर नृपत। सारंग नाम समार॥२॥
॥छंद पधरी॥ लारवान रात चीतौर राज। यह थान
नृपत बैठो अराज। पुडो अर अजमल पुत्र सोय। दली
पर सोरूप कवर सौ होय। जहां लघु कुवर गात मोकल
बठाय पाट। बर रखा नृपत अज माल थाट। यह नव
रंग सर चढ़ लड़न आय। प्रथी पत नृपत कहीं जो पाय।
जीत्यौ वह अजमल गढ़ जोधार। फुल नायक साज बहे
कोवार। भाजै गोरंग दली संभार। रजवट जीत
अजमल रार। पत सर मोर देन दलस पुर। जहा
मेद पाट चले जरूर। यह खाग झल्ल जुटे अखार।
रावत जद अजमल जीत रार। असपत सापत साकर
आय। वाहर लड़ीजे खाग उआय। जुद करण भरत
बीर जुट। लख दलु मार कर लीयो लूट। पठाण मे
मद दल बल प्रमाण। आयो जु अजे दल पर उफ्याण।
बजराक माल खागंर बजार पुनो जमन रूप जुटे
पहार। जह चीतौड छोड मांडु सौ जाय। वह पातसाह
लीनो वराय। गजनी साहल सज आयो घोर। जह मांडु
पर पड़ीयो समर जोर। भुज अजे मांडु गड़ गहो
मार। सत मुरव नृप जुटे गहे सार। यह तुरंग बगग
लीबी उसार। जो पीयो हंतु साल सीस जाय। हुन
सेल साह जोदे सो होद। रन भीम बीच डसौ सौ
रोद। कोट दल अजमल फते कीन। लख दुब सम पव
दाय लीन। कीतनी पत सा मुरव कीत कीन। होय पत्र
पम रखं बाई हीम। पचीस लाखं पो प्रमाण। जद

यौ अजा जु साहजान। चुडान चलायौ नृपत साय।
पात साह लगै चुडाळ पाय। चत्र असवौ पठौ धासौ
सहाय। यह खबर नृपत चीतौड़ आय। राठौड़ हूंता
चर करता रार। मोकल सो रान लेव न समार। सुन
रानी चीन्तत लख समाचार। यह बखत अजा आवे
अवार। तब बर अजो चढ़ीयौ तुरंग। जाहंग साथे चुंडौ
करम जंग। अड़ीया भड़ मारय खग उबार। पग कंप
रड मल लीयौ पार। जोधौ पुठे कस जो जाय। मंडोवर
लाला चलि सुभाय। ईडरो नाथ जोके सु आय। यह
नृपत अजौ जुतै अकाय। ईड सो भाळ मासो उठाय।
रावत मोकल को रखी राज। अमहरं जीत कयाण साज
राज हुत गयो सारंग रीसाय। पग चर पत साके लगे
पाय। साह सुजे सुजान सुनही सार। मेदली ले हुपत
साह मार। जत दल सारंग नृप खगा जुर। लीय साह
जाके दल मार लुट। पुन जीत सारंग दल फते पाय।
नर पतीय गुप बीर दन भय। पत साह रख कहीयौ प्रमान।
सो मांगौ ही देहु जान। सारंग नृप कहीयौ सेवार
स्वार नौ कर देहु माय। कर पात साह नव मेहर कीन।
हणो पर सारंग कुसमय दीन। सारंग चड चीतौड़ साथ।
पठे यह कीयो मोहरन सुब मेय। ज़र नमे हैय चीज
उड़ लाख रान पठे सुहीन। कुलल नायक सारंगनाम
कीन। सीसोद पती देवौ जसा है। माडवौ केह पत साह
मोहै। चरव न्याल उठाय सीसोद सुर। नृप चढ़ीय मुख
सारंग नुर। खगा झालत मुजा लीनो सुरबंड। वे है सो
करे पत साहु बेहंड। पत साहु पकड़ लीयो पाय। सीसोद
मुज करीये सहाय। को पत्री तुझ कबहु न आय। तीनसे
रहे सै पीत लाख। वह पात साह मुखौ सौ आख।
कौटे नागौर ब नाय कत। सज असुर मले दल बल
सोमंत। कुल मान सुनीय सारंग केक। तन बकस उसे
बकतर सु टुक। अब पात साह मार सोमंत। खगा झा

चडे सारंग रवेत। जुटैयौ मुप सारंग जाय। सारंग प्राप लोनी गड चौडाय। कुबे लेगड़ कुमेज राव। जद पातसाह हुआ उराय। रणत मगर कीरत वत चावरजो। सारंग बात सुणे समराज। कीरत मगर सारंग गाज। उराव वाण पतसाह रक। वह रवाग मड सारंग चोबीस उंज बाल सारव। जोवर बचाय सांगा कुमार। पवी राज हाथ हव बीर छार। पुनि सांगा आग बावर भाय। पोटी पे रवावत पको मचायाय। ओके सारंग जद रवाग मार। मनु लेतो पठान सु लोथे मार। सोलंका अर टोडे रो थव। जनु लईयात सा मार जब। उपर कर ओको चडे आय। बेहैजाय जोग रवाग बजाय। असुरान मार दीने उड़ाय। जह असुर यान पर भाग जाय। सोलकंव हुत टोडे समाय। अड़ पायत जोग करी फते आय। कुल नायक शबद भड़ करवर। खुर सान कार मौलान खुर। हड़ कोप खाल पर युध होय। धव पती असुर रवाग मार चोय। निवे मुक्ष डली खगन रार। केतक मेच्छ के सीसकार सलुभ सो सीगा हुतो न सोम। घजीने वजबद के काटे नेत चीग। ले लई सलुमर आप लुर। कीतनेक भीर भाय मंडे अरवार। कर खंभ खंभ मु सुंड केक। वह तुंड मुंड द रवर अनेक। अपचरव जुल जह परत आय। पहु सूर बीर लेरवत उराय। अड़ पायत ने काम आय। नेतरे पार भाज हुत रंद। सारंग रोर काटे सुरद। दली जाय मुप सारंग दीप। जद कोचर सारंग सारंग महीप रवीज। अरणा मेसौ ओज अडग। रवाग भाग रवेच कही रवड़ग। पर तुंड जाय पत साह पास। रंग भोमी बीचे रवेले बी बीरास। बी बी वहे नव रंग हुस। फेर होय बलु को अक फास। जह बलु भारको फ्रस पजोय। हद मरद माल की फते होय। राजी होय पतसाह पैठे लरवाम। वह देरव बीबीयन की बरवान। भयो रे रवो जागाय मय। रव सभर

जीत चग कोट रूप। मेवास फते कर लीन मार। तद ग्रही मुजां सारंग तुरार। बज मार खगा खगार बीर। मुजाट हुवो खागार मीर। बज मार ढेर चीतोड बाद। अल मालिम जगनाथ राखी अरवी आद। लड़ मडत मुरव सार परत लरवं। जद महीया राव जगनाथ भुप रोस रोम वीरा रज चडीय रूप। पत साह वाग नफते पाय। याहिं नृपत कास जगनाथ आय। चीतोड ग्रही सारंग सार। यह असुर मार लीमे उतार। जगनाथ पाट मान सीग जान। कर ग्रही मेवल पे नृप केवान। मोर मेवास सुद करीय मान। जीतो सारंग नृप जगत जान चीज्या री रोपी माहा बीर। नर चोर जहां पीवेन बेर। बोरे बरस रोपी बरध। तहां देरव चोर मोगे तेरच। राय सीग राणा सत जीयो राय। तन मात देरव श्रब पाय ताव। रंग वसन गढ पर न्यो सुराण। जह मल पुरो यह नृपत जान। मु चाकर बरीयो नृपत मान। यह नृग भूप खागा उडान। पत साह संक मानी सुसर। दर परत आय मोगे सुदुर। हण मत जेम मान बजी हाक। डर ओरंग साह फर रहे डाक। अदपत मान खग वाहे अंक। कुटी मनु राग वमार लंक। मात रे पाट माहव सुमेर। जब बोया केक पत साह जेर। अबदुल बेग अजमेर आय। भड़ महा सीग असुरा भगाय। खका जद मोड़ खगा राड़। मोकीया तुरंग अबदुल माड़ रक मोम्यो ऊंढ पुर नृग आय। चगा वधो भुज लरवु उरस छाय। खगा माड़ कीमो माहव सुखंड। लेलीयो ग्रहेणा रहेत कंड। कल मान अमर के नजर कीम। दीप गाम करावड़ पटो दीन। जे सीग अमर कुवार आन। वह लीयो कुवर माहव बंचान। यह लख ढेर ले रण काज आय। सारंग पुर सब दीयो सवाय। सोले बतीस श्रब हरीम सुर। उर माहव कावर फत उर। बग्गीक ~~हरीम सुर। उर~~ रूप जु ग्राक कीर। धधाक डंग हे हिग पात वीर। लीयरन बाज माहव रक। भय तोप अबाज गोला भरक। कर कर है सुर

पुरे हेकेके। धर काज माहब कर लेडे थेक। बेहे
बीर माहब रण बाज बाज। धन देख मधु सादल गाज।
रण बाज धाव कर खाग रोस। जाहां माहब वही खाग
रोस। सुरंग नार पैरे चारन सो दुक। भड़ कीनो
माहब असुर मुक। नाहर खान गयो सुनार। दल सारंग
सुरख मुप दर। यह समें तुरंग लीनो उठाय। खाग माड़
असुर रण खेत खाय। जाड़ा बीच सांमत जुड़ो जाय।
असुरोप। खाग भर प्राग अय। गह माहब पाट सारंग
और। अथपती नमार असुर और। प्रथी नाथ सारंग
काध नोर पाय। चग धर संग्राम की कर सहाय। दल
धार सुरख परो देवाण। यह नग गाम वत रेड़ आय।
दनो पर सामंत कुवं कोर दोन। करद बीच सारंग
यह नाम कीन। कल्याण परत नाहर के बाय। राजन राज
सारंग राय। दोय करब गाम पैतो सुदैन। कर नृपत
मीठ सारंग कीन। नह लाडे पैरे सारंग कुं कडेग
खेत। चंद्रावत मोर दल समेत। राम परत हुत जुरो
सुमार। पुनी लीय चंद्रावत सरब पार। संग्राम राम
कहीजै सीसोद। हसती नृप कासयो कसी होदं। दीय
फते रोज वरे दीवाम। हेक पहुचे दुजो हे वाम।
सारंग देखण पर खंवे सम। मण धर नृप देखणी लीयर
मार। पवान हुत जद गाही सार। नृप फते राम
कर दीये नीकार। कर गहे खाग मेरू न धार। धर
नृपत जमायो भुजा भार। वब टकुं कादे देस बार। दोय
बचन कीया सारंग दुबार। प्रथी नाथ लागौ देवन
पार। हुव गहे राम समेप अधार। सारंग दलो जारा
सधीर। बीर दायक बीरदे खाग बीर। पत सारी भाय
नृप फते पाय। लख गपीतया काज नव मोहर लाय।
अवर के मुरात बुलाय आप। जद कीधो रान संग्राम
जाप। अल मालम सारंग कवत और। कैवन मुछा
बुला रख और। सारंग पाट प्रथी सीरा सोद। धर मेद
पाट भुज लीये बोद। माणज माधव के हुवा मार। दीन

छीन हुवो ओपर सरीर। बेठाय पाट मोठोज बेक। पग
धारीयो र मोने सो संक। ईसर कु कीनो नृप उठाय।
बेल करे सारंग माधव बठाय। प्रथी सीग पाट जगतेस
पुर। हुवे अमम नहो हुर कीसो पुर। मतार गढ़ लीनो
सुमार। यह नृपत दरवणीयो श्रब उडार। जावद अमल
कीनो सुजाय। यह असुर मार: दीने उठाय। सोमडा पर
झगड़ा करे सुर। रांण धर रखी धर चाड़ नुर। खांन
जादु धरा मेवार रेकोस। रावत जद धरीयो जगड़ रोस।
पटके सुहथ खाग ग्रहो पांन। खाग झाड़ पाड़ जादु
सो खान। मरहटा फोज लीनो सो मार। सादड़ी झाट
बजाय सार। जगतेस पाट जालम जोध। रन रेवत
बीच कहो कार रोध। चकारडो मार लीनो सवाय।
अधपत नृप जालम जुट आय। लीवाड़ो नग रख लीये
लुट। कुल नायक असुरन मार कुट। जावद पार झगडे
कीयो जाय। पुनो फरस धरत जीमे फते पाय। धाणा सुजड़
कहीतव सुचान। रखी सुपर धरा लुट रान। जालम पाट
अजीत आन। भल कीयो अरक जेम तेज भान। जान हु
बतीस पर छुटे जाय। अबड़ पात दे बारी जुड़े आय।
आकर रोट खाग रीठ उडाय। यह सुर केक लर
झरत आय। सता करन बेठे रंगे श्रदार। मुज ग्रहीये
अजमल गुमार। मीर कतक अमोर लीने सुमार। नरे
यंद अजे दल दीये नोकार। अजीत पाट उमेद आय।
जन सुर करन जेम तेज जोप। भके हुतंत तेज कुल राव
सुर। यह बाद करनाखवत अपुर। करेला लोक पटके
ग्रेक वान। रकतावक फोज पलटी अजान। बबरो
बंगालो रोम बंध। काबली खंधारी रोस खंध। बद
लोपां पुरब्या जेण बार। मारां अगरेजां खाग मार।
मीम चपर खागम झाट मंड। मड़ सुने राव लीनो
ग्रमंड। सीर साहेब उपर उड़ी सुंसार। अधपती उमेद
लीनो उबार। दल धार सुपसे बास दीन। धब लीयो
कीलो लाक मार चीन। जुटे सोला कोरे सुप जाय।

यह सैम भुप सब सोग आय। दादो बेरी साल ह जंग
देरव। उठाय तुरंग बेरी साल एक। भड़ जाग बेन
द्रोणा एमेक। अहुड़े बीर बीरा अरवाड़। रण खेत बी
भड़ करत राड़। हय कट केकल च कंत हुर। पड़ प्रबल
दल हपर जोर पुर। लड़ भड़ गड़ तेपग लार कीन,
कुल नायक चग्द अरवीत कीन। भड़ कीयो लोबाड़े याण
जाय। भुप रान रेंग दीना सवाय। अरव पटे चरव
रडे गाम लार। दस गाम समय दीने प्रबार। कुल
नायक मंद रगड़ ह कीन। दुवो या वोप्ता गज गाम
दीन। ध्रव बद सुंदी गजन उपर थाप। पुनी दीय
उमेद लरवनप साव। जेजे सुकार मय सबद जांन,
वेठीर अमर देरवे बमाग। कुल नायक नाहर भड़
कुमार। प्रदु मन करसन केवल अपार। नाहर कुमार
नाहर सो रूप। सोगमपत रेवड़ भागे सरूप। यह कवर
तुरंग दीने उठार। परबत पारवलमे पाहार। करकरत
कमठ उर परत सुर। हर के कवर तर भजाय हुर। चम
नेस सारंग समाह समार। भीणा सुरव गुणी हु लीये
मार। डुंगर सु खग तुटे सुदोन। कर रवागगार
भेले सुकोन। भमकंत रोस भारी सो अंग। फन सारे
गज पर बलीय जोग। भांज पठा कर-फत मरल माल
पह तोक बाग छोडे उचाल। जाहंग सांग मार-मेवे
नसीस। बपेर अंग भेजे बरीस॥२॥
॥श्री गणेशायनम॥ अथ रजपुतां का गोला रा कवीत,
तथा पीड़ावली रा दुहा। कवित। छंद लिरवते॥ अथ
श्री चीतौड़ माहाराणा जी पीड़ावली रा कवित चारण
नल जी का बाप बागेरो दे का रतन दान जी रा कहेये
ग्रथ जीमे पीडावली है जीसु लारव्यो॥ कवित॥ सूर
बापो सुघड़ खुमाण गेहद गुलु रवाग। भेटो मन
आतो महीप। सेहो साल वाणां। सोरा वल समरसी
साम कुवर ह छवी जै। भदण सी कीत रजा। भूप वैरा
त बीजै। बीर सीहग सो करण बदुं। राहप नरपत सेण

रसा| दन कर सेण दन कर फुलो| जसुंत सेण उजल सुजस ||१|| रतन सेण पुन पाल| रावर जंग पाल पचो मल| मुणज सीजे सीह| भुप भेव भीम सेण मल| मेरो गढ मंडलीक| अजे सी कुकड सी अत| अर सीह राण हमीर अज| खेतो लाखो मार खल| मोकल कुंभो राय मल साहर| पको रछ संग्रो प्रबल|| २|| रतन सीह भोज राज| उदै सी रवि उदै सो| पारस राण प्रताप, अमर सीह सुरपत सरसो| करण जगत कुल सरदार सीह सर| सुताण सीह जे सीह| अमर सीह संग्राम सी उर| जे जगत सीह अरसी जसो| भव रकलिंग सम भीम सो| महारराण भाण हीद वांण मंत्र| पंगो ज्योत सीव पम सो ||३|| गीत सलवर कोरो|| धुंडो देडीय माडू रो चालिये चढ गढ चीतोड| रावल रे घर धरा राखो रो लीध राठोड| बीजल रा रउ मल वहीया| गढ मुणी नाज जीवलोधो भाग जोधो लोह छंडे लाज||२ अजो ईडर हुंत आयो| मुलो दल मेल| कायमल जड तोड कावां| आव गो उवेल| रतन सी जाने रहयो रुवे मालम ढाल राण काढ आय रहीयो| खेत कीलो खाल| राइदर सचत्र कोट चढ| साहू सुरखण साहे| पडपा रावल कोट पडीयो बढ जुग हथ वाहे ||२|| राव घर पेस रोड राखो रवण बत खेंगार| हाम हमार मेल चाचा| मेलीया गज मार| छ पन केचा भील धाडीया| सामहर सरदार| और गढ कोट ओदछ कुम लोप कार| करसन अखंड अड कोटे| तुम्हेल अरह लजित मारव खेत माडे| तुरीयार राण तल| खस मलीयर जारत साहा उमेडे दल आज| मम रेव आमनी| लेख वीधार काज|| राणो रावत कूकर महर मालीये खग झाट| कार लोगो नहीं कर पाड| केवा लोगा झाट| बाराह पुर खग झाट वहे हवे आवु ढाल| रेसी कहर लाज ओपे पार रा रछपाल| मडर फोडा [illegible] गोरा मेलणा| सार बद पत साह| राण

रे घर चत्र कोट रारवो मध रन जरद्र माह ||१||

देवल्या री पीढ्या रो कवित|| लारवा पार मो कतर के खीम सीह सुये कम । रचि सोध बीचार तास तेज नं मभार है । सीहां जसोत हरी अरी कू मिटाय दीयो । के जंग जीते ये बचव कह रामे है । मैं गुर लाल ये प्रताप अरु प्रती सीह । नंदन को परठनु के सालम सुजा नाहे । सामंत धर दीप दलपत नीरंद कूजु के । उदल उदार चीत जहार जग जाने है ||२||

||कवित|| बाठेड़ा री पीढ़ावली रो || लारवा सुत अज मल । जीने पार सारंग जोगो । नरबंद ने कुंत नेत मांगा जगनाम धर भोगो । मान सुरत कुल मोड़ । पतो कुवरा नर पुरो । जोगी दास रकलीग । मुगमोह बत नृप सुरो । बालो पांचा कुवर कुवरा सुगट । जगधर देवल सजोपीयो । तरा सुतन मदन कवैरस तप । अखंग बाठेडे ओपीयो ||१||

||दूहा|| मान सुरत परताप मल । जोग रकलिंग सुजाण । मोहबत कल्याण देवल माह । वले सुमदन बखाण ।१

जोधपुर मसु सरदा रूपा ने हकाण बंदा कीरो । छंद रेलल|| सुर सीग सरताज । हुवो जोधाण हगामो । कस कस नाग कवक सैनस । नीरंद ओपमर धाणनामो पुगन नर हर दास । सर परबत सवलो । भोपत ओठ म मडग । पात कुबात कविर पेल । माचो सीग म हपतो । पान पोसा गुज सुवर । गोबंद गढ़ मम... धवल उजवाल सुरधर । राज पत रतलाम । रवैर व संग तेस रवां गुर । जेत सीध धण जांग दुठ दुगोली दुधर । राम सड़ी मोहण चठ नीरखी । परा वंस दैध गरा अबाड़ा जीत मालम प्रवी । सुर धीर उदे अीध ||२||

जोधपुर राज मल रा बेरा कटा की हो || छप्पय|| उदल नृप उदार । जको राजा जोधाणे । चमको राण मणाय को है राय मल सीवणे || मेह दास पंचोली । दीये रत...

मफ़र नाथ | मोटम राज कठ मोड़ | अमो अरो आदत
गंजण | कीक्रम चीत रामो विरुद | प्रसण करण पय
माल रा | कम धजा मोड़ करणा अचलो मह पत सुत
नव माल रा ||१||

कानोड़ रावतजी की पीड़ावली रो कवित || चत्र कोट
पती लाखो तोके भयो अजो पुत्र | तास पाट सारंग
दे नाम वंस मारके | जो गो नरबद नेत सीध | भाण
जगनाथ, मान सीध, म्हा सीध, सादुल कारके |
सारंग दे प्रथी सींघ पाट जगतेस छाजे | जालम
अजीत सीध मती कहु थार के | तास पाट रावत
उमेद सुत नार सीध | पीता पुत्र चिर जीव वंस मेद
पारके ||

||सलुवर री पीड़ावली रो ||कवित|| लाखा रे सुत
चुंड | कांधल रतनेस कहीजे | साईं दास खेंगार |
करन जेत सीह हीजे | मान सीम रुगनाथ | केसरी
कुंवर कहीवे | जेत सीह अर जोद | पड़सी भीम लहीवे
भवान सीध पदमेस भण | केहर तण फेर कहो |
जोण पाजोद रावत जसो | नरव सुजस छाकातहो

||भींडर का कवित|| उदे सीग अवतार | नकण उदीयापर
थंपे | तण पाट सागेस | मेछ मुगलाण कंपे | भाण
उगला मीच | मोड़ मुगलां दल भड़ीआ | हल दे पुरख
परजा पर जीवे पडीपर | सबले कीदा सरद | प्रथम जान
डुगर पुर मोकम दली मेंमार | कुंवत मले साहुर
घर | अमेर काबल अंक | जके दस देस बदीतार |
पीथल दती प्रगट | जेत ईडर गढ जीता | उमेद ज्याग
कीदा अचल | जोरी पुगो क्रीत समदा परे | तण
पार मुप कुसी आलसी | छोड़ जुग्ग राजस करे ||१||

||सादड़ी राज री पीड़ावली|| कवित|| अय मेद पाट अज
मान राज हल वदते | थापे छत्र चमर खाग धार
हुते मो रहे | तास पाट सीगा सुरताण वेदो देदो सुप |
हर दास रासो सुरताण म्हा बीर है | चंद्र सेण

सीग कीर तेस रारा सांग नृप । राअ सुरताण सोच
पनण अभो रहे । कीरत नीरद रसो वंस अवतारी
कहूं । तास पाट अजा सीव सोध रन धीर है ॥१॥

॥ सालंवत री साख रा नाम ॥ कवित्त ॥ माण अचलबल
भद्र । काग बलु ऊरद जोरावर । चंद्रसेण धन भुज
राजड़ भूपती । मकन दास मेहेस । पुठ संकर दलपती ।
सामत सत रा सगतेस रे । धर अंबर को बेजस्सा । धक
धुण चडे धके । ब्रजड़ हत वेध कतस्सा ॥२॥

॥ मोडर महाराज की पीड़ावली को दोहो ॥ साम्र माण-
पुरो रावत । मोकम अमर सुत जैत । उमेद कुसल
मोकम बीये । और हयो मद मेत ॥१॥

॥ बनेड़ा की पीडावली को दुहो ॥ भीम सुरज सुरताण
सी । सादल सय हमीर । भीम उदे संग्राम सुत । गंभीर
गुण गमीर ॥१॥

रतलाम री पीढावली रो । दुहो ॥ पंके पदम पोयल प्रकार ।
मान केहर अरी साल ॥ रतन मेहेस दल पत उदे ।
बले वले भर वीसाल ॥२॥

जोद पुर राजाजी को पीडावली रो ॥ कवित्त ॥ बीजे
सीग बगतेस अजन जसवंत गज बधी । सुर उदे
सींग माल । गंगा कांगा धज बधी । सुजो जोधो
सुपह । राव रडमल चुंडारो । वीरम सलखा नरद । भुप
तीडो छाडारो । जालण, कन्हड़, राय पाल नृप । धुहड़
आस हथान रा । तो मुजस सोहे जे चंद्र वंद । महपत
मान गुमान रा ॥१॥

सीरोही कीपीढावली रा ॥ कवित्त ॥ जग दाता जगतेस
पाट मान रे प्रतप । माहाराजा ते मान । ताम पग साल
रे प्रमाणं । अखे रा राजड़ पाट । पाट राजड़ सुरताणह
कुल माण भुप चडती कला । औप खत्रवट उजली
तण तान राव रातप । भाण दुरो मह मंडली ॥२॥
सोड़ मान रे पाट । माण गादी रण धारंग । रे
आण उदे सी पाट । भा वार उदल लख धीरम ।

लखा पत पाटै लीयौ राव री पदवी पाई। तास
पत सेह मल पाट सोबा तणो। कारण अरवद-पाडण
कली। तण तणा जण राव वैरे तपे। मान हरै महे
मंडली ॥२॥ वरो सावल जोरा सिव सीध, सीव सीध
री रा उमेद सीध ॥

अब देवल देवगढ को पीढावली ॥ कवित्त॥ लखा मोकल
खीम। हुवा राणा हीद वाणे। सुर वाघा रास सीघ।
पर खीजे मेर प्रवाणे। सीका तेजा मांडा। बड़ा रावत
बर दाई। हरी जसा परताप। हुवा राजा घर माई। अब
तार पुरख पीथल अस्या। दद खत मारी दाखजे।
जण घर आज गोपाल मल। रावत बाजी राखजे॥१
गोपाल सीगजी रा सालम सीगजी सालम सीगजी
रा सामत सीगजी पारा दीप सीगजी। तिं रा
दलपत सीगजी। या रे उदै सीग जी॥

अब डुंगर पुर श्री पीड़ावली रो दुहो॥ असुकत मल
वीर जठे। सव सारां मुख मांण। जसवंत घर कुआ
जसु। भाण उदल कुल भाण॥ कमा सेस मल आसा
करण। काथल पीथल काय। उदल गंगा गोपाल युं। राव
उदल कुल राय॥

बासवाला री पीढावली रो दुहो॥ गेप गंगा उदल
गाला। जग मल जे सी जेम॥ पातल आन हुमाण नृप।
औपे लछमण राम॥ समर कुसल अज बुध वो। भीम
वसन पथ भुप। वज मल उमेद भुवान स्या। रावल घणा
द रूप ॥१॥

कोठड़ा री पीढावली रो दुहो॥ मान सुरत परताप मल।
आन रूक तिंग सुजाण। मोहबत कल्याण दोलत मलो
वलो सुभट बखाण॥१॥

रावत जोगा जी राव रा राय सीग जी पुख मेठकायो
नाम देव मुणा खाटे जांरी पीढावली रा दुहो॥ राय
सहस मल तार वंद। बीस मरन्द लीयान। अती बल
नेन प्रताप पुनि। पवीत्र छत्री पती जान॥२॥ तर

नारायण नृपति हैं। कहा रीझे घन स्याम। मीत भक्त
जै-पालस पुनि। मोसम कुंवर गुन धाम॥ ३॥
श्री दरबार में पीछवली को जोत राम है और महे
रावत जी बड़ा सारंग देव जी री तस्वीर को
पानो है जो उपरे है रीति सु लीखाड़ो है।—
बात साह माजवी रावत अजो जो सारंग देवो
है पात साह कूं ओव रीयो तो बीन चीतोड़ राजदी
पोथी नहीं। रावता जुड़ो जी मेवाड़ रामड़ कमाड़ उप
रात बीड़ द वरे वहता पात साह माडवी मजाय ने
साम धरमो दुवा जणो थी पीडावली में मडुवा जणा
रा बेरा रावत खीघत जी ॥१६८॥

गीत:— आया दल्ल असुर देवरां ऊपर, कूरम कमधज
राम कहे। ढाहिया सीस देवालो ढहसी, दुहां देवालो
सीस ढहे॥ १॥ माल हेरा गोपाल हेरो मंढ। अंडिया
दुहुं खागा अण भंग। उतमंग साथ उतरसी अंडो।
अंडा साथ पडे उतमंग॥ २॥ स्याम सुतन पातल सुत
साझियो, निज भगतां कदमो हरनेह। देही साथ
समापा देवल। देवल सामांपा देह॥ ३॥ कुरम खेडले
कंमध मेडते मरण तणा बांध्यो सिर मोड़। सूजा
जिसा नहीं कोई सेखो। राजड़ जिसा नहीं राठौड़॥ ४॥
गीत २:— मेनधारी के सूरता पंच माथ रे चढावे
माथ गड्यो हाथ भैरो भैरव कांपरे किरंद। करौत
धारी के गात पुरो सात सिद्धा कासी नाथ पुन्न करे
प्रात पायो जसा नन्द॥ १॥ आखरा सच्चिदानंद भजे
सरां तरां ओरे। साधे हरां हेरो संभ रटिया अवसाण
उरां धार अमूं जाम अंकर रा जोड़ ओण मेने
प्रापतो - - - - - - - - अपूर्ण॥

गीत :— सगा बंस मे प्रसांत में र प्रमाणो आडरा सांगे। बीजा रण ताड़ राव दैसे निसा बीस॥ राजा ऊमे प्राचो पखां भारी पहाड़ रा रूप। धरा मूंछाड़ रा मारवाड़ रा अधीस॥१॥ सदा हो सूं तुरंगा धड़ां मिल्यां समो वडा सोभा। पंभ भाई भाई राई मडो हिंदू थान॥ बांको बड़ा मोड़ा पिलसां राई अडां बकां। ~~[illegible]~~ गुणा ग्राही बीजो जगो विजाई गुमान॥२॥ कुडिंद चंद ज्यूं कंत दैस डंद नरिंद सारीमा सामं दसा ब्रंद ऊमलां करिंद। बिंदू भाग बिलंद आणंद पाता अजाब सूं। नारिंद जे साह नंद सोभे मान नंद॥३॥ बसूधी सा मोड़ अरोड़ छत्री राणा बला पेखे पोर रखतां सचेला ऊमे देस। हेला सिंघ पातां रा रोमण तरवे तेस हींदू नामो रूप मला तेज धारियां दिनेस॥४॥

गीत :- असो कीजिये चात अखियात जग अपरा। गैमरा है मरां धार गौहे। पोल चीतोड़ रो लड़े जैमल पतो। मांड जे दली री पोल मौहे॥१॥ सातवां रहे तन खडगां खांडियो, मांडियो सुजस ताय कूंह भर भेख। अवल रे कथल तह ऊजला ओपीया। हेक सोलोद ने राठवड़ हेक॥२॥ पलटंता चित्र गढ बीह भाडा अतंब। सुतन बह डंडिया ऊजला सार। सिधुरा कंध चढिया भला सोहिया। रांका रा भीच सुर ताण रै सार॥३॥ ऊजलो कोर दस सहस अत। दत मरण जैतो अखियात राखो। साख मृतलोक सुर लोक साखो सहो। साख किव पात ससि सूर साखो॥४॥

गीत :— चंगी सहेलो बादलो भरी भादवा री चंगी। किना साबणी आभली बीज मार को सुमार॥ काजलो सावणी आभलो बीज मार को सुमार। काजलो तीज कै हेलो भारी सो भलो छै किना करतोरा झूमका सूं रलो छै कुवंर॥१॥ कला चंद को क भला भली छै

जुहार कीसी, सोहे झला झली छै क चांदणी सरूप। किना दीपावली छै क चांदणी सरूप। किना - - - छै क नकायवास की कली। ऊजली छै किना गंगाजली छै अनूप ॥२॥ कंद की डली छै न वा कुंज मे गली छै किना छांहली फली छै कुंज जिसां आम छूर। मोतयाली फली छै क चंपा कली छै मुगा नेगी फूलेल री शिशीयां गई छै कीना फूट ॥३॥ देह धारी रली छै वली छै मेहदी दसा। करां रंग रली छै निसंक सारो काजी। केर राखो पना राज सीसरी कलंगी कली। याला पंगी लाडली मिली छै मेला आज ॥४॥

गीत :- सावणड़ो :— बादल चहुं तरफ मेह बरसायो। सोहियै हियै नेह सरसायो। तकियो ताय अनंग तन तीयो, छकियो जाय दिसावर छायो ॥१॥ धण चौतरफ धरा घुमड़ारे केकी मसत होय कहकारे॥ सुजल अवन फैलियो सारे, पण आलो कद पीव पधारे ॥२॥ विपन सघन लपटी ऋतु बेली। सावण रमजे तीज सहेली। अब रहियो किम जाय अकेली। हमे कंथ कद आसी हेली ॥३॥ दपट जीव लगा रही उदासी। बय अत बाढी विरह वियासी। देखू वाट अरी सुण दासी। अब कहरी वालम कद आसी ॥४॥ धीर विचार किसी बिध धरजे। वात नेह किण मांह बिसरजे। मोतीरा कौ कर दन भरजे, साजन बिना पलक नहं सरजे॥५॥ सेजां आय निसंक पत सोसी। जो निज रूप निजर भर जोसी। गात मोड़ उर नौसर गोसी। हेली वो मोसर कद होसी ॥६॥ पीसी आय अधर रस पासी। ● कर ग्रह गाढा उरज मुसकासी। बाजो नूपुर श्रवण बजासी। आली जिका घड़ी कद आसी॥७॥ निरख रहू हिक टक नयणां सूं। बहु मनवार करू बयणा सूं। दिल मिलियो मो सुख दयणा सूं। सहचरि बेग मिला सयणा सूं ॥८॥ वी कर बाल सताव करो नै। सरब समाधू भूखण सोनै। मो पत

आय मिलीयो मोनै । तौ दू लाख दवाई तोनै ॥४॥

गीत :— अई अरोड़ा राण माला अचल, जैत खंभ अरोड़ा खलां जरै। राय हर अजीड़ा केम तोसूं रैहो चयै हरण खोड़ा नाम चरै ॥१॥ ठह लंगर पाय दुसहां करण ठांचला । खग धुव अंगला बाट रोहै । बोलतां नाम चारो मयंद बांधला । मृग हुवै पोगला जंगल मोहै ॥२॥ दल प्रबल मेल चातक अडंड डंडिया धुर कुरंभ बिहडिकां खग धारा । सांड सबल जालमर नाम चंका सुपह पंच सारंग हुवा विहडं पावं ॥३॥ साच खगा नगां दूइ वंश पीया सतन करणा धणियां अभै फतै काजा । सतामी चौरै तज मांण असगा सगा रह लगार पागेडे आन राजा ॥४॥

गीत :— चवां बेधारै जरोस तात गुणां चित चाहजादा आया पाय जादे हणू वाह रै अनूप॥ जांणू प्रदूम्न जदुनाथ रै सुहाय जादे, राय जादो दोगाला दात रै वंस रूप ॥१॥ पुरंदर जयत जंगा जीतगसा पांणा कीता नागींद रै तारवो अगाजै सधीर॥ रौजै सामंद रै औस धेस ज्यूं बधीता रेणा, कुतां मोड़ छाजै कीता नंद रै कुवार ॥२॥ ओपे पारथी रै अभै भर धनुधारी ईस । आदीत रै नंद बका छाती रै अंकाब॥ अवतारां राम पास रवी रै अधरा अंकां । सैरे सारा हूवां माला पती रै सुजाब॥३॥ लाखौ फूलाणी रै धूल धोरती जिहाम ल हो । धानो मूल पती रै गोबास तेहा धोंवा । जहो मारणी रै पूत पारखो गुणा रा जहो । सोहै रेहो सपूत सिवा रै राय सोंच॥ ४॥

गीत :- रखै रावतां हबोला दोला दे आंगला बाट रूका । ठोहै दलां फंगलां मेवाड़ आडा ठल ॥ रंभ रा रसीला सगां ढगांला बाबाक रोड़ा सोधलो बांधलो मोक लोगे बैरो साल ॥१॥ मूहारां मूछांरा मेडे धार रा पराई भोम । नरांजां मार रा रिमाधार

रा निकंद। आम बो उथाप हेखां मेवाड़ पाट रथंभ।
नौहतां पाट रा बंधे कल्याण रा नंद॥२॥ आहुंसी
बिलम्लां बेरी तूम वोले ओगे अयां। फेर हूं जलम्ला
फौजां जिहाज फैलत। झांझणी पमंगा जगां बंसरा
अदोत झाला। प्रतप्यो हजार सात्रा झूबलां पैत॥३॥
वरछां उजाला जूनो कुंवरी घड़ा रा बींद। बोलड़ा
जिहाना वाद विचाला उबार। राजहां छोगाला छात राव
वाला नेस राज। हिडोलै तोहोलै केठां पंच दे हजार

गीत :- तना तदत पबसोक बण बीद झालंर तिलक। नडर
बिच मुलक जण छरा नरखै। जर नलह रायसो
आम वाली झलक हलक सोह बाल घण मनां
हरखै॥१॥ सडक के मार अतरां गरक साज रे।
रघू घर आज रै वरण रीजै। लेख नवलां हरख
हिया परव लाज रै। छबो रत राज रै जोड़ छाजै॥२
झपट हय राज चढ़ म तन झेलियां। मठां छक
ठेलियां उदध मनडो। हेदां बिच छेया लख
रूप रंग रेलिया। बाल अल बेलिया नवल बनडो।
॥३॥ लखां मुख सुदव झड़ दीध जस लोणियां। रैणि
यां अवाग सुख लूट रसियो। बंडम आग सराहत
छबी लख बणिया। बनो मृगनैणियां हियै वसियौ॥४॥

गीत :- महाबीर बीराद प्रमजोत सूरा मले। बार जनु
कला मुख नूर बरसै। नार ईस तणी वरमाल घाली
नको। पच सुता माल वर माल परसै॥१॥ राणा
हला पलखां सुधर झाले रहै। मांण रच रोक आराण
मालै। राठौर कंठ पुरखाण उण चौसरां। रंग चौस
नको सीस रालै॥२॥ विधाता नाक वण लेख
अवरी बणी। बियां राघव करो अचल बांता। हार
ग्रीवा तणी देख झाला हिये। हार बहुरंग लिया
रही हांता॥३॥ कहे मनु हार मुख हूंत इण विध
कहै। आव रथ मीच दोवाण चरता। पोहप वरमाल
घाली नको अवछरा मोतियां तणी गल देख मरता॥४

गीत :- सुभग कमल सुरखी उरग रूप बेणी सरस।
वदन राका ससी अलक रूप अह बाल। अधप
नया अह निसा अरचत अनंत मुकट झाला वती
वरण फतमाल ॥१॥ मूंह मधु मृगान पण बिंब बिद्रुम
मलक वज्र कण रदन मुख कोकिला कांण। भूप
कन्या मुगध बेस पूजत-प्रभू। भ्रमर मन चहत कड़तल
तणो भाण ॥२॥ जुगल कर चंप सारवा पलक जगबिये
कंठ कुच कुंभ मद मत भरे काम। कला उर साम
चित चहत नर पत कुंवर। नवेली लेत छिन-छिन
हरी नाम ॥३॥ उदर रंभ पात जहूं रेख नाभी अमल
करी केहर विमल मेखला केव। बेर सत नंद
रेत राज कुल हो बरण कुंवा न्रप सुता बंदत रघु
देव ॥४॥ जंघ रंभ उलट चामीर खंभ सो जुगल।
विमल गज सूंड पीडी सुघट बेस। देल पुर नाथ
कंज भूप अन दोहिता। कंत मन चहत्त सुभिरत
हरीसी केस ॥५॥ कंज पदमणी नख चाल मद मत
करी। हरी मन खैंच धर रची निज हाथ। पाट री
छात पत मिलण न्रप पुत्रका। निस दिवस रटत धारम
पुरी नाथ ॥६॥ अंग मंजन अरग धूप केसर अगर
सुभग दीपक अरच बंद साधार। हंस गत नतन बिन
सदा पूजत हरी भूप मो बगारत फतमाल भरतार ॥७॥
ओप धर पत सधू मान पंकज असे। आपदिन
कर जसे तेज अणनूप। पूर नव रस रसिक आज
गीलो पनो। राज सिर ताज राते राज सम रूप ॥८॥
गीत :- सुरै तुकमाल हुकीम वणाई कारी गरा खांचे
वेर कारो गरां बणी लोहरै आवाज ॥ बंदूक धारतां
करां उरां झोंच महाबीर। करां झोक रायां सोच
धारतां कुबाण ॥१॥ सिधरा तणी खुलै ताली अवाजां
उतावली सुणे। धुरण सूकै हराितयां अवाज हाक
डाक। ज्वाला मुखी बाण बिधा बाखाण पाण-
रे जोध। कोता रा कुंडली कुंड बाखाण कजाक ॥२॥

पलकां रजकां ऊँ पैला दलां छूटै पाव। ऊँ गुणां
धान कां यूं टंकरधां ऊके॥ सोर गरकरवी भालै
भालो अरवौडे पछाडे सोहां। आछा तुजी भालै
भालां साधकां अचूक॥३॥ लाभकारो बाणविद्या
सो गुणां बिरदां लहो। धरा चल्ला कसीसै अछर
टेको धूत। बेवे आवधांची सोभा दीजै करनुचंद
बीजां। सोहे हातां नूकी सां आयधां तणा सूत॥४॥

गीत:- असा बिरदां धारका औपै सार रा आयुध
अंगा नीत सदा वररा अंकाव सेवा तद। चग
कोट भार रा रेवचाव अवतार छाजै। पेगी दधा
पार रा उधार रा पुरंद॥१॥ हरलरा पारखी ऊंचे
आच रा हेडाऊ हेम। बहू अनाथ रा उरा रात
रा बेबाह। साल अदतारां भालां छात रा प्रमाव
सोहै। रंदै सचोनाथ रा उछाह दोनुं राह॥२॥
वंस ऊजाला रा धरा - - - - अपूर्ण॥

श्रीगणेशाय नम: अथ श्री पत्र व्यवहार श्री बावजी
महाराज स्वरूप दास जी, श्रीमान महाराज कुमार
रत्नसिंह जी तथा महाकवि मिश्रण सूर्यमल जी:-
श्रीरामजी। श्री गणेशाय नम:। श्री सरस्वतैनम:॥
पीजहु सीतल आय। ग्रस्त ग्रीषम के मांझ अत॥
श्री गुरु भूप सुजाय। सिध दरस राजड़ चहै॥१॥
पीजहु पत्र तमाल। स्वच्छ अच्छ अहि फेन जुत॥
कोरम्पा करहु कृपाल। श्री भूप श्री भूप निज॥२॥
बेगा दरसण बगसजो। कीजे खड़ा काम॥ राजड़ री
मनुहार रा। अधिक उमेंगे आम॥३॥ श्री श्री श्री श्री
श्री हुजूर भूत॥

श्री।. श्री गणेशाय नम: श्री शारदाय नम:। अथ महाराज
बावजी श्री १०८ श्री श्री स्वरूप दास जी मे पत्र महाराज

महाराज कुमार श्री रतन सिंह जी को बनावट ||

छंद वृद्धनाराच || सुभं सुथांन राजमान श्री गुरू
बिराजहीं | समान तास की कहें गनेस सेस लाज हीं |
लखै प्रभा सुतास की सुरेस राज भाज हीं | गुनी
अनेक तास माझु खंड मंड राजहो ||१|| लिखै स्वरूप
रावरो अगम्य रूप को विदं | लिखै कदापि [illegible] रहे समीप जे पदं | अखंड हो अदंड हो विहंड पाप झुंड
को | प्रचंड तेज मंड हो असंड [illegible] र तंड को ||२||
अपार हो अधार हो विहार जक धाम के | अकार हे
उदार हो अमार भक्त राम के || अभेद हो अछेद हो
अखेद हो अनन्त के | अबिद्य हो सविद्य हो अगम्य
गम्य तन्त के ||३|| अपार रूप रावरो मै तुच्छ बुद्धि
का कहूँ | उपाव और ना लिख्यो विचार याही तें रहूँ
अलिख्य आप हो अखंड कोरि बुद्धि का लिखूं |
प्रनाम है अनेक बार सीस पांव मे रखूं ||४||

|| छंद मधुभार || इत कुसल जाथ सुभ है कृपि साथ | श्री
हरि प्रकास लखि लैयो तास | फिर सोय चीन | चित
मो नवीन | बिच पत्र दर, पा को निवेर | लिख्यो
बनाय, बुध तुच्छ भाय | मरू देस धूत, तहां गये
दूत | आये अवार कछु लगो वार | तहां अति अनंद
नृप नहीं मंद | सब राज काज है जथा साज | वे
पत्रनाथ चौथि है साथ | वह ग्रंथ आप भेजो
सिताप | मांगत मवान, भी सो अयान | इत कुसल
आप भेजो सिताब | जासो अंनद अति है अमंद
अब दया आप कीजिये याथ | अब परस देव
है एक भेव | अब लेन काज | सबले समाज |
पहुंचे समीप मो जगत दीप | अब लिखो आप | भेजो
सिताप | संवत उनीस सत एक सीस | कहि पोस
मास दसमी उजास || (संवत १९०१ पोस सुदि १०)

छंद पधरी :- स्वस्ति श्री सीतापुर सुथान | उपमा अनेक
सुत राजमान | सर्वोत पर राजत सिद्ध राज | श्री श्री

अनेक जुत धर्म पाज। गुरुदेव भूप गुन सो गरिष्ट
चाकर के नित प्रत मिष्ट इष्ट। रहते है भृत्यन को
सुभृत्य, ताको प्रनाम पद गाव प्रत्य। मै हूं सब जुत
आनंद माहि, गुरु आप कृपा हुते अघाई। यांते
प्रमान के पृष्ट पत्र, नहि मिलो आहिते चित्त अत्र।
जुत कुसल नाथ अरु भृत्य सबे। गुन होते पठये
बाग सबे। वृतांत वहां के मिले आय। आनंद बढ़े
पत्र पाय। यहां के वृतान्त सब कहा नाथ। जुत
तकत वहां पहुंचे प्रमाथ। निवरे ते लिखहुं फरनाथ।
ऐसी कछु है है कछू ख्यात। पितु मातु हुते
मेरो प्रनाम। आखिका कहूं कहूं राम राम। भारती
गिरो सूजे गिरेस। चाकर को बचे निरस देस।
भुज चार तुंत भुज जोर जोर, परनाम बचे मेरो
बहोर। सखरा निवासी कुरंग केर। जैसे को तैसो
बचे फेर। मै हूं यहां थोरे दिन बिताय। है हो
सुनाथ तव दरसे पाय। जंगल बिच छाडे कृपा
नाथ। जाको मै लिखूं अब कहा ख्यात। स्वामी
को मुरजी सोई श्रेष्ठ, कनिष्ठ कते ते होय ज्येष्ठ।
आप हो भूप दीनन दयाल। मै हूं निज किंकर हो
कृपाल। वीणा को टूटो सार तार। पंच वार ओर
भेजहुं संभार। जुत हरस रहोगे महाराज। जोगेंद्र
इंद्र राजा धिराज। संवत रु मिती विख्यात ख्यात
जाते न लिखे है ये हो बात॥

छंद त्रिभंगी:— (१) रवसो श्री राजै स्थानक भ्राजै आप
बिराजै सुख साजै। उपमा सब छाजै सुखद समाजै
पुन्य निपाजै कह काजै। जिहि चित सिरावे गुन
गन गावे कहत न आवे मन भावे। उर अंतर भावे
कह्यो न जावे होय जुडावे सुख थावे॥१॥ जय भूप
बिहारी जन सुख कारी जगत अधारी मति भारी
मेरु बलहारी रूप निहारी बुद्ध विचारी चकिहारी
जय जय अविकारी त्रिभुवन कारी माया हारी नहि

न्यारी । जय धामन धारी लह्यो न पारी हर अजवारी मत मारी ॥२॥ जय भूप अखंडा जगपति न मंडा त्रिभुवन खंडा तिन चंडा । सबसों परचंडा सूक्षम पिंडा सब गुन छंडा सुर मंडा । जय जय जम दंडा घोर प्रचंडा तन ब्रह्मंडा गुन संडा । जय जानै रंडा सब जग मंडा तो कृत सुंडा अति डंडा ॥३॥ जय व्यापक रूपा त्रिभुवन भूपा अकथ अनूपा जग रूपा । जिनके लिख रूपा सूक्षम रूपा सेस विरूपा नहि चूपा । जहं छोह न धूपा व्योम अनूपा जग दुख कूपा नहि ऊपा । जय कारन रूपा अमित स्वरूपा सुर हित रूपा जग भूपा ॥४॥ जय जय जग मंडन दुष्ट बिहंडन खल कुल खंडन सुर मंडन । जय राक्षस मुंडन अति बल चंडन दायक दंडन कृत तंडन । जय जय भुज दंडन तेज प्रचंडन नहि कव दंडन अरि मंडन । जय जय जय मुंडन धारन तुंडन भूसर मंडन निज पंडन ॥५॥ जय जय जग करता अघतम हरता त्रिभुवन भरता सुख धरता । जय जय सुर सरिता पावन करता तेज ऊपरता दुख जरता जय जय धर धरता अद्भुत चरिता भूप विचरता फिर चरता । जय पालन करता फिर संहरता वेद उचरता यह वरता ॥६॥ जय कुंज बिहारी गिरवर धारी गउबन चारी वन मारी । जय कंस संघारी अगजर मारी धेनुक मारी तिय तारी । जय जमल उखारी विषधर कारी बकमुख फारी सिसु धारी । चानूर निहारी कुवलय फारी दैत उखारी बलिहारी ॥७॥ ब्रज बाल निवारी विरह विदारी छीजत सारी दुख भारी । सुध करी न सारी रोवत न्यारी विकल विचारी ग्रह चारी । सब लाज निवारी भक्ति बिचारी हो मत भारी गिरधारी । वहं रूब सुधारी अचिरज भारी का उच्चारी बलिहारी ॥८॥ यह चरित तुम्हारा अति मति भारा पावन पारा सुर सारा । मति हीन बिचारा मैं बढ़ि हारा अगमन धारा गुन भारा । जानै चुपसाधी

रूपून लाखी जीव विरवाची अंतरयामी। तुम सबके आदी मै बिरवादी तुम सो लादी जम न्यादी॥

॥छंद मधुमार॥ सिय पुर सुधाम रतनो गुलाम जांके प्रनाम बंचे सकाम। इत कुसल धाम तुमरे प्रताप चहुत रक नर्महन विसेस। तुम दृगन धाम बाढ्यो संताप भेहु दयाल हूजे कृपाल। मो सुरवद रेन नहि चरवन चैन फीदार है हु अब सुध्य लेहु। क्रतु वृषा बीत चित भोत बीत कीजे विचार जो को करार। अब हुकम होय मै करन सोय कोउ लेन काज गज सिवक साज पहुचे हजूर लिखिये जरूर कुछ लिख्यो जाय पहुचि है जाय। मैं बुध्दि मंद मधुमार छंद बिनही विचार सुध लीजो सुधार। बिस रुद्र उन फिर होय सुन असोज मास परव कृष्ण तास तिथ रवद विचार गुरुवार धार॥ संवत १९०० असोज वीदी ६.

दोहा:— रचिव नाव को पत्र है। समाचार सब जुक नहचै सो है है निकर। अवस न जानहु उक्त॥१॥
अवस परधान को अवधि है पूरन महाराज। कोउ अब ऐहो लेन कज। सहित सवारी साज॥२॥

छंद मधुमार:— श्री गुरु सुजान सुभ श्रेष्ठ थान। जहां वसत आप त्रिहुं हरन ताप। गुरु हरी रुद्र नही दूधा लेख। उपमा अपार लिख्यो विचार। तुम विश्व रूप अरु रूप भूप। स्थूल ते स्थूल नहिं साख मूल। वार वार विहार को लहे पार। धुमृ सो हीन अंबु सो पोन। खग मीन खोज अद्भुत मनोज हो अगम रूप नहि छांह धूप। वेदहु चार नही कहे हार। से सहु महेस ब्रमा विसेस। नहिं लहो भेद धावत ससेद। उपमा अकास है तुच्छ हास। स बहु रिवसाय नहि सुर्त जाय। रेसो अनेक उपमा विसेक। नरवर स्वरूप विच ब्रज अनूप। किन्हे बिहार को गिने पार। रघुकुल दिनेस किय मनुज भेस। गज लोक बंक तेरयो निसंक

वामन वराह नर हरि जाह ऐसे अनेक किय रूप
केक। सोइ रूद्र आप जग वितय वाप। सिवपुरी
थान रावरो जान। है रतन नाम तुमरो गुलाम
जाको प्रनाम जुत सत राम। अनेक बार कुछ
ना विचार। इत कुसल नाथ तव कृपा साथ।
बहु कुसल बात तुमरी विख्यात। मै चहौं ईस निस
दिवस जोस। अरु लिखाय मन हरख पाय। रावरो
पहुँचो सुअत्र सिर किये छत्र पढ़ पढ़ विचित्र।
आय है पत्र फिर करो छत्र। अभिलास यहु जो
रहे देहु। दरस को आस संग रहत स्वास। जाऊ
है भाग मिटै है अभाग। देहुगे आप सब मिटहि
ताप। इन्दौर जान है सब समान। वह दूत आय
कछु कह सुनाय। जो दूष होय सब लिख्यो सोय
प्रति मोर मन्द मधुभार छन्द। मै अगुन छुद्र तुम
गुन समुद्र संवत अठार नव आन धार। मिती
प्रमान मृगसर विचार विध सुक्रवार त्रिय दस
विचार॥ छंद माया॥ सिद्ध श्रीयं श्री गुरु रूपं शुभ
धामं। द्वंद्वातीत शुद्ध स्वरूपं सुख धामं। आद
न अंत न मध्य दिगंत गुन धाम। गगनाकार जगत
अधार निहकामं। राग न द्वेस सृष्टि नरेस विश्वेसं
पार न लेसं वेद गनेस अरु सेसं। सुक्षम स्थूलं
साख न मूलं निज रूपं। बाल न वृद्ध पूरन
सिद्ध अनूपं। तत्व विचारी अतिमत भारी अवि-
कारी त्रिपुर विहारी विधिक स्वारी त्रिपुरारी। रसन
बिचारी लहै न पारी दुपधारी उपमा धारी मो मत
हारो बलि हारो॥ छंद मोती दाम॥ विदा किय रूप
उतै जुत चैन मनं वच काय हजूर हि लेन। भये
इत आवन शुभियत बात। भई तन खेद सुजान
हु तात। लिखे अरजी न धरे चित धीर बनो हम
औ अते तकसीर। रको फुरमान लयो सिर धार।
लह्यो इत कूं अत आनंद चार। अगे बिनती लिख

तीरथ मालम कोन। असाढ़ हो आवन अयसु दीन।
कृपा दृग धार अहो मम नाथ। स्वयं कर लेख्य आनं
साथ। मिले उत आवन अच्छर जोय॥ हमं जुत
सेवक हाजर होय। दोहा॥ दुक पर आठरू नयन तिय
संवत यहै सुजान (१८ ए३)। बिच असाढ़ की वम्र वि
पड़िव तिथ परवान॥१॥ परम पुरुष करुना प्रकत। धरम
सील गुन धाम। दीन राम पति दीन को। पहुंचे बहुत
प्रनाम॥२॥ जे निज सेवक रावरे। ते सब सुमति
अगार। उन सबसा मेरो बँचे, जथा जोग सत्कार
छंद पधरी:- सरस्वती श्री श्री जुत सर्व जग। उपमा
अनेक गुर वसत तत्र। पाऊ न पार बरनत अपार।
बुधि तुच्छ मोर जानि विचार। तो हु कछु करिहो मत
प्रमान। जाहर उपमा कछु जगत जान। तुम होउ
दुख दलन हेत भव त्रास मिटावन अभय देत। हु
गुर बिच मोरे भेद नाहि। मन मोर दुधा बिच नहि
समाहि। यते जो कहूं सो सुनिये तात। बिच वेद
स्मृति के है विख्यात। अज्ञान तिमिर पर भानु रूप
बैराट क सूक्ष्म हो स्वरूप। नहि बुद्ध शब्द को
जहां थाह लाधे न कबू जात अलाह। पर पक्ष
निवासी धड़त न घाट खग-चर जलचर को अलखवा
यहि भांति लिखन तुमरो स्वरूप नहि रंग न रेख
न गुन अनूप। ब्रह्मांड अंड माया विकार जाके
अधार तुम निर विकार। ऐसो अनेक उपमा अपा
नहि जाय लखि मन रहे हार। तुम हो अनंत को
लहे अंत। पावेन अंत जाके अनंत। उत कुसल ना
तुमरे प्रताप नित रहो निरामय रूप आप। सिवरा
बताये एक पग लखि ताहि भयो मन अति विचि
तन ताप सुनी जात अधीर। मन करत महा चिंत
सरीर। अब कुसल सुनावहु वेग नाथ। सुन होय
मोर मन अति सनाथ। चाकर को चाकर रतन
नाम। जाके अनेक पहुंचे प्रनाम। सिय पुरी तुम

यह विनय पत्र। बांचिये सुचकर कृपा अत्र। दरसन
कज लोयन करत रार। जातें मै लिख्यो है पत्र हार।
लीजै सुध दीजै दरस देव। जानत सब मन के
आप भेव। संवत आगरन न्यानु जान। भादौ विद
खष्ठी शुक्र भान॥ दोहा:— श्री गुर मेरे भूप हो।
मे हू भूप तुम्हार। जातें कछु लिखत न बने, कीजै
आप विचार॥ सोरठा — पद रज करन प्रवेस।
तारक अघगत भ्रम तिमिर। श्री गुर चरन दिनेस।
मन सरोज प्रफुलित मुदित॥१॥ छंद मोतीदाम:—
स्वसतिय श्री शुभ नग्र सुथान। बने सब ओपम जोग
विधान॥ महा जग ओपमता सब जोग। पुरंदर आलय
रूप प्रयोग। इते सब संजुत राजयमान। विधाविध
राज श्री पंस बखान। श्रीम सतीम कवे अरवु लखाय
गुरु परमातम आतम पाय। गुन सुख आगार देव
दयाल। प्रत दिन दिन दीनन के प्रतिपाल। नव निध
अष्ट सिधि अनुमान। सदा पद पंकज आश्रय जान।
भवापति संभव संतन रूप। स्वयं परमातम जै गुर भूप।
नहीं हित बैर न सोच समाज। नहीं गुन औगुन
कामन काज। नरंग न रूप न रास न रेह। न साल
न संवत रैन न देह। अखंडत तेज प्रकास अनूप।
स्वयं परमातम जै गुर भूप॥ न आदि न अंत न
पार न वार। अनादि अनामय ज्योति अपार। अदेह
अरेह अधाम अनाम निरासय आसय क्रोध न काम
थर चर व्यापक एक हो रूप। स्वयं परमातम जै गुर
भूप। न आदि न मध्य न अन्त कहाय सदा मगना
नंद एक सुभाय। नहीं बहु बातल मूंक न होय। नहीं
गुन दोष जितं तत जोय। किये कोउ पार परे
भव कूप। स्वयं परमातम जै गुर भूप। नहीं कुछ पाप
न पुन्य लखाय। कहूं नाहि जात न पात जनाय।
न तात न मात न भ्रात न भाम नहीं दुख औ सुख
ठौर न ठाम॥ नहीं तप सीतल छांह न धूप। स्वयं

परमातम जै गुर श्रूप। नहीं छल छद्र न मोह ममत्व।
त्रिय गुन भास व तेज न तत्व। अगोचर गोचर येह
न गेह अव्यापक रूप न रेह। नहीं सुख औ पत
जाग्रत श्रूप। स्वयं परमातम जै गुर श्रूप। नहीं बुद्ध
बाल न जोवन वृद्ध। नहीं लघु दीरघ तोप प्रसिद्ध।
अजं अवन्यासिय रूप अनाद पर पुरसोतम जोत
प्रसाद। दस दिस भासत तेज सरूप। स्वयं परमातम
जै गुर श्रूप। अजन्म न जन्म असाध असंग
पियास न त्रास प्रकास प्रसंग। न सत्र न मित्र न
संक न रोग जपादिक जोह न जाग न जोग।
सुर नर नाग प्रकास सरूप। स्वयं परमातम जै
गुर श्रूप। पदत्रान को उरमो उर ध्यान जुग जुग
को निज चाकर जान। गुर परताप न नाम न लेस
तऊ जग मे रतनो परवेस। पनो उन पायन को
अप्रमान। निसा भ्रम ताहि मिटावन भान। हजूर
उते पवचार प्रवीन। उते अरजी नहि मालम कीन।
बनो हमते अतही घर तीर क्षमा करीये हरिये तक
सीर। बड़ नरता सहिते उर धार। कहे कवलोक
रु वेद विचार। कदाचित पुत अपुत हि जाय। पिता
अपिता कबहू नहि होय। उर बड मे सुरन बोलन
आह। गुना कर काक हैवें चकुचाह। श्रीयं जुत
देव दयाल हजूर। सदा सम दुख गुन दच दूर।
तिही लग सेवक की अरजी व हुवे इम मामलते
सदईव। दृग त्रय आतुर हैं अत दीन। बने अजके
बिसराम न लीन। पधारन को अत धार प्रयोग
भले ~~इनको~~ इनको करिये सुख भोग। मिलें अब
जो इतको प्रयोग भले इनको करिये सुख भोग
मिले अब जो उतको फुरमान। हित जुत आदर
ते मन आन। रतु अरु मास तिथी दिन सोय।
हय जुत विप्रस हाजर होय। अठारह से पर नव
यकीन यहे गिनती कर संवत कीन। (१८०७) मिती

यहु अक्षय ते बुधवार। सित पख श्रावन दोज सम्हार॥ सोरठा:— कथां बिगाड़ी केक, पर निमत बांटी परो। उपमा रहीन एक। कवण लिखू जीभे कहे॥ छंद मोती दाम:— सिधं श्रीय देवगढ़ सुभथान अनेक सुओपम राजय मान। श्रियं गुत कोऊ निवास स्वरूप। भुवं जन भूपन के सिर भूप। नहीं गुन दोषरू रूपन रेख नहीं लिखवे महु है न अलेख। नहीं कछु जामरू जान। नहीं कछु कारन धारन ध्याज। नहीं सुख दुःख रू जोग विजोग। नहीं कछु भोग अरोग न रोग। सदा दिन रात हि स्वरूप। गुरू परमातम आतम रूप। कहा उपमा बरनों बहु भाय। धराधर संकर ते न कहाय। कृपा निज आपहु ते जु महंत। इते निस द्योस अनंद रहंत। यहां सब आपहु के ज गुलाम। चहे सुभ रावरि आछहु जाम॥ किहो विध आखय नैन लहे न। लखै पद को तब पावहि चैन। लिख्यो फुरमान इतेजु हुजूर। असाढ़ पधारन काज जरूर॥

दोहा:— वणी जरूर पधारसी, प्यास नयण भरपूर।
आगम मास असाढ़ के, हाजर रूप हजूर॥१॥
(१८७२) संवत एक रव आठ सत, नव पर दोय निवास।
पुनं ग्यारस ऊजास परव, मती तास मधु मास॥२॥
जो निज सेवक रावरे, ते सब सुमति अगार।
तिन सबसों मेरो बंचे, जथा जोग्य सतकार॥३॥

छंद मोती दाम:— सीध श्रिय गढ़ देव सुथान। बिराजत श्री गुर रूप निधान। लिखे उपमा अब केतिक नाथ न आवत सेसहु ते गुन गाथ॥ हरी गुर रूप दुहू तुम एक। तऊ उनते तुम हो वितरेक। महा मद मोह तमं तिहि काज। दिवाकर तद्दस बैन बिराज। गुरु पद पंकज आरज पत्र। लखावत नग्र मसू दहि तत्र। दिवाकर पुत्रिय दास दयाल। तिन्हे प्रति लेखक भूप कंगाल। गुरु चरनं बरनं स प्रमान। सत संत दंडवतं सुनमान। कृपा निज

आपहु के इह ओर। बंधे निसवासर चैन बहोर। कृपा निधा त्यों हमतें दिन रात। चहै चित राउरि ही कुसलात। दया कर रावर लेखक पत्र लयो सिर मान भयो सुख अत्र। इति उपमा हमको दई तात। भई यह वेद विरोधक बात। गुरु सिस तो कह ईश्वर रूप। गुरु सिख उपमा नाहिं अनूप। रहै निज रच्छ करे दुति आन। जुग तिय ज्यों जुग अक्खर जान। रहे चित चैन कृपा हरि लास। सियापुर आवन सावन मास। इके पर आठ सु अंकित कीन। नवत्रिय तापर संवत दीन (१८५३) परवं सुध ज्येष्ठ सुभ तीय जान। तिथी पुन वासर भौमि प्रमान॥

दोहा:- श्री कृपाल गुरु ईस सम। धर्म सील सुख धाम। किंकर निज पद रत्न को। पहुंच बहुत प्रनाम। धिन धिन पत कुसलात सब। चाहत रावरि तात। यहां कृपा निज आपके रहहि चैन दिन रात॥

छंद मोती दाम:- सुभ श्रिय श्री गुरु भूप सुजान। तमं अघनास भयंकर आन। सुभा सम ज्ञान सु केरव वृंद। तिन्हे सुख दायक पूरन चंद। कहूं निस मूद्रित सज्जन कंज। प्रकास कहो तिन के मन रंज। जहां नहिं ज्ञान रु भक्ति विराग। बिनां त्रिहुं कुम्भित है जग बाग। महा तरु चंपक रूपक विंद। तिहां नहि मोलत भूप मलिंद। यहै जग घोर समुद्र अथाह। गुरु पद पंकज भीम मलाह। कै अ मत पारकंड है गज ईंद। तिन्हे खय कारक भूप मृगिंद। यहै चित मो सठ हारिक रूप। गुरु वच बाडव अग्नि अनूप। गुरु पद पीठक सेव सकाम। रतन्न सुनाम सियापुर धाम। इहां सब आनंद आप प्रताप। त्रिह मिटगी उर अंतर ताप। दयाकर दासन को निज पत्र। दया पठ मो चित मोर विचित्र। मिलो रतनावलि आधिय आय। दई सोइ जीवन राम दिखाय। पे हूं उत आवन को चितचार

किमि तुम मादव अंत विचार। मिलै यह पूरन पोषिय नाथ। नसो यह दुरजन के फिर हाथ। यदो सिर भूषन श्री गुरु देव भयो सिर किंकर उद्द सेव। रहे दुइ कोसवकि चिह्न पत्र। लिखे परमान पठोय है तत्र। रजं मय भेद जेयो लघु नाम। पदं प्रत फोरचहिमा गुरु धाम। किया हय वहन आयपवेस समै पर वेजुय ग्रंथि विसेस। अजा हित जो लिख हो महाराज। सोई सब पूरन होइहि काज। महा द्विज पंडित राम निवास वन्वे तिनको पद वंदन मोर। करौ विनती तुव और बहोर जितावहु श्री गुरु को सुध मोर। यही बिनवों सिजराज बहोर। मिती विद श्रावन ग्यारस सुध्ध। रवि दिन संवत सो अविरुध्ध॥ दोहा॥ मे पावकर उन चरन कौ, सोभित सहित प्रवाल। वहे लाल जुत ध्यान सौं, रहत अभय तिहुं काल॥१॥ लगो दृगन पँहे लालसा, अद्भुत अधिक अनूप। अवध अंत निरखहि अवस, श्री नरनागर भूप॥२॥ दरसन के दृग दुसह दुख, पावस करत प्रलाप। अब इनको अंजन अवस, आय मिलो जब आप॥३॥ श्री गुर लीजे नृप सहित। मन इच्छा मनु हार। प्रीति सहित नित प्रत प्रगट। बन्यो जगत व्यवहार॥४॥ छंद तोमर॥ सुभधाम श्री सुख कंद जहि राज श्री गुरु वेद। तिम हार पूरन चंद त्रिय ताप होत सुमंद। मत के रवं पर गास लखि जाहि होत हुलास। वचनो सुधा वरषाय निज किंकर श्रुति पाय। किय सुध्ध बुध्धि असुध्द बहु कीन आपन सध्द। उड मन्न के विंद अन्न तिनको न धरत मन्न। चहु फेर हेर दिगन्त दिस आय राज महन्त। उर दास के सु प्रकास किय आपने हरि गास। सियपाल ते लघु दास निस दोस रक्कहि आस। तुमरो गुल्म

नकाम गुनिये सुरलो नाम। बंचिये प्रनाम अनेक
लघु दास को हित देख। प्रिय प्रीति का परवान सुत
दास आपज जान। अति मोद मो मन मोर लखि
चंद होत चकोर। लिय ससि सो सरधार बहु
वार मे गयवार। इत है सबे जित हसे मनु पाय
होत सुदेसे। छंद मधुभार ॥ उत हरि प्रकास किन्हो
विकास। लखि भयो चैन कमलिखूँ बैन। वेगो
लिखाय भेजिहूँ ताय सुचि पत्र अंक जोरे निसंक
है सकल सुच्छ नाहिन विरुद्ध रसिया गोविंद
पहुँचे पबन्ध। उतराय उत्त भेजिये इत्त। रवि
सुता दास इत दरस आस। जिनसो प्रनाम जित
लिखिय नाम। अरु विनय पत्र पहुँचे सुतत्र। द्विज
राम वास जाको हुलास। सब साथ दूत फोंचि है पूत
सब बरत मग्न है जथा स्थान। मक देस दूतनहि
फिरे पूत। संवत उनीस अरु एक ईस कार्तिक
सुलच्छ वहि स्वेत पच्छ॥ दोहा:— दरसण करजे
दयाल, दीजे रतना रो दरस। कन्हो श्री गुर काल
बसरीयां ज्युं कर बेण। बहसो ब्याज विसेस दिन
बीत्यां उण रो दुसह। विणवुं अरजो बेस, रण किम
भूले रतन सो। महि पत खत मनुहार। श्री गुरु जुत
लीजो सरस। जोहर जथा जुहार नित प्रत हित
हुतां निरख॥ छंद मधुभार॥ सुभ श्रेष्ठ थान
श्री गुर सुजान उपमा अनेक कविन किते क।
कीनी खराब दीन रन फाब जासू न और
नाहिं लिखो जोर। आपसे आप त्रिय हरन ताप।
निज बोध रूप सोचे स्वरूप। गुन के उदार को
लहे पार ज्ञानी गुनेस ध्यानी महेस। दानी सुरेस
बानी फनेस। ऐसो अनेक मैं लिखू केक। तुम स्वयं
रूप उपमा अनूप देखिसे अगाध धी सो असाध
मति तुच्छ मोर कहां लिखू ओर। सुभ कमी हीन
सदगुन विहीन। दास को दास पद पीठ आस। कब

धरों सीस हे हो सईस। अब दरस आस नित करत दास। दीजिये अग्या कीजिये पवित्र। निज करज अंद नीती निसब्द। पहुंचो सु आय सिर लयो धाय। नैनन लगाय पद हरख पाय। हाजर हुलास पहुंची हे पास। दिन कछुक बीच हे है नगीच। दीजियो आय मैय करज धाय। संवत विख्यात नव आठ जात आसाढ़ मास विच दरस आस। पत्रिका प्रसिद्ध छन्द भयो सिद्ध सुभ पक्ष सुम्र ये महा अम्र।

दोहा:- श्री श्री श्री जुत थान, राजत श्री गुर भूप जहां। जाको अमित प्रनाम, बुधिवान कैसो करे। भूप जुगो जुग ईस हो हुं जुग जुग रवाना जाद। रमा पती सूं रात दिन, करू करू अतिवाद। धणी और धारयो नहीं। आप धणी हो आद। रात दिना ये रत नियो, जाहर रवाना जाद॥ छंद नग स्वरूपणी

सुभं श्रीयं सुथानकं बने अनेक बानकं। अनेकश्री अलंकृत अनेक उतः आवृतं। अनेक रूप रुद पंरु रूकतें अनेकयं। अनेक रत्न आकरं अनेक पाप मोचनं लिखों कहा मे नाथ ज्यूं लहेन रसन गाथ ज्यूं। समान आप आप हो त्रिकाल मे अपाप हो। असंक रत्न हे यही रहीन लाल ताज को। सिया पुरी सुथान ते सुदास भाव पालते। दरसान दास रत्न के प्रनाम कोरि जल के। सुर्म सु सुर्भि सोय आपके कही सुगाथ गाय के। अनंद पाहिते बढ़यो महान मोद सू मढ़यो। यहां गुलाम रावरे भयो वियोग बावरे। दयाल बीनती इतो लिखो न जाय है जितो। पदार बिंद ध्यान मे रहे अज्ञान ज्ञान में॥ जबे प्रतच्छ जोय है, तबे कृतार्थ होय है। सुदूत आप पास है सो आयबे को आस है।

दोहा:- श्री गुर भूप वियोग तें, श्रवन नेग अति दुरव। कुसल सुनेगे रावरो, दरस लहे अति सुरव। कृपा निध के मिलन कूं, उते दया निध आय।

इन दोऊ निश्चे के ~~स~~ स्नान को, रहो सुचित चित्त चाय। स्वस्ती श्री संजुत सदा, लिख लिख हूंत बणाय। स्वामी दास स्वरूप को। पहुंचे अरजी पांव।

छन्द मधुभार।— श्री गुरु प्रताप गिहूं मिटी ताप। यह देह ब्याधि जाको न आधि। पेले तो अनित्य मे सदा नित्य। अव्यक्त रूप मेरो स्वरूप। आतम अखंड नहि खंड बंड। ब्रह्मांड पूर सोइ रह्यो नूर। जा बिन लिखाय सो कोन जाय। ऐसो दिखाय जब कहां हाय। नहि देह सांच कहां रोग आंच। यहू अवधि पाय जेहै बिलाय। कहा लिखूं येव नहि हलत भेव। माया अपार सारो संसार। जांके ~~चरि~~ चरित्र अहर विचित्र। कर कृपा प्यार कीजो संभार। दासानुदास एक दरस आस। कछु लिख्यो भाल हो हो कृपाल। संवत अठार छन्नू विचार है कार्ति मास छद लिखन आस।

श्री महाराज कुमार ज्या लिखित सिंह चतुर्भुज जेन।

छन्द नगस्वरूपणी।— सुभ श्रियं सुथान है बिराज्य मान भान है। कहूं कहा मै ओपमा न अन्यवस्तु है समा। अखंड मंड जक्त के विलास हो विरक्त के अनेक रूप एक हो रु एक के अनेक हो। अनेक खोज हारिगे न रूप लाधि पारगे। कहे महेस सेस रु सनकादि ओ दुजेस जू। न पाइ काहु ने लह्यो अलेहु नाम ही कह्यो। सोही स्वरूप आप हो सुजान हीन जाय हो। कहे पुकार वेद यूं लख्यो न जाहि भेद यूं। गुरू हरी न दोय ■ है पुकार सास्त्र यू कहे। येही विचार मे लिख्यो न कूछ याहि मे चख्यो। यहां गुरु प्रताप ते है दूर तीन तापते। अनंद जुक्त है सबै अत्यंत होयगो जबै। पदार बिंद भोर हैं पराग सो लपेटि है। दरस्स लाभ ...ई के संजोग य अध्याय के। जही किया यूं होयगी

सोदके सहाल खोयगो। उदे नसीब सायं है या
नाथ आय हाथ है। दयाल बीनती दुतो दरस दीजिये
मिती। छन्द तोमर।— सुभ सिध्द स्थान क सुध
जोहि रजत उज्वल बुध। सिधराज श्री गुर श्रूप
उपमान रहित अनूप। तुम अखिल श्रूप अनंत को
लहै थाह न अंत। देवाधि देव दिनेस सब आद
अंत हि सेस। यहि भांत उपमा क कहा लिखू
नाथ अनेक। याहिते लहि विश्राम बुध होन मे
गुम धाम। इत रतन दासन दास मिन लेहु
चाकर खास। गुर पाँय प्रत परनाम अनेक बार
सकाम। चित दरस की अभि लास नहिं रुक लाखि
न लाख। अब होय है बेदार मम भाग चरन निहार।
मो अत्र ते परयान मध्य हूत पत्र विधान। गुन
धाम गनपत वद ता नाम प्रकृति भेद। तुम लिखे
नाथ उधार तिहि लिखे उलट विचार। ता पृषृ
खबर न पाय अति मोर मन घबराय। अब सुनो
नाथ खुसाल तब बहुत होहु निहाल। अति तुरा
आनद पत्र लिख पठहु स्वामी अत्र। उत आपको
आराम इत सेवे सब आराम। यहां सब निरामय
नाथ कुछ कृपा तुमरी साथ। अब सुनत मोर प्रयाण
कुन्धीर और निदान। उत गयो धावन एक सब
तेर आवहि देख। जा प्रष्ट मेरो कूँच तहाँ गये
लिखिहू पूंच। कछु काम मोरे नाम ले लिखियो
समझ सु गुलाम। संवत अठानू नाथ मगसर मिती
विख्यात (१८९८)। तिथी तीज है बुध वार डंडौत
बार बार॥ छंद मोती दाम॥ सरो सुध श्री गुर श्रूप
दयाल। सुधारस के सु सिरोमनि ताल। लिखो उप
मान अनेक विचार। पको मन मोर पावत पार।
उरे गुर बीच न भेद कहाय। पुराण रु वेद श्रुती
अस गाय। हुवे मुख जीभ अनंत अहीव। गुरु
महीमा नहि पावत भेव। नहीं कछु रूपन रंग न

रेख। नही कछु देहन गेह न भेष। अनंत अपार अभेव अलेख। अहो निसि गावत सारद सेस। नमो नरकार अकार अजीप। घटं घट व्यापक स्वत्य सुदीप। नमो वयराट नमो लघु रूप। नमो मध आदर अंत अनूप। नमो सब जगत संघारन हार। नमो सब कारन रूप बिहार। नमो दस कंधर तेरन केध। नमो हरना कुस कंस निकंद। नमो मरव सूकर सिंघ स्वरूप नमो हरि कच्छप रूप अनूप। नमो धुर पोइय भेटन हार। नमो ब्रज गोपिन संग विहार। नमो अद्वैत अखंड अपार। चव मुख ईस न पावत पार। महा लघु रूप न लेखय जात। नहीं पितु मात न जात न भ्रात॥ छंद भेरा स्व रूपणी॥ गुरु कृपा गरी रहे तें यहां सबै अनंद हैं। सुरूद सुपुत्र आपके निकंदली न ताप के। लिखे जु आप का दिनो भेया निहाल मै घनो। दयाल पत्र दीजीये महा विपत्त छीजिये। अनंद आपके लिखो हमार पै कृपा रखो। कबूक भाग जागि है पधार विंद लागि है। त्रिविद ताप मेटि हैं दयाल नैन भेटि हैं, रही सुनेत्र भालसा दरस की सु लालसा। यहां सेगव भूप के अनेक रंग रूप के। महा प्रताप मानिये न सुनन पाहि जानिये। वन्के महा समरवं किये सु जुध पारथं। भरत सार ग्रंथ है सुनाम ताहि को कहै। विदेस विप्र जे भैन सुराज भूप इहां सुने। महत कीजिये मनं अवे सु अग आवनं॥ गीत छंद!— दुम जुग कर जोड़ करां इक अरजी भल श्रुत दे सुणजे अग भूप। जिम बणियां दरसण बगसण कज सिव हर तणो उपल सरूप॥१॥ जाको सको आप गुण जाणां। नर तरण कज दयाल निध। महेर काज बण्यां सुर धरिया। बेडा पांहण तणो स विध॥२॥ रहीया रूकण ठोड़ अचल। ... बीय मुतलब रे काज। अब

दोदर दयण आसाणो। जबरो सत्मट बण्या जिहाजोर
संग करज जी कान हमलियो। मुरा जद कहियां
स्वभाव। दरसण रुपण बण्या दुदावत। नरा तन्ल
प्रवर रौ नाव॥४॥ दोहा:- संवत अठारे सहस।
आठ दई पर अखू। भादु परव उजल बहुरि। तिथ
चवदस मन सूखू॥ जय जय जमुना रवि सुता।
जय जय जमुना दास। उनस परस जल नास अघ।
आप दरस अघनास॥

—— x ——

॥ श्री गणेशाय नमः॥

अथ भीरव जन की बावनी प्रारंभ:— ॐ कारजु
अपार आदिप्रभु अनादि जगत गुरु अति अनंद
सुख कंद द्वंद दुख हरन सेव सुर। सकल रंग
सरवंग अंग सु अनंग अमित मिती दीनबंधु।
सुख सीधूं गंध कर परम विमला मती। पुव
नायक नायक त्रिपुर बुधी दायक बरनन करन। इमि
वदत भीरव जन जग विदित नमो देव अशरणशरण।
नमो परम गुरु चरण शरण तिहो करन बुध्दि वर। अति
प्रवीन गुन लीन दीन पर परम दया कर। गति गुणज्ञ
बुध्दि प्रज्ञ अज्ञ मति कहा बखानत। उदधि अथाह
कथाह कहो कैसे कोऊ आनत। वे अन उपम
सम अगम कहो उपमा उपगाहि। गीधा कछुक
बखानत भीरव जन संत दास सत गुरु कृपा॥२॥
मम मति तुच्छ विचारि संत मति हार हरन चित।
लहे हीर कन हेम गहे को लोह जानि मीत पी
पीयूस। रस हेम उरस रस लत कौन मुरव गंगाजल
अवगाहि। कूप जल कौन चाही चरव लघु दीरघ

निर्गुण गुण ही मति तृण मान हो बुद्धि बहू, तिन
प्रसाद मन भीरव जन कहो कछु आज्ञा बहू ॥३॥
सिन्धु नयन बिन जात सबलतो छन अस राजन। जुगती
बिना नहीं रहत रहत कंचन के भजन। ज्यों उडिजात
कपूर चपल सुधाम अनरंगम। रहत नाहीं बहु भांति
मिरिच संपुट बिन संगम। ज्यों हीरो हीरी अनंत
नेकु कहीं चलि जाई है कांचे भाजन भीरव जन ज्ञान
नाहीं ठहराइ है ॥४॥ ध्रुव प्रहलाद पुनि वेद, व्यास शुक
देव, सुनारद, ऋषभ देव जयदेव औ चतुरानन
शारद। सतत गणेश महेश रटत निशि दिन सहसानन।
गोरख दत्त भरत वसिने तिकह निगम पुरानन।
नामा कबीर अनंत जन दादू भाष्यो अगम मति।
पारन पायो भीरव जन सबही कहत अनुमान मती॥५॥
अजा कंठ थन दुह्यो बहु तऊ दूध नहीं पल। मृग
मरीचि दिशि धायो गये तऊ नाहीं ने कुजल। सुख
सेवन फल गह्यो लह्यो तब तूल अनागत। सपने संपति
सौख्य अघा नाहीं न कहुँ जागत। धरि धरन
जग भीरव करी बर दरिद्र, अति विचि जिसी, अंत
काल निरफल सकल आन देव सेवा इसी ॥६॥
आही पुरब जो निवास प्रगट तिमि बसे निरंतर।
ज्यों तिलन संग तेल मेल त्यों नाहिन अंतर। ज्यों
पय घृत संयोग सकल पोहे संपूरण। काष्ठ ही
अग्नी प्रसंग प्रगट कोय कहूं दूरन। ज्यों
दरपन प्रति बिंब मे होत नाहि विश्राम है।
सकल सुभायो भीरव जन ऐसे घट घट राम
है ॥७॥ एक रस बवति जमीन छीन कैसे सुखपाव
गाय भैंस इन्द्र सांड फिरत फिरी तहुं सु आवत
सबै भीत की ठौर ठौर बिन कहा समावै। के
पंख बिन आही सतो धरती फिरि आवै। पात सीचि
पेड़ बिन पोसत नाहीं द्रुम ताह को। ऐसे हरि बि

भीखजन भजेसो दुजो काहि को ॥८॥ इस मोहमो रूप
सुता ब्रह्म तप छीनो। फस्यो इंद गुरु वाम इंद्र पुनि
इहि रस भीनो। श्रृंगी ऋषि बन मांही पेखी पाराशर
मोहे है कीचक घमसान जान देव मधी सोहे। रावन
परतीय हेत लगो दध शीश दश वाम रस। सुर नर
असुर सु भीखजन को को भयो न कामवस ॥९॥ उलटि
सिंह पर पेखो नीर निज बिब रूप अति। काच भवन
मधी श्वान भंके भ्रम भुकताहि गति। परखि स्वब
गज चाहि कोदेहि दशन छेद किय मकिट मुष्टि
स्वाद मास पर हाथ फांस दिए ज्यों जन भीख
विवेक बिन सुक नलिनी बंधन कयो। यो अज्ञानी
अपते अपस पास बंधन • पयो ॥१०॥ ऊड बन पति
किहि कह्यो सहज इंद्रि वर फुल्यो सुहृ पवास
अनायास आनो मधुकर भ्रम हू भूल्यो। पारस मोख्यो
काहि मोहि परसत है कंचन। चंदन कब गुन कह्यो
तपतितन रह गु रंचन रब मोल निज कब कहे
अप मुख कह बरवानिए। ऐसे जन प्रति भीख जन
सुगुन सहज हो जानिए ॥११॥ रूख खड़ी फल लग्यो
पीसता अंतर पावत। पर टूटी जल पेखो गरे पुनि
काम न आवत। नदी नीर प्रवाह मिल्यो सागर को
परसद। आतुर है जल जुदो बहे फिरि बुंदन
दरसत। ज्यो नौका जन भीखजन बूडत पारन
पाइ है। तैसे गुरु तजि हरि भजन निहचै निर
फल जाइ है ॥१२॥ रति अरूपम रह वोहमो कुरैव
अन इच्छक नाहि बरहमो काहि सेव अनसेव अ-
वंछक। खग, मृग, पशु पतंग सकल पोसे सुख सागर।
काहे कू पचि पचि मरत लिख्यो सो मिटत न कागर।
बिरद लाल पोसे सकल धर्यो गति भाजन भरै।
तिहि क्यों बिसरव भीखजन अन चिंतन चिंता करै ॥१३
लिये तासुत गुब पयो दुध कांजी के पद से। मिली
सुरसरी सिंधु गन खार सुंदर सै। मृग मद के बिगुल

सुन संतोत को गुन खोयो ज्यों सरप पयपान मधुरते
ह्वै बिष बोयो। कैलात ऊखरो करै ऊऊ जल अति
~~ध~~ होइए ज्योंहिक संगति भीरव जन संग सगानहोईए
॥१४॥ लियो मीठ सतसंग भयो मलियागिरि चंदन।
लोहा पारस परस दरसत हरसत ह्वै कुंदन। मिलै
सुरसरी नीर सिर निहचै सो गंगा। मिश्री सो मिलीं
वंश तुल्यो लाहु के संगा। लोह लख्यो नौका मिलै
साखी सफल सन लीजिए। साधु संगते साधु ह्वै
रामनाम रस पीजिए॥१५॥ एक बूंद आकाश जासु
कदली कपूर भय। एक बूंद मुख व्याल भई विष ज्वाल
प्रगट भय। एक बूंद मधी सीप दीप प्रगटे ह्वै मोती।
एक बूंद गृह नीच भयो उत्तम जल छोतो। एक
बूंद मिलि सिंधु में गंध रूप गुन ह्वै गई। पोंकी
ह्यो संगति भीरव जन मिलै वही पर कृति भई॥१६॥
पै मत लाख करो दीजो अरब खरब हो। पद्म शंख
अति शंख सांचो जो कदे ठर वंही। तृष्णा लहति
न तोष पोशे असत ऊस ऊखो। जरे अग्नि ज्यों काष्ट
एक संतोख पिहुनो। नदी साधुं पोसे सकल ऋतु पावस
छिनो रहत। त्यों ~~बो~~ तृष्णा लागी भीरव जन नृपतिन
कबहु ना लहत॥१७॥ औस नीर ज्यों ताभो जगत सपने
को संपति। सित्कोरी सम तुल्य धूम ग्रह ज्यो सुख
दंपति बालक कैसो खेल जिसो ठहरावत छोरा।
रेत भीत ज्यों चाहो आहि अंजलि जल धोरा।
सब नोका संयोग सम छिन बिछोह ह्वै जात है
चेतत नाहिंन भीरव जन फिरि पिछे पछताते होहिं
~~एक~~ औसद मोल अपार भेद बिन खारहो तुलत
हीरा हेत अजान ~~भेद बिन खारहो तुलत।~~ लेते
कोड़ी अत फूलत। चिंता मणी कर अंध असमझ
धरी पेंतर। हंस कहै बक अहि मूढ़ मति कैसो
अंतर। पारस लै पाटो किपो चंदन फूकत कार
सम। बिन पारख जन भीरव जन कैसे जानत मरम

जमी ॥१९॥ अंगन पीर अति दहत अग्नि तयति कर
कारो। वन चौरै करि प्रीत स्वान कहै कौरै रिस न्यारो
तुहै सरबस लेत देव दूहै खदे है। सरप छछुंदर
गहत कष्ट तनहि निज फूटै। इह कोऊ भांति ते
होत सुख नीच न मूलि पति गिये। रस रीस कैसी
सीख जान लाहिन कबहुं कीजिए॥२०॥ अति सुपने सुख
लह्यो चल्यो तब नाहीं एक छिन। मिल्यो आपन
रोज चोज कै चोरी पंच दिन। काजिचि हुर हु
आहो चाहो विछुरे वहु पानी। नौकावारो संयोग पार
प्रम धरि उडानी। चेतन वाहिन सीख जान जो आये
सो जाय है ॥२१॥ कहां कर्द बलवत कहां लंकेश सिस
दशा। कहां अर्जुन कहां भीम, कहां दानव हस्ता दशा।

कहँ चक्कवै मण्डली कहँ सावंत सेनापति। कहाँ
विक्रम कहाँ भोज कहाँ बलि बेन करन कर। ऊसे
कलि कंस कहाँ जम ज्वाला मे जग जैहै। बदत
भीखजन पंथ परिहै को को आरान को चलै॥२२
खर चंदन अस भार सार कछु मध्यम जानत।
कोठी कि कोठण शरीर प्राय प्रीत ताही बखानत।
बरफी पाक संयोग नेक रस स्वादन औहै। चितामणि
कर अंध डारि केवल कासपा बढ़ै। तत्व न जान्यो
भीखजन कहा भयो विद्या पढ़ै॥२३॥ गणिका सोर
नती शील कृपण रूढ़वै तिदानव। बधिक दया उर
मुद बहु ज्ञान बखानत। कामी इंद्रिय दमन युद्ध
को जीतन कायर। अंधा बतावत पंथ। अंतर
तरीबे को शायर। आपन बहु बंधन बद्धो औरे
मुक्ति बखानिए। ये सब झूठे भीखजन सांच वे
विधि जानिए॥२४॥ गिरे गिरे नहीं न कल्प वृक्ष कुस
आन जगत सहुं। पारस कहुं यक आहि चाहि परख
तेप खान हुं। चिंता मनो कहुँ सांच काच सारे जग
माहीं। हंस होत सरमान वक जु दिक्खार अवगाही।
बहुत जित मोती है
[illegible] [illegible] हीरा नहीं शंख

त्यो साधु जन भीखजन निश्चै कहु पक्ष होत हैं।२६॥ नाहिंन पारस परस रह्यो जो लोह निरंतर। चंदन भयो न संग नीब पल्लव नहीं अंतर। चिन्तामणी नहीं लहीं अजो चिंता जो रहै। मिल्यो कल्प तरु नाहीं जीव कल्पना नेज है। काम धेन पाई नहीं नहि कामना जीव भ्रम। त्यो गुरु मिले न भीख जन ज्ञान पायो मूढ़ तम॥२६॥ चंदन निग जिमि वंस तऊ भयो न मलयो। पाहन पहन कठिन जु होय मध्य सर मिट्यो न जल्यो। पारस को कह दोष लोह बिच रह्यो जु अंतर। बुढ़ी रवात न मुढ़ वैद्य कह कर धन्वतंर। छिद्र कुंभ जल ना रहै। जो बरसा बहु कीजिए। शिष्य मूर्ख मति भीखजन गुरु हि दोष किमि दीजिए॥२७॥ छेदन मिलिया आहि कियो शीतल सुताही तन। पिंड्‌त ऊख अनेक खवत सो मधुर जानि कन। अगर अग्नि तन दाहि ताहि फिरी परिमल छाजत। तोरत कुसुम सुगंध करत कर सब जग जानत। कुम दिशि ढेलो डारिए वह फल देत अनंत हो। दुष दुष भांति भीखजन संतन छोड़त सत हो॥२८॥ जरत दाव लखि मुस हंस लै चल्यो मानसर। उन किनो पुनि पंख छोड़ सो पर्‌यो धरनि पर। पथिक वृक्ष विश्राम बहुत फल सुमन सतोस्यो। उन कीनो फिरी नास कंड तिहि मूल सिदोस्यो। अहि पय पान सु भीखजन विस अमृत करि साखि है। जो निर गुणी गुण को, कीजिए तऊ सो अवगुन मानी है॥२९॥ मूढ़ सांच सम कह कहां पाहन कहां पारस। कहां लोह कहां हेम कहा बिस कहां अमि रस। कहां दिवस कहा रजनि कहां तारा कहा सूरज। कह धरती कहां व्योम कहां सर सिंधु सपूरज। चिंता मणि कंकर कहां सुनि पह स्वल्प पटंतरा पशी परयो भीखजन खांग साधु यह अंतरा॥३०॥ निरखो काम देव भयो लंकापति खंडन। क्रोध काज हरनाथ विहंडन। लोभ लगि

बलि राय • धम गये पताल हो। मोह- कपोत सनेह कुटुमहि तपेा सुजाल हो। काम क्रोध अरु लोभ लगि मोह सहित चले गला। ये सब व्यापत भीखजन सो कैसे नहीं ठहैला॥ ३१॥ एक राज शिव कंठ औ विस नाहिन त्यागत। रविन अजहुँ एक सिंधू वड़वानल जारत। औ शेष शिर भर नाहिं उरत अति रेसो चुगै अंगार चकोर एक बिन लजिनते सि। तरनित पतर लिन्हे रहे, सो भीतोनेकु नहीं खंडिए। जाज भीख जन सांच की गहि एक यों छंडिए॥३२॥ ज्यो जु विसल कोरी कोरी विसद जगहि संची। ज्यों गंद नेरस रहि जल माहि न मछी। ज्यो नृपति बलि बन सबै औसर नहीं लगी। ज्यो बहुत करि साहु जासु हरि प्रीति न लगी। निपट कपट छल छांडि करि ठगै न काहु की संगी। जग विश्वास न भीख जन सो जो पांच संतन ठगी॥३३॥ डगमग डोलै सुर सर को साज साजिके। पंचा वचा मांहि भगे लगै लछन जन जन की पहिरि सतो के साज ऊलटी मरहटे भजे। सोमेन पावत कइ डिगे दोऊ कुल लगे। स्वाग सती को साज के फिर लगावत होत है। तैसे किस जु भीख जन जगत फिर बन होत है॥३४ डिग डिग ढुंढ्यो प्रान आनन ही चढ़ो परतर। कस्तुरी मृग नाभि जानि ज्यो तैसो सु अंतर। ज्यो दरपन मल माहि नाहि आनन रूचो देख्यो। जब सिढ़ो निरमल कयो तब ही मुख तहां पेख्यो। त्यो जग जो जन ज्ञान बिन बहुत भांति भटकत फिरयो काय सिंधू मे भीख जन अब हरि हीरा कर धरयो॥ ३५॥ निज भावी भर माय राम बनवास पठायो। पांडव तजि गृह देश विपति परदेश बसायो। करम योग संयोग वहे भरत वियायन। पहुच चले अनंत पत्रब शशि सूर परायण। रावण घर को हो दुरै विधि-बधि दुःख भ्यो भेरो लिख्यो लिलार जो भीखजन भावी

सो कबहु न टरै ॥३६॥ तृण ते करै सुमेर मेर ते ज्यो
पुनि तृण करै। दिनकर ते शशि कर करै शशि ते
जो दिनकर। सरवर ते थल कर करै थल ते जो
सरवर। तरुवर करै जू तुल तुल ते करै जू तरुवर।
कुंजर ते चींटि करै चींटि कुंजर चाहिको। लखि जातन
नहीं भीखजन ऐसो समरथ साहिबो॥३७॥ पके चरण
कर शीश तरुण पन यह परखो। मद अंग गति भंग
जरा दल आय भरखो। पलटि भयो शिर सर सेत
किनो सुख दंपति। कंप्यो सकल शरीर बैन मुख अट
पट जपती। नेकु न बूझत बात कोऊ स्वान यथा
चित वत रहै। तऊ निलज मुख भीखजन अजौ
नर सन हरि कहै॥३८॥ दग्ध भूषत नहीं नवै नवै जो
आहि कलंचर। नाहीं कसो कांच सांच के सहै
हेम वर। विद्रुम स्वात न चोट खात सह हिर
चोट अती। पाहन भीजै न निर भीजै सै कब कोमल
अती। अल्प कुंभ बोले अधिक संपूरण बोलै नहीं।
त्यो सठ गंधरव भीखजन साध्य सिध्द मति है
वही॥३९॥ धरि सुर दिशि करि परो वरि फिरि
तासु शीश पर। वह निरमल औचो मल मलिन सो
भंजन मद नर। दरपन से करि कुटिलता कि
मुख सोहै। विह सुंदर अति कांति वचु वाको
जग जोहै। गारि देव कोऊ कोऊ को उलटी
ताहि पुनि लागि है। निंद को निंदत भीख जन
साधु सदा सुख पाई है ॥४०॥ नाद स्वाद तन वाद
तज्यो मृग कहै मन मोहत। परयो जाल जल
मीन लीन रसना रस सोहत। भृंग नासिका वास
केत किंकर कछीनो। दीपक ज्योति पतंग रूप
रस नयनन्ह दीनो। रुक व्याधि गज काम वस
पज्यो स्वाद शिर कूटि है। पंच व्याधि वश भीख-
जन सो कैसे करि छूटि है॥४१॥ परै सिंधु मे बिछु
सैतो कांहे कहा जरताद। मूं प्रहार ऊडि खेद छुधा

बहुत दुख पावत। जल काहू को नहीं करै तवै बहुरै
मिलि जाई। ज्यों गज रावत हेम होत पानिक अधि
काई। चीर सहत जन सीख जन दुमन को नाहिं
सहत है॥ शब्द कसोटी जन सहत दुज सहो न जात
है॥४२॥ फटो करमंनो आहि चाहि तीहो रंग मिलै
आनि। जल प्रताप को चहै पर नदी शिव है ताहि
छानि। हीरव कांई आन आन सब पान आप मिलै।
सैन सीखो सब करो देखो जोपे मुराक सिलो। इत
उत डोलत ज्ञान बिन गारी कोल ज्यों जेत है॥४३
नारोज नरो संयोग तऊ तिहि लुत न होइ। तऊ
माहि घृत संग अंग तिहि मिलै न सोइ। सीप
स्वाति को चाहो आहि तिहि छुवत न सागर। कहिवे
को प्रति बिंब आइ सो जुदो दिखाकर। दरपन ~~माइ~~
मांई सकल महल ऊंजै तहां कछु न छिपै। ऐसे
जग मे सीख जन हरि जन काहू ना लिपै॥४४॥ सीख
कूप अति बस्यो चल्यो तब लह्यो ठौर तिहो। ज्यों
तेली को बैल भ्रमत नहीं चलयो विरवे तिहि। चाक
चकृत फिरि रह्यो रह्यो फिरि तहां परख्यो। स्वपन
गयो कर दीप सुतो जोगो नहीं देख्यो। आन धरम
धावत सकल ज्यों मंदर पर ढो रहि। अवगुण
ग्राही सीख जन रहो ठौर को ठौर ही॥४५॥ मंजारी
कूल मेद रतन केसरी प्रशंसा। नागर बेलि स्संग
सहत माखी मिली अंगा। कस्तूरी मृग नाभी फिर
पार हो कुल सोहै। मणि विषधर उपजंत फणि जूटनि
जग मोहै। पारस वंस बखान है शंख तांड़ सब
कोउ कहै। हरि गुन लिखे सीख जन नाहिन कुल
कारण चहै॥४६॥ जिमी चालनी उर छेद। ~~[illegible]~~
तजत कण रारवत छानस। माखो मलय त्यागी लहै
मल मैल सुवानस। गहि चकोर अंगार नाहि
मुक्ता फल लेहै। कागर करक ही केलि मान कर
... सोहै। जिन जैप असमल लिया, सिर अरवे

देत है। अनगुन ग्राही भीरव जन गुन तजि अवगुन लेत है ॥४७॥ रवि आक रंसै नीर विमल मल हेत न आवत। हंस क्षिर निग पाव सुप तजि कुस वन आवत। मधू माखी रस ग्रह नाहि कुच्छ बर वकजै। बाजि गर मणि लेत नाहि विस हेत न राजै। ज्यों जूं अहिरी काढी धूत तक्र देत तिही डारी के। पो गुन ग्राही ~~काढी धृत तजि देत तिह~~ भीरव जन अवगुन तजत विचारि के ॥४८॥ लख चोरासी जोनी चुनी पोरवत संतोरवत। पुरम पुरुस अन भेद सदा तोरवत विधू दोसत। सुरव कारन संसार विधू तारन दुरव दारन। अन मारन सुरव राशि कोसी पारन जन। तारन अति अनूप जग रूप जो जागत जोती सो ईस्वर। जग जाति जन भीरव जन जय ज... जय रवि हर अमर ॥४९॥ वह आगवति गति अमित अगम अभेद अरवंडित। रवि हर अमर अनूप अकचि आरूप अमंडित। निर्मलनि गही न रंग निगमनी हसंग नीरतंर। निज निर बंधन संधन चिर निर मोहनी चंदन। जे जीवन जग विस ज्यो नारायन एकज सकल। भुव धारन भव दुरव हरन भजन भीरव जू अनंत बल ॥५०॥ शशि कलंक छवि छिन पर सुचिता मनी पाहन। सिन्धू स्वार रवि तपति कल्प काष्ठा अव गाहन। लछमी हिन कुलवास जोनी तन सहस इंद्र तस। परजा पति मति छांडि लग्यो पुत्री जु काम बस। गंगा त्रषि अचवन करि व्योम शून्य जड़ धर निम्नो काम धेनु पशु भीरव जन निह: कलंक पक नामहरि ॥५१॥ क्षिति इति कागद करे करे तरू राय सुलेखनी। सिंधू घोरी मसि आनी लिखे शारद बहु बरवानी। तऊ न आवत पार हार सागर ज्यों सो भरी। चारि युच भरी लिपि सकल पीवै दुभरी फणोन अंत पावै कोऊ मुरव अनंत कीरति करी। थकित भए सब भीरव जन लहै कौन गति मति

हरि ॥५२॥ संवत सोलह से जुवर सत बहुतेर निरासी। पोश मास परव सत हेन दिन पूरण मासो। शुभ नक्षत्र ज्यूं, पुष्प धर्यो जु कर्यो आसारंज। कर्यो भीखजन ज्ञान जोति द्विज कुल आचारज। सब संतन से बीनती अवगुन मारनो वारो पहू। मिलते से मिलतार है अनमिल अंक सवारि लहू ॥५३॥ हरि गुन स्वाद सफुल अग्नि अत्युक्ति बखान्यो। कछु उपज्यो हिय माहि कछु गुरु मुख से आन्यो। सवि अंग गुन भेद कवी बावनो विविध परो। संत दास सत गुरु प्रसाद भाखा रसना करो। परम पानो और जुगल सजस भीख विनती कही। जे संतन मन मानि है, तो प्रसिद्ध है है सही ॥५४॥

॥ इति शुभम ॥

गीत :— रावत जी श्री दौलत सिंग जी मैं बाठरडा वाला कासीनीवास कीदो सेवग कीसन लाल की कही —

उपज्यो प्रेम ज्ञान संगत सज आछो। सांची सीख म जबन तंत सार। राजथानो त्यागण रंग राची। काची काया समज कुल कार ॥१॥ कीदो प्रेम हरी रस पुगता। लीदो सरण शंकर कैलास। दीदो दत सुकृत सर दौलत। मे छंडे कीदो कासी निवास ॥२॥ प्रभु चरण चित जारु पसायो। हातां तरण सागर भव हुत। रात दन समरण धुन राखो। सारंग देवोत करण साबुत ॥३॥ वीसारी मोह लोभ की बातां उपकारी रचातां कर याद। बीचारी गही ग्यान की बुदी। मोफत हरर च्यारी मुरजाद ॥४॥ तजियो क्रोद ममत सब त्यागी। मजियो प्रभु सरण कुलमांण। रजियो पुन्य ज काम रसाणी। सजियो कल्याण सुतन अवसांण ॥५॥ छीला छान राखो नव छुटरे। राम नांम लुटरे बेल रसीयो। जांणी दौलेस सींग माया सब जुटरी। बास बेकुंट रे जाय बसीयो ॥६॥

माहाराना फत सिंग भान हिंद ~~मान~~ बान गुहे | व रघुकुल
रूपक जेमे वार छत्र धारो है | महल पीछोला ओर
गार गान गोर जोर | जुह जुह जेकार ओर भरे पनि
हारो है | मंदिर जगदीस जांरो कांही बीसाल छीब |
बड बाजार गरो गंग जोर कोर वारो है | कोन वालो
पास खास सेवगां की पोल बीच | कृष्ण कवी तास
तोहूं जु परो हमारो है ||

दोहा || राजन ते अधिकार ते | केहोते नृपत बहाये | सर
मीसरी खावे नहीं | जस रुच बीप न जाय || २ ||

उना भांन कछु प्रात समे पीछ यहां | धुजी के
तारा तेज कैसे हरावे नां | कृष्ण कहे सेसे सत्य
भार हुन डोले सीस | सुबन के सुमेर सीस छोहड
गीव नां | वंदन आकास के धरनी रेत हेरे है कोन
बोल को वचन जांबी अंबी जस होत येहे | नछे
लछ मंन सीता कबी भर जोवे नां | पुत्र की बधाई
सुन सोभा सर साई नां | आनंद अती आई छाई
चोज चीत मेरे पे | वात बधाई सुद लग्न सोद हु
नृजन मेलछ राज घर | कीजे दांन मांन रतो सुवन
गनेरे पे | जाहर ~~तम~~ तमाम जस केसु गाम गाम
नता | कीजे मन बखत काम कीरत सुने रेपे | गामो
गामी मीत्रन के आनंद हु गाम पयो | नाम सुनि
आयो येई नांम लेम तेरे पे || ३ || कीदो हो बोली
हो वचन अरवात जात | कीदो हो बोल सो तो
सावन हर लीजीये | कृष्ण कहे प्रण होके गण
जो मिटाय येतु | राजी होय रुको रसीत अब ~~दीजे~~
दीजिए | और लघ राज तेरे कुंवर पधरेजो रहो |
मेर येहे हुंडी को पेठ पर तोजिये | आसा लगा
रही जासु केते हु खुलासा अब | दांन कीव देवे
मे ढील नहीं कीजिये | मेहेरबा मुगटमणि गता
गुणवंत आज | सांची बलवंत सुत बात को सुधार
दे || धन धन मात तोकु जायो कुल रहे जुग केते

नाम सोभा सराहे सब। चीत हुलसाय होये गरजी जट सारदे। अरजी सुनले रे अरवात लक्षम- सींग। मेरे तात उमेद जु की करजो उबार दे ॥४॥ दातारी देन रुक्को कही बलवंत दान। पुन है सपुत जाके पारस प्रमाना होये। बड़े विद्वान लछमन गुन गाता दोष। राजन की रीत पाके आदुरा राना जोये नेक नाम नीत मुख बचन खजीत कहे। जीत के सुने ते अब ब्रकात की चेहन होये। रेहन चीत मन दूर तास जीत धार। रुक्का को रसीत अब तुरत कर देगा तोय ॥५॥

गवरी लिखते :—— चुनी लाल के पुत्र भये अवतारी। धन पुज श्री लाल तेरी बली हारी। मात चांद के कुख जन्म लीयो। प्रभु भजन न हर पुर प्रेम रस पीनो। बाल पना नो बुद सारी बिसारी। धन॰॥१॥ तरुन अवस्ता आई काम संतायो। उपजो हीरदे ग्यान ध्यान सुद लायो। धन॰॥२॥ तेने नेहे कर कर छोडी श्रप बती नारी। राम कुंवर कुले रूप पती व्रत पायो। बोली तणा सुद बचन के हुकम उगायो। जोड़ा सही तले जोग दली अधो कारी। गोरव गोरव हेवली त्यागी धन माया। खान पांन को खाल नाम नही लाया। मरम करम के पीया भेद नीज भारी। कुत्र म सुनियो कांन जान सत्व रायो। धर हर कंपो जोह हीह अधु लायो। जीया जग सब जुरम मत को मारी। साधी साधु सत संग उमंग अंग आनी। स्वच्छ कीयो मन सुद के बुहे बखांनी। मारग मोह को मीलण समज भ्रमसारी। धन॰॥६॥ जपत पैचला जाप श्रुति सुहड़ाडी। तणी अष्ट पोरत रंज धारणा धुन माडी। पकड़ ईष ~~अष्ट पोरत~~ टेक पांच तोल इन्द्री पारी। धन॰॥७॥ तेने सत गरु के पास जान गुन लीनो। पुन तणो बोपार पधारत कीनो। दीयो गणी उपदेस दीसा फिर धारी। कीयो लोभ को

करन दरज जस कीनो। समंता जल्ल की सोद दया दत-
दीनो। अंग तरंग जआंन कोयी कांरारी। धन०॥९॥
जैन सरन कु जाय चतरन चीत लावे। तरज मन
सागर तोल बोल वत लखे। हरस पाप कर पुर
करन उपकारी॥ धन० ॥१०॥ बीर पंन कोते तसुतत
को सोदे देत संत्य उपदेस दया पर पर मोदे।
जीव जंतु के जान कहांन उबारी। धन तुक तोये
ग्राम जनम तो हरचारे। धन राज गाद धांम संतजन
सारे। धन तोये भाव भंजन नग्रास सब सारो। धन॥१२
धन चोमासो करन आप याहां आये। धन साह
सब कोये पदारथ पाये। नमेर पाय मे आये सबे
नर नारी। धन० ॥१३॥ संमत १९६० भाद्र पद मासे सुद
पांचम गुरुवार आये तुम पासे। चम छरी चोत आव
हरख बोहो भारी॥ १४॥ कष्ण सेवग कर जोड़ प्रसण्ण
चीत लाई। मेरे ऊती माफक जुगती देख दर साई।
यहां पंच सबे पुन वांन पुर-पती पारी। धन पुज
श्री लाला तेरी बली हारी॥१५॥

॥ दुजी लांवणी॥ सुनो पुजी लाल अरजी गुन सारी। दीजो
दरसन आप कृपा कर भारी। करन चोमासो सर
~~बतलाया~~। उदे पुर आया। भीन भीन करी के भेद सबे
बतलाया। केतांन जीव को दान दिया अधिकारी।
दीजो०॥१॥ जे नम लीजो सारवा सुत्र की देत मोर-
धारी। दीजो०॥२॥ आये मुसलमांन जांन सुनबे को।
करी न कोयी ग्रंलान परी मान करी दयो। दया पदारथ
जीन सरब भ्रम सारी॥३॥ दया शीख जोन राज
आज सब सेवे। होत हरख हंगाम रोद सोद देवे।
प्यारे प्यारे गुन नाम चोइसो अवतारी। कहे बिष्णु
के वंत ग्रंथ में ३ जीत। रावण दया नही रखी ले
गयो सीता। वांही अनीती बात के जुद बिचारी।
समझायो दसकंध मंदोदर नारी। मती भ्रष्ट हो गई
धारी नहीं पारी। यो राह कुल वंस लगो नहीं कारी।

दीजो॰॥८॥ दया सहित कांवर पीर पुजाया। जांने दया राखी दील माही मोल पद पाया। दया पुन को सार भेद गुन भारी। जोगी जती और भेक कते संन्यासी। करे पर उपकार कराये फासी। जीव जंतु अनंतु बचावे टारी। दीजो॥९॥ मनरवा देही बार बार नहीं पावेगे प्रभु भज गुन ग्राम कबी गावोगे रखो गार गार के बीच दया नर नारी। दीजो॰॥१० ईहां धन्य पुज्य श्री लाल दरस दिरव लायो। दया तणा बीसतार सरब बत लायो। भयो जे जे कार के शब्द उचारो। दीजो॰॥११॥ करा पंत हे तंत सही चीत दीजे। ग्रंथ ग्रंथ को सारवो नीगा कर लीजे। ममता को नहीं मानस सता धर धारी। दीजो॰॥१२ करता पंरया पुर मानव सब मत के। कीजो सुद प्रणाम के उभग दल के। हिंदु मुसलमान कहे बल हारी दीजो॰॥१३॥ सेवग कृष्ण की अरज सुनो माहराजा तारन तरन अवतार धर्म कीज्या ज्यारा। करत पाप को दुर सदा हीत कारी। दीजो दरसन आय कृपा कर भारी ॥१४॥

॥कवित॥ तपा तेज तेरे यह अटल प्रताप कहु। सही संतोस अती सील व्रत धारी है। अति मुरव पाद ग्रंथ रतीन हजुर जीम। अंग सुद व्रती जाकी महिमा अपारी है। • ज्ञाता गुन वांन संत बुद के बधी का दीप। पाकस पुन वांत ऐसो पर उपकारी है। सत जुग चाल चलै नजर नीहाल देरव। पुज श्री लाल तेरी कहे बली हारी है ॥१॥ ऐसे धन धांम गहू गांम पो तमाम जग। धन सब साधु साचे पर उपकारी को। धन मोबी का कोजा बीजे पुज श्री लाल। धन भावन को तु संतोस सत धारी को। धन पेहे सील समता की ममता को छांड। धन आका को जेते सब नर नारी को। धन या कथा की उपमा को सुन बाको सबे। धन उपदेस याकी बोल बली

हरी को ॥

कवित॥ पुंगल नागोर ओपं जाव मल्ल रा बहुरि कमरू कोठेया बारह की मन भावना। देखो गुजरात की सुंम वली मेवार को ओछ पन छोलनि को जु रहनो सुहावना। कृष्ण कवि कहत सुनो हो रे हमारे मोन मान पोन नारी कान वर को जु पावना। देस ओ विदेस मे नारी ओ अनेक देखो मेरी प्यारी के सिवाय चित्त चावना॥१॥

॥ अथ खोरा लिखते ॥

साकरी छोरी ने लाज तैयारी। अंखोया देरा सह नखोयां लाजन सकोया आज। तो अंखोया कोयो जेक। प्यारी जीने देख रे बुड़ा देख देवला हरो भव नाथा रो आनर कारी एक॥ नाखोया गागरी नोल न नागरो। गागरी परोयां केक॥२॥ होजड़ा कारो है कोई सोरा बीजड़ा धोरा बेह। कोदा ई धोजड़ा। नांही पतीजड़ा खोजड़ा खुर विवेक। जांगड़ा जमड़ा ठागड़ा गाड़ा छात मेड़ा गड़ा हेक। चेतर चुड़ामी तो सुपग सुड़ा। ठाकरे मुड़ा हेक। छुड़ा वाल सो दत को ताल सो। कोपिया काल सो केक। आमरो उतड़ी मामणो मुतड़ी आपसो होत की एक। मोर को माई आद अआई जरख चड़ाई जेह। देहेर जावि बीर जमावे। ठाक बजावे टेक॥८॥ नार पुरं रीहे गुण गारी कंव संवार री केक। मेर तणी जो भोग भोजो ओह न कीजो एक। फुरमई लंका में विभीसन मिले राम जसु। रांवन सहित सब स्वरग के चलो गयो। कहे कवि गंग दुरयोधन से छत्र धारी लिखत के हुते तार भारी कोठे हो गयो। नरद के फेर उठो जात बाजी चोपड़ को। आपस की ~~फुर~~ फुट हु तो कोन भलो भयो॥१॥ कुटिल कुराही कर कवि के सुकार बारी। मार को चहे है मार मह के मरू

पेच अनु पेच ते लेरे हे बहु पेच हेरो। लरीबे के
पेच जांनु काहू से लरू नहीं। धर जीव कीये केतु
धराको कलंक धोरे। धारी हांन औगुन धरतवार
धरू नहीं। धर जोव कोंप केहु धरीका कलंक धो
कबहु कुसामद मे काहु को करू नहीं। पावत दीवा
पन आवत दीवान पन। आवत दीवान पन साहो
सु अरू नहीं। होत पर धांन पर धांन के पे धांन धो
धांन पर धान के पे धांन मैं धरू नहीं। हे के
कार बारी कहै करे या कार बारो कार। मेपे कार
बारो तसो बचन मरू नहीं। सेवग तिहारो होते
रावत किसोर सिंग। कबहु कुसामद मे कहु की
करू नहीं। अमल अहर्निस मेरे सील साम अहो
जाहु दुसो पेव जोमे फरक न राई को। अजंपा
बनाय जाप ओहं सोहं कावय पस। पड़त रहत
स्तोत्र पाठ प्रभुताई को। काहु कोन पत्त पात
कोरि के बनाई बात। बंदगी तिहारी बिसे भेया
हुत भाई को। कोंक बीर मोपे जिन लागो
श्री कीसोर सींग। सेवक परम मे हु नीज सेव
काई को। गोसा चाहे मुसण वसण मांत मांतने ते
तात मात चाहे धन धांम हु को धपनो। कुरम संग
तो माहुर बीसवास गातो। आंहु काम वांम
चाहे स्वार्थ कोल पनो। आन परो दाव अब
सुझे ना उपाव ओर।
कोपे बात आन होत आंन कब रखे मेरो।
तेरी करि आन बीर माको धुरि भाव रे। माहि
दिप वल्ल फिर जल्ल ना विपन्न करो। पको
हात हिपो जोप येत बलि दावरे। पति श्री किसो
र सींग पालक पतीत केरो। पत को बड़ाई मेरी
[illegible] बहु दिस चावरे। राव की अरजी सुन दया
कीजे राव पे। राव की बनाई बात राखो राव
राज रे। सुंदर सह श्री रहो वे महाराज धीर

होय। बीर होवे भलो साव धानी होवे। स्यान होवे साहबी प्रताप पुंज धरी को। कहत अमान जोपे मगन महीप होवे। दीप होवे वंस को उजार सुख सोम को सकल सुबुद्ध जौने कविता प्रबन्ध जांके धीर धरिवो। रजौने जौने मल्ल न सील रखो। बात की बनाये जाने बात चीत लोय जाने। सीस ही धुनाय जांबे जौने नेन भरिवो। रीझ जौने खीज जौने गुण में पसीज जौने। प्रेम भीज जौने पन जौने रीझ करिवो॥

॥कवित॥ अनि रूप [illegible] सो लीनो करम पसीनो देखवा को जब रात अकुलात अंसु पात करे। तोहे मोहे प्रीय तात मात बेन भइया सो। दाता गर जातो तो धुरालो ना बीश्राम पीतो। आतो पीरी मेरे हाल हार मत हुइ पासो। जीतन तुजोलो तो लोते। तो नां बटे पोतो हो। मेतो मर जइयो तो सोखाय जइयो सई पांसा। दाता गर होतो तो कदर तुन जानी जाती। आई गर मेर तो वचाइ जन बाबरो बेठो रही रखलो रखत तेहे रवोते बीच॥

॥कवित॥ छाड़ी निज २ घर नारी औ समग्र नर। दूर दूर पर बसे आय तोते अतित स्नमो। पगी कुरमीन वारी गोरव धोरी अमोरन आई। नेन लखो जोइ पाई आनंद समस्त मो। अमर असीस देत बसोये अमर रते। अमर नगर राज अमर सुबस्त मो। नृपति किसोर धन मनी के दरब सहोत, अरो खुष लेक खर दुष को परस्त भो।

श्री गणेशाय नमः अन कोन नर महिमा:- कुरावर निवासी त्रिवेदी कवि ओमठा मुकुट गीकतू।

॥कवित॥ आइ होय चार सखि मित्रिन को पाय के नीर भरिबे को मोहि देख अकुलाते क्यों। कारि खंह कारे मो विलोकि पिक डारे क्यों। खिक मत रावली में

हाजिर कीजो जे क्यों। नेन के कटाक्ष ही सों कंपत
है औ सब। मुकुट बिहारी संग मिल अति छाजे क्यों,
कान वर मध्य ढूंढ़ वाह जे सुदेवालय माजो साव
हू को गहो हिजी पे बिराजे क्यों। मुठ कोप हून होवे
नर इत उत देखि कर सांझ औ सवेरे कभि मेरे
पार आया कर। सोलह सिंगार सजि आभूखण
कंचन के सुर मो नयन रूप सारो लो दिखाया कर।
माल ~~क~~ औ मिठाई खाय अतर फुलेल पेरि सोय
परि पंक पर प्रेम रस पाया कर। रात अधरात
मिलि जोलो घोर पंत पर पे मुकट बिहारी हूं सो
नेन तो मिलाया कर। मुकुट बिहारी प्यारी प्यारी
मन ले हमारी बात न्यारी ना करूंगी तेने क पारी
कर मोसे तूं। नेक गम खारी आरी पिलंग बिछा
री जारी धारी है चली तो तोपे प्रीतिय रो से तूं
नारी नख सारी मारी अब तो तू हारी सोह जात
अकुलारी विषे अनंग मद चोसे तूं। मुकट बिना
हमेर फेर दीज्यो मन दोसे तूं। मुकट बिहारी
सत्य वचन हमेरो खास जितने हु जोलो तोलो
पार तुम पारो तो। पारी कर नारी बनि जाऊं
में सुगोप्य तेरी सजि के सिंगार आऊं मोहि
को निहारो तो। पंच बोने आपके सतावे बाज
वक पर विरह अगनि की मे आज को उबारो तो।
कान वर मध्य ढूंढ वाह सो मरो के जल आलय
पधारि आप प्रीतीय पसारो तो। चंद्र मुखवा री
नेन मृगी के समान वारी अरी ~~अ~~ प्रान प्यारी
अंग कौन्ह तो लगाय ले। कंचन के आभूखण
साजि गज गामनी हूं। तिल बधाय शिव भाल पे लजाय
रोली भोहे को कमान जोर नेब सो लगाय ले। कान
वर मध्य ढूंढ वाह सो मरे हैं जल मुकट बिहारी हूं
से अंग लिपटायले ॥४॥

सवैया :- अयरी सखि मुकरे शूल कीतो ही काल भई मुज को धकरी। धकरी भई ते मुरझाय रही प्राति पत भई भई मे ज्युं खरी। खरी ये जाट दोरि लगाय सुकंठ गिही सप पे छतियां पकरी। छतियां पकरि करि धूप लीयो मुख पेरितु दान दियो तो खरी॥५॥

कवित्त॥ मुकर विहारी हारी करी सीनगार बहु वेरी यो वसंत कीर विरह बढ़ावे ना। बाग मे चली हो सेन ~~आई~~ करने सखि साथ ले के पापीहुं पैपैया पीयु पीयु के सतावे ना। कोकिला सुनावे नाहु मीठे बहु बेन मेरो अरी सखी तां सो पलु मेरे मन भावे ना। कानवर मध्य इन्द्र वाव को सुपीये जल। तीते पति खरे है सो मोर जिन आवे ना॥६॥

सवैया॥ करि सेन ज्युं मोहि बुलाय लिये अब बोलति क्यों न कृपा करि प्रीति ज्यु धीर हिये धरि के। धरि के कर मे कर ले वरदाम सुदे गतु दान लते परिके। परिके क्यों हि सोर करे मुकरे इहु भागति क्यों हमसो डरिके॥७॥ कोरु कान में जाके लेह महतारी। हु मोरि अति छल को करि के। करि के अति कोप लही करमें लाठिया पहुती तनु पे बरिके बरि को सुन के मुकटेश इमी हम भागति क्यों हमसे डरि के॥८॥

कवित्त॥ ऐरी ~~र~~ प्राल प्यारी साजि सो रहु सिंगार पुनि अभूखण बत्तीस हुं कंचन के धरि के सारी नेन सुरमो अरु पटिया बनाय कर कहां गई मोपे नेन हुके बेन मारि के। शीशी कोम मायनी चो हाथ कोड लीरे देख त्रिया का चरित्र बहु कीने पिक हुरि के। मुगट विहारी हु सो प्रीत कर सोची अब ठेठ लो निभाहु बहु दया उर धारिके। सखी सुनिये री तो ~~समीप~~ कहुं सत्य यह मध्य हु वसंत पंच बान तन मारे हो। मारे हे सु जोवन को लाहु के ~~मकर~~ कोन विरह अगनि

मैं प्रान को उबारे हो । प्रान ज्यु उबारे सु मुकुट
विहारी ताहि वे निमय ठेट नरक पार पोरे है । परे
हे रसीलो प्रीति रीति से प्रवीन वह जैसे नीर
मध्य मीन नई देर धारे है ॥१०॥

कवित्त छंद ॥ बायां का छाय ज्याव । नाव मायां का बाको
जनम बधाई जाण । फकर अरु भमर केतरको । नहीं
जदि नो नेग । सुर जग मा सुभ करी । और ही
रीज अनेक मिले नह कदेनु मारी । आगरणी माहे
रो सांमत रतन । जेतई बाकी जाणज्ये । अगताई
बधा आरवु अबे । इतरा नेग ज पांजे । मिलि
नेह रीज मुरजाद । कीधी नह दान दातारी । आवत
जावत अनेक सदा बंद पेतर सारी । बड पण कीदो
कोद पक्ष गर आप चेताई । उग्र दिवस उदोत । सम
पी जद राजा से गई । नदतां बुला नेग पारा लख
मांगु रीजां मोज रे । दातार चीज कर देणरी
नेद लात नेर नहीं मोजे रे । बुधप वाणा वंस । अवल
अवतंस उजागर । सबल सेठ सुभी यांणा । सत्यवंत
अकुलां सागर । पालणा कवियां प्रीत । रीत राखण
गजा रुडी । सोभा सकल सदीव । कदे नह मुक
सुकडी । आंगे जे दया अंग पर ईदक । पट पट-
भरये पट जो । आ पर मनहु आपके । सुभे
जग पट सेठ जो । बार तुहार विसेस । रुको
नह लैरी आयो । हाती पाती हुस । भाको बीम
कीदी भाकी । चोवत मोहिला धान । पडो मंडार
जरको । काटे बुडावां बिचार । रुई लोगां अरको ।
कुलासा लाग सावहो से घरर । मारो करी बीम
मेर जो । मुरजाद लाग ~~[illegible]~~ मांगु मुदे । सबकी
बाटे ऊनी सेठ जो ॥४॥ माया माया के भेद ।
परको आप ही पत्यां । खुमने कर रवांत । मदन
धुत्यै वे मेल्यो । उमेद सु कार आंट । फाट पेल्याई
फाडी । बड़ाई कीदी बेर । तान तुरत ही तोड़ी ।

रूढ सुभाव अरजा ~~सुन~~ आवु। पर की फुरज पर में। लेन ~~हु~~ बीत दीबो पियो। सला उपजी सेठ में। मरी नीके माले में ॥१॥ कोयी चोरी करण री। सक को कबहुन फर। हेर हुवे लो हाडे। पर में तीपो घुसायें कोठी धान जे काढतां। मलो पो तेड़ा मांहे। जद अरो छाप उमेद री॥ २॥

॥छपै कवित॥ बावन्या कोई विसाल। हुई रूप गरां हदो हद। करतब किया कुस्याल। धाव मैं धोले बदो बद। ~~कुलीव किया कुसीहु। धाव मे बोले बदो~~ ~~बद~~। मलम संग लीद ~~म~~ मल्लाई। उगो दन उदोत। अठे सेठाई आई। आज दन मांहें कोडी रखे। नह देखी पर निहाल रे। कैताई जस कवी जन कीया। मिल्या न रवक हालाल रे॥

॥कवित॥ गुन के न पुछे कोउ औगुन की बात पुछे। काहा भई हुई कल पुरा औरव रांमो है। पोथी मे पुरान गांन ढहुरन उरी देत। पुगल चवारवन को मान ढह रांनो है। कादर कहत जा सांकडु कोहु बोहे नही। जात की रीत देख चुप मन मांनो है। बोली देखी होफे सब भातन सां भांति भांति। गुन नांही रानो सब ग्राहक हीराजो है। देखं तके नीके परो नांम बहु आदर के। दिखत भलाई सदा जीव मे जेर रहे। भेद भेद पुछे मुछे देव तन आवे लाज। पाप केत मुहसी हुआ रैवन अरे रहे। कादर कहत लोरन केते कासीबी के। हार बार हुमे दरबार मे खरे रहे। नीचा को हुनेम जीने चुगली अधार पर। स्वारथी महाय बेको खोज हा परे रहे॥२॥ सोरव सेर मारी बेफो सभा मे सुनाये सदा। स्यार हुन मारे कहु ज्यार को भी रीन को। हाथ मे न जोर वेसे पंछे री उडाय को। जोग्या सु उडायो करे पुज खीरन रीन को। ज्वाल कवी कहे केहु कीसे

धीरज सांचो बनै। सब ही को देत दन दाय भोग
रीन के। कोई कोई भूप ऐसो वेसम होइ जाई।
राखि लेत होतो चारो डार तब दीन को ॥३॥ काई
बे को चाहो तो चाँपि के उबासी खाये। देबे को
चाहे तो चुटकी हू देय करो। चढ़बे को चाहो तो
भौंति ऐरव बैठो चढ़। पीबे को चाहे रवन जगर
पीबे करो। उड़ाय बे के मारवी बोछयबे को धरा
तल। औरि के अकास लीये बुराई ली करो। भूप
दास भूप कलि काल करे जो गुनी है। सभा में
गुनी जी हो तो ऐसे सो जीये कहो ॥४॥ मांगि-
कोन चाहो तो कवी आवजे हमारे देस। ते तो
सत्तामत को तो म्हारे आज लाचा छै। गाड़ा सार
गास नाही मनरवा के नाज नाही। चाकरान देखो
छै तो जन्म केतो कांगा छै। आंगे मे राज करो
तीन सेर ज्वारी मिली। साहु कार मोठो तो मेरा
लार लागा है। आयर तो पधारो जा चलाय होतो मेरि
जोको। फेरु अयां बोदा पैसा पोतेवारो जाण छै ॥५
॥दोहा॥ कुटक बचन नहीं बोली ये। भड़कीन दोजे आसी
चीरत चीत हरीये। परि हरिये पर नारी। हांसी पे
कोसी पकसे बीदा में बैवाद वेस। काया में मदन
गुण चाकन में होनता। भृकी मे गीलानी बसे
आपतो में हामी बसे। जैसे हूरी सुदंर दसा में
छबी होनता। रोगा बस भोग में संजोग में
बियोग बसे। गुण मे गरव बसे सेवा मांज
दीनता। और जग रीती जेही गरवत असतारीती
साता की सहेली है दैली उदासीन सा। रवाय
के पान बीदो रत होठ है। बोठ सभा मे पीये अलबे
बेला। बीती कोनरी की सारी सी ओठत। बै पट
बठोंय किये जस चेला। बंस गोपाल बरवानत
है सुनो भूप कहाय बने फिर छेला। सान करे बेठे
साहीबो की फेर दांन मे देत है एक अधेला।

बाहि ओह लार नाऊ धीमर कुंवार कान्हो। सरी का हीसो होय हजुर को सुहात है। कोल गोड गुजर अहीर तेली नीचे सँबे पास के रहें ते काहा उंचे भये जात हैं। बुध्द सेन राजनी के निकट हमेस बसे। कुंदर बीलार कहा गुन अधिकात हैं। पडीत कवी यन को कुजे रेन कुरनमे। कयोंक कनो मत किन तीन गोंने को। कहत उदेस देखो सामर सकुन नीको। गोंड के यहै पनको चबिना चबौने को। आदर ते लेत जोन काहीयात बके छोडी के पुरान वेद धरम के बौने को। जुड़ी के गयार गोंधा बेठत पोहर आई। आलों के गैवे ई कोया कैपेया रोज खान को ॥ ६॥

॥दोहा॥ उदम करी हरी दन से। जाको पातक नास॥ मीन गहे कल होन से। जो जग होये भय नास॥ १॥

॥कवित्त॥ उधम करे ते मीले मानव कुल छमी है। उधम करे ते सीहं भोजन लहीं जिये। देव देव आई हमे कई रव दत रसे। देव तीन मारे जारे पोहरव करी जीये। मुकर बिहारी कवि आतमा को कारजीती। आलस बिसारी के उपाव तेतो कीजीये। जतन करी रहे जाय काज सिध होय नाही। तो तब पीछाड़ी हास काहु कोन दीजिये॥ १॥

.x.

श्रीगणेशायनमः -

हमची लीखते : ——.

ने दे बात सो दोन हो रस मे बसग रीत। कर
उवा बे कुवरो। माडई मत बोल ॥१॥ समत उगणीस
उगणी तालीस मैं। मा सुद पंचम जांण। रच्या
भाव अण रीत रा। बच्या अस्या बखाण ॥२॥
रस संगार नह रहो। चयो मंडप उण थाग।
आवा तणो रचीयो भलो। सुणो असा सोभाग ॥३॥
हमची :— सुणो जी न्याव तणो सोभाग रहो नहीं सगा
के रंग राज ॥१॥ तेके बब बोरे ओने गज त्याग
देवे ताने तो न्युतो न दीयो। रीस कीयो गन राज।
जण रो तीम बेर सुजांण। कासु सुंदर कोज।
मल महीना मे धांट मामेला। गर तीज बेहे भांन।
सुद पहा पंचम कासावा। जरले आजो जांन ॥२॥
जीनत लो लोहुत जलुसा भण आई अण भांत। रात
पोंत कीयांगा रोकड़। खरच्या कर कर खांत ॥३॥
पलण भांत हो तीसरा पोरा। जान नुतण रो जोग।
जीमणनु तो मायां जटके। लोगाई ले ले लोग ॥४॥
जीमतो पांत कोठारीये ज्यानो। उकेइ रहीयो आद॥
मसल कर कोठार के मा रहो। सट ताला सीचाये
पीसणां गांम सेठाण्यां पीसा। छोह सुनो दज सांड
भांता माहि तात बगाई। खुर मांहो तज खांड॥
पहलु लायो लोपा ओडण होली सेठाण्या को
साथ। पाछी मुमस कोड़ पधारो। मनाई जीमीयां
भांत। नुत्यारा माड़ कीनो को। उपीछ ताई आण
जार वाहरे नहीं जीमायो। मीसा मेरो पकवान॥ वींद
रे तात जस ला बीचारो। सुण जो सांई सात।
भांतं माहो तात भगाई। को कर जामसी कात ॥५॥

बोलिया जीमीयां रुहाड़ी पे कांगी जाणो ये बात
जरूर। भातां माही तांत बणाई। तांतां पे तंदुर।
चावल तणो मेडे गाई चौड़ो। वो ही ई गामे कांद।
आतां री तो प्रीतन ओकलो। भातां री मोरो मोद॥१
सी सोई सुणतां बड़ाई आदमी भुप ज मोड मेज।
आयां री तो लीजो आग। जराऩ कीजो जेज॥१
बड़ाई आदमी राज का बोला। मोरोई के सब मांन
गांव को प्रेम राखे मत गोल्या। जद जीमाये जाम
बीद तणां सुसरो ईस बोल्यो। सुण जो मारीये स्या
चावल खीचड़ तो राखो चपका। लाडुई जीमो आप॥१
आप बुलावो जेक आवां। असो कहो हे और कोई
कणी रे कीजो मती। रंगत मंहे रांट।१४॥ रांट को मांको
रांट मराई। बदगी आरज वेद। साज जर मे जाय
न सोदे। जु चादी मे चेद॥१६॥ छोड़ हो गाडां कोद
ये छोड सुं। इवा ऐसी दुदेर। ईब दमोहे जीमण
आया। लारा सावन लेर। सासु बीद किसा लोई
सूकर। कुमत ज्यारी ये कांये। बोलर देनहअडका
बोले ने छे जीमवां नार॥१८॥ सीजो रात मांग
कोसोर ई बीद कोद उनास। खीचड़ी खायर
जागण खोल्या। हेतां ईन दहु लास॥१९॥ मांडाई
जीन तणा भीज मांगा। सजो न आदर सार। बुढोई
वहीं करवे बरा। जलादे दे जार। चावला छुडे रवाई
नारी। आगेइ बोत अपार। इहां जु कलस चड़ो नहीं
राक ही। सो दारवे संसार। परता जाका परावगो।
वोल्याई मोडा बोल। बोले मांन असवार ज बादा।
तण री सांदा तोल।२३॥ चाल्हई चोरडा जोरवरू कमर
मलार चाया माव। कतोलां कर फेर करावां। नहीं की
जगा जनाव।२४॥ पचकारी जीमोरान पंचा नहीं चुकावो
चाये। कांमण पुंछे केत। जीन वनाई तेल बगावो
ओस च्याला लाने जुदर सड़ीई। हुईनी फेरू होड।
खोई तरफी आरवां दे सका। वीफा न आदर कोय॥२५

गीत :— हद रचियो ज्याग रह करगह गांमा । स
खाड़ जीरत रा सामा । नुते चोकी करण बड़ नाम
आंच लीये जस लीद अमांम । वांन सात पक्ष क
अण मांत सराया । भरी मात कोठार भराय
उमगा संग हुआरा आया । जाजा कर वे बैत
जीमीया ॥२॥ आंद स्रो लेण संग आंपे । पक गुं
अड़ाई दांव ॥ सवगां डुंगा दुण समांप । कर प
देख होया बीच कांपे ॥१॥ समत १९४८ सुणी
काती सुद हो बीज कहीजो । लखां मुखां सु
हद लीजो । रूपा जोर चरंजी रीजो ॥४॥ जे
बंस री ओपमां तेसी जीले पाणा उण जेठी
साद लगा होले घेरी कीत री सुगंद बांटे
आड़ वारां मेटी सभ्या मांहे बंका न घोरे रां
मेहुठी बदनेस नंद । कोपरां खरांता हीद बां
अरी सो मुजांये केतर । सैजतां करीस रीत धा
मोटा सेव । कड़ा मोती दुपटा बरीस मुरा बाग
पन्नां । देत री ज्यां सुरा गुद रीस बीजा दे
आंजस जोड़ रा हेतर । न भातर सुचालर अ
दीप उग्रा तोला सोइर दां मांय दाव । जो
मोरे धना रेहुणी जलालर गुई । सोभा आछो
योजां बीलालर बसाव । सपुतां हुल से पी
उजवाली जस साखां । लखां बात पाली धरव
नीत सीला जांन भुप धरा देखे आखे बी
होली ओप मारी । रघु दतां देण चाली हेल
राजान ॥४॥ धोरे करां मेरा पणो साटा दना
धुसाड़ रे सुम फेरे भाजा लेजे हे काडे़र । अ
साथे मल पुडां सरांवरा वराजा अजे । गुई क
लाजां सज सोभाग री जोर ॥४॥

—॥ श्री रामजी ॥—

उगत जुगत दीजे अती। कीजे उतम कांम ॥१॥ पचं
मींडर वेखिये। सला करण बड सुद। करण उछब
जेन को। बड़ी बिचारी बुद ॥२॥ कीरत दीखव दे
की। करहो सुजस प्रकास। उछव रंग बरनत अवर
आखु कीत उजास ॥३॥ पुजा वत मगंनो प्रसीद। जेन
धरम गुण जांण। अग वांणी कंठा अक्स ॥ पारस
जती प्रमांण। सांचे उदेन ग सुबीद सुजती बुलाये
दीदे भीरत दीपको। सुद लस सो जाय। दाडम चंद
का दील सुं। जेन मत गुनजांन। मेवाड़ी देस
के मीहिने। ~~[illegible]~~ पारस मीड प्रमांन ॥६॥

दोहा-सोरठा- करण त्यारी कमठांन। मंदीर बन
ओछब महो। सजीयो जर अवसांण ॥ सोमो तो
दाड़म संरो ॥७॥

॥छंद॥ श्री गुन पती धाड़ सुगांन। बीदूर करहु
सुज सब स्थान। केते हु सुजस सारी प्रकास अती
उती जेस जुगती प्रकास ॥१॥ देख्या जु पंच मीड़र
सदीप। मेवार धरा मालिम महीप। गन बुदी तेज
समंजे सुगांन। पारस करन पांच्या प्रमान ॥२॥ माल
मच्या वरां कोर मीठ। मल पण तेन धीन धीन
सवांये। उछव धार कर बीसु रम। जनस खरंदे
खीद जेम। अती अती सांमग्री सब मीलाये। बड़ी
~~[illegible]~~ सास्त्र जेम जुगती बणाये। सुद लास
देख मीरत सो जाय। गांमो जांम कंको त्रीयो तीरकाये
संमत उगणीस बासट जांण। बेसाख सुद छठ्ठा
बखांन। रंग रंग बनो त्या देन राच। नाटक गंद
पता पेई नाच॥ होवे जु चड़त दोन दीनह गांम ॥
तहां त्यारी त्यारी त्यारी तमांम पुरी जु सरब नर
जांण पाये। अब दरस करण मन मे उपाये। इछ
आये देक आलम अनेक। सहो त्यार उमंग
बीद बीद हुलास। सत सास्त्र सहीत मंद प्रकास।
[illegible] आनंद बणाये। सब सब मेजे

बोलत सिवाये। प्रतीमा जु देख करते प्रणाम। तेन साजु छबी प्यारी तमाम। नामी बीराज ज्यां को रखब नाथ। जांकी जु जोत बरनी न जात। दोहु बाजु पारस जी नद सोभा जु सुरीय जेसे जु चंद। अही अहो धार रंग रंग अंग। सेवा सुकरत चीत हुलस संग अती जेन आंगी रचते अनुप॥११॥ सोहे जु आप जग मग सरूप। मल माल मुगट कुंडल जू कांन। लोचन नीरख होवत जुमान। मुगट धारी सीर तुरा मोज। छाजे जु छत्र केतां न चोज॥१२॥ सेरे जु जु केसर अतर सुगंद। बतीसु धुप खेवत उमंद। लीयां होत होत चवर दुलंत। उहां खुब प्यारी के के अवलंत। मीन मीन सहित पुज न भलाय। सोभा अ कहत दीन दीन सवाये॥

परधन दार बे मे वीत धन सेना जोर। फोज के बुचाय बे को तोपन लुपाय रहे। सरज को तापन को छत्र पे सुरीत रखा। पावक वीर छां को नीर नकी धार है। दुख सब होत दुर पुनन की पेल हुते। रोगन के दार बे को ओसद अपार है। मेहेत लछमी लाल नीक कीजे प्रती पाल नेक। अंग रख वाल वे को रीजे तलवार है। सरस अनोखी गार धार सीम जाकी देख। ओर ही अनेक गुन बीबीद अपार है। ठांम ठांम मुठन पे सोहे पत्रीमं सबे। सजीई सेहेत जीद काम इक सार है। त्यारी तमांम जेती मुख पल मुताम मांन। बखाने गांम गांम बडे बडे सीरदार है। मेहेता लछमी लाल कीत नाम अखी यात होत। आछी अमोल दांम रीजे तरवार है॥

सुजस रावत जी श्री १०८ श्री मंदे सुर वाला मेपाल सींग जी कृष्ण वत को छे॥

ईसर के अनी नर हेस हाल कुलीन लेत। जाग सो जपी नरेन छोन गुरेन धीरेन को। सारी सो

कार लार बेद के बिचार ज्यांके। सुद मन सार धार प्रभुता अपार की। कृष्ण पुत बंस अवतंस मेद सुर भुप। रघु कुल रुप हे अनूप अवतार की। पुर प्रत पाल नेक नजर गोपाल तेयो। कोया हे गोपाल तो पे च्यार भुज बार की। सयु से नराक बे मे तप को प्रमान तोर॥ प्रीत री तपाल बे में पुरन प्रबीनो हे। कृष्ण कहे भुपत गोपाल बड दीये बीर। पायके बीड़ोर बेमे पुन्य सो नवीनो है। कीरत करीलीवे कनी पायक भलो भांत होतो। ताको मन मूरख पाप गेह उर कीनो। सेले यो दुसाले अरु कंकन कीजोड़। बारीह दरोज मोज संगत जस लीनो है ॥१॥

दोहा :— बंको धणी गढ़ बार को भल हीरद गोपाल। पचे परसादी प्रेम कर चुडा को प्रत पाल ॥१॥

कवित :— साँजे जानियां सात। बड़ा अकलां भड़ा बंका। सारे कहे सराह दीप जस जाहुरड़ का। पुत्र जस छोलां परणाय। होय नत हरख हे गांभा। खी जोरा अखेड़त। नेक पटते कुल नाम। हेम राज लोयण सोभा हुलस। जोध राज अगजीत रे सजवट सहीत खतर सजो। राखी रजवट के ॥१॥ अगाई काम से अनेक। खरे ईण ठोत सुधार। रन रन बंका डाण। मांझ आदतारां मार। आडु बीरु अग जीत। जाबर श्रब री को जीतो। हेम राज गुण हुत। पुरी धम नीत पिछाणो। जोद राज लोयण सोभा जबर कवे जाहर जस कीत रे। गज सी[illegible] सुतन कारे गरां। राजाई वाली रीत रे। कोदो जोमण जस काज। सेर बड माल सवाया। नुते सम सत न्यात। भरी कोठार भराया। कुना लेत पत अथाह। छोह आलम छक छायो।

जोद राज सोना लीदी जबर। बडो जस कुरब बदावंत॥

दोहा :— ग्रमल गंगा पार हो। न्यात ही गई कि दोरा। नात बड़ी बहु लोक में न्यात उगेरे पार॥ जोरवणा जुग में प्रगट। आप बीपु अधिकार। भोज वंस भोजक भया। सब जाणे संसार॥२॥ सेवा कर सेवग भया। जोसी कास बजंत॥ ओही नमो सब प्रगट है। जानत जुग वरतंत॥३॥ गुर जजमानां बीच को। साचो हेतु चीपाये॥ जे कोई लीह निवार है जी सुस भजे ला सुर राय। आगमीत में हेमा गंग की। कहे खेम कवि राये। भव तारण भागी रती। सब संतन मन भाये॥४॥

छंद मोती दाम :— किते जन भारी ये पीवत भंग। निरंतर भोरा कुडीपे संग। गड़ी गड़ी लेर नये नये रंग। और बहु आवस माचे जंग। गणो नहीं बेरा मात र तात। नमु नमु न्यात नमु नमु न्यात। किते जन पंडित बेत प्रबीन। कोक्षा कन जन सबोद ज कीन। दया कर देखे हे आतम दीन। प्रभु पद रेत सदा लव लीन। नीर तरफे सरीया गुण गावा। किते कवी राज करे जस कीत। सदा सब मारग सुरग रीत। प्रभु पदराय उतम रीत। विचार तेब उतम नव नीत। रटे सीया राम मकू दन रात। जंग सुर नस सब जाणी। जयति गंग जे [illegible] गंग॥ किते सत वात करे सर दार। किते कोहि बाणी पे तुरु विचार। पीये बहु भंग रहे हुसियारा। जनु जर हर कुई त्यांग तुजार। रटे नीस बासुर पोंवड़ होत। किते नर ला बल बोलत जांम। नहीं कुछ बोलन सुध ~~बोला~~ बीचार। जनु ग पड नाम न ने कल गार। मानु जन आप हो के मुज मार। बड़ी अमी मांन बनावे हे वात नमु॥५॥ किते जन ताकत सुने हे बात। लगे

जब होत चले उठ भाग। सब उस त्याग के होस अभाग। इसो कुण पूछे अनीत की बात। नमु० ॥६॥ केते गुन वंत विचारत ग्यांन। रे सुनंद चरे हरि ध्यांन। मैन बड़ वीर उभी रहो गांव पैठे कौव तोई वंजे कौव पात। नम० ॥७॥ केते जन आंगन कोस अपार भरे बहु राग रंगिरव मंडार। खजीना खरत नांहि लंगार। दनो दन दांम दे दांम पुकार। बड़े बड़ कैरे वी रांखी ये बात। नमु नमु० ॥८॥ केते बड़ मांगत को बड़ रीत। जनु ० गर नमुंन नेक अनीत। केते जन बीर बड़े अंग जीत। जनु अन जीत भये बेहे मीत। बड़ी जब्र जंग जीत जोरावर जीत। नमु नमु० ॥९॥

<u>अथ छंद लिखते</u> — नाराज॥ प्रीयंगु वन नील तंने देखो मन मोहिये। सुनर मुरचे अधीक तेज सोहिये। अमंद चंद मंद ये कलाल लाल दी जीये। सुरिंद कोटि कोटि ते। जी नंद रूप नाथीये अतुल्ल फल बहु केह बांन तेन लंगीये। दुर जोध क्रोध जोध वैइरि छांड भगार। पा दीन तुसु दीन बंदु देइ रांन मंगार। सरण जांण स्वामी के। चरणों को बिलगार ॥१॥ सुजोती मोती जोती ये सुदंती पती दीपिये। गुलाल लाल उसृ ते नगाल लोचन रजाये। अनूप रूप देरव फेजी नंदचंद पारसे। पादार मंद बंद वे कुपाय व्याव नासये। अनाथ नाथ दई होत। करो सनाथ वास ये। कमंठ हेठ भंजनु कु करम भर भाजनो। जगत मन रंजनो जगत ये अंग जनो। सपुत यो पार नीरंजनो ॥४॥ पंटु रवजी बंस था। कीछे गुर-उपदेस॥ जालो धर मज जेन को॥ सब होइ जोके देस॥ आदुलार लागा हुवा। जेट भ्रम मोज जीमाये। ईण केई अ उपायसो। जो सु सम लेगा सचो पाये। भांन न होसी सो सो मांन सी

मोडे अर खांम जो लेतो। फैलाई पुरा पुर। कीर
होतो तो काछा कमावतो। भरतो राज में भोग।
बजारो बेर र कांकडा बेचतो। नदां उतारतो लोग।
ओड़ होतो तो बोज उचावतो। इण मे नांह अदुर।
खाडा़ खायां खांम उखोदतो। पाड़ा लादतो पुर।।
कसारो होतो तो पीतल कांसी गुमतो गांमा गाम।
लोटिया ठामरां फुटड़ा लेतो देरन नफा का दांम।
सुतार होतो तो पेटी संदुका। हल गाडा हुसियार।
पाटा कमाड़ा रेट रूपाला। तोरण करतो त्यार। भरावो
होतो तो लेत मताई। हुका बणातो लेसां।।१६।। गारी
होतो तो परावतो गारा। उतारतो उन अथाग। दुणा
भर भर दुद का दुवतो। लरड़ा रेता लार।।१७।। मुसल
मान होतो तो कुरांन के माफक करतो खोछा कांम।
जाये मसीत नीवाज गुजारतो। लेतो अलाका नांम।।
१८।। कुमार होतो तो हांड करतो। गड़तो सुगटा गार।
तरे भरे का बासण रेता। चलतो गंदा के बार।
नाई होतो तो नेरन लगावतो। पेटी राखतो पास।
जाया जणा बन जांण मे जातो और भी करतो आस।।
खेराद़ी होतो तो करता खुबां। चुड़ा खोलावतो
चोका। राता धोला दांत रचावतो। रूपीया लेतो
रोक। बालदी होतो तो लादतो बालद। गुणां उचातो
गजेब। देसां देसां को माल अपाटतो। रतो न
आंणतो रेंज। माली वेतो तो वावतो मुला। गाजरां
को गप साग। केई तरे की चीजां कांदा। ज्यार की
काहा गणतो जाग। छीपो होतो तो साड़ियां छापतो।
रंग पकातो रोज। तावा पाणी मे हात गु गालतो।
बोत उचासा बोज। कुजड़ो होतो तो साग कुदतो।
लादता ऊंट की लार। बजारा आंण के कुजड़ा
बेचे। बांके ओही बोपार। गुजर होतो तो
छाछ गमाड़तो। आंण तो सीधा जाये। चाहा से मोको
देखतो सावत। जठे चरावतो जाय। भाई होतो तो

भार उठावतो। देतो खांदो दोड़। भोपेणां साग बेच
पाणी भरतो। हालतो होड़ां होड़॥२७॥ रंगरेज होते
तो कपड़ा रंगतो। कड़ बंदा साई को काम। लेतो
नोख अनोखी लेतो। पील कुसो कर दाम॥२८॥
नट होतो तो गांम मे नाचतो। ज्यो ध्रुन बंदाये।
नाजक अंग मरोड़तो नरणी। उण को याही उपाये॥२९॥
नायक होतो तो नेम सु चालतो। सोदतो गणो सोहार।
गांम के मांहिने गाड़ बधावतो। दीसतो चो फेकार।
बाजी गर होतो तो नचावतो बांदर। रीछ नचावते
रोज। गांमो गांम भुसावतो गंडक। झोली खांदे बोझ।
भांड होतो तो आद महाई। करतो नुकलां घुत।
राज सभा मे सुख करीतो वातो। बाणतो साग
सावत। कलाल होतो तो काड़तो दारु। सीसा
ले जावतो संग। राजा ने तो खुब रीजावतो। आणतो
रीझ उमंग॥३३॥ ढोली होतो तो बजावतो ढोलको।
तोड़तो सारंगी तान। बांदतो पागड़ी सोगे बांकड़ी। जबरो
सादतो जान। पीनारो होतो तो रूई पीनतो। पुणां
वधावतो पोर। तड़ा तड़ी के तांत जु टुटतो। चोकस
आसरो चोर॥३४॥ सकली गर होतो तो तेग
सुधारतो। आछा त्यार उजास। अमोलक चीजां
कई तेरह की पड़ी ना रेतो पास। सरगाड़ा होतो
तो काव जु सादतो। धध बांके धन कार। बडां
बड़ा सु ढुके बेसतो। रेतो ढेली को लार। चमार
होतो तो चांम उतारतो। करतो चड़स का कुंत।
गाली बजगरो जायद जाणतो। मो चड़ियां मजबुत॥
डाकोत होतो तो रोपणी देखतो लेतो जो साती जेल।
चावर के दन चाल लगावतो ताजाई लावतो तेल॥
बोलो होतो तो फेटा बांधतो। रंगतो भाभड़ा रोज।
कांकड़ कांकड़ धावड़ा काटतो। बावल उचारतो बोझ।
बलाई होतो तो तांणो बांदतो। छकोयो रेतो छेक।
परा पार पार कड़ी पावते। खरा खरी रा खेल॥

कारबेलो होतो तो साप जु काडतो। बणातो जोगी
का बेस॥ गेदड़ा लाद के लावतो ठेलां। दोड़तो
देसा देस॥ कांवड़ होतो तो गावणो करतो आखबा
धोनु ई आन। बैठक कर रीझावे बजावतो।
तरेई तला तान॥ भील होतो तो भाकरां भमतो।
जंगी उंचतो बोझ। नाचतो कुदतो नुगतां मा होने।
मादल बजां मोज॥ मेणो होतो तो धावा मारतो।
लावतो माल जबलूट। ठग होतो तो खोड़ा मे
ठोकतो। जांग के कालतो झूठ॥ मोची होतो तो पग
के माफक। पगरखी परमांण। सींवतो कापा मेलर
सोगे। जग जुल्यां गम साण॥४७॥ धोबी होतो तो
कपड़ा धोवतो। पांणी में उंडे पेस। जणां जणां को
बांधतो मुदा। लावतो उजाला लेस॥४८॥ कांजरो होतो
तो साथ मे कांमणी। कांछड़ी जातरी बेस॥ नाच
रीजये कनांणो लेवतो। भोग करावणा भेस॥४९॥
साठीपो होतो तो बाटीयो सोहे। लर लर करतो
लाग। मरतो पेर अणो बोद मुतर। कुतर जुई
रा काग॥५०॥ बागरी होतो तो लावतो खाजरू। कातो
छुरी कटार। रोकड़ दाम जु लेतो रोज को। बणतो
चोही बोपार। भंगी होतो तो भार उठावतो। झाडु
टोपलो अेलां। तहुके जाये बुहारतो तारछ। खरा
खरी का खेला॥

संपुरण

गीत :— करता नत दांन कीरत कम ठांन। सतरा ओर
जके सम टाणा। हीदत अदत रहत बुद हांण। गुण
का पारख कठो गुमाणां। नल जड़ चपन रा केई
करां। करे मठर जु स्वान कोत करा। तेरा मल
बेल तके आण तरा। पुछण हारा कठे रूप करा।
मुडा पुरस कुबद रा भांड। बुडा पत जके पेहे
काडां। धरम हीण अदत धण ठांड। गुण रूपक
समजे नहीं जोडा। राड़ा देख रात दन रीजे। नंनां
जकण सुनां हेन भीजे। दुष्ट तजे धुल मुह
दीजे। कहे गंग न्यारो कीरत नह कीजे ॥४॥
॥सैवेयौ॥ चंदर सुरज थेषी नहीं। जब आप ही आप
अलंकृत होत॥ पो गमा पा ने इच्छा करी। भये
ब्रमज बोलिये बेद भता। बेद उतार कवीस्य
रचो। गुन रा जब गाय के रेता रता। गुर देव
कपाल की कृपा भई। जब ही के भीरामंन के
ही बत॥ ९॥
॥छपे॥ :— पीगल बेद पुराण। सरस कीवता रस
संगार। आगनंती मर परी हरन। भये जु प्रगटी
दीवा करां। काव्य कीयो बहु भांत। सरस कीवता
रस गाये। अरथ अनंत अपार। भोज राजो मन
भाया। जानत सकल जीहान में। आज सुजस
नत नये। भई प्रसन्न देवी कालिका। कनो काली
दास सामन भये।
॥कवित्त॥ कपटी कठोर पेही पेके होत चीठा। अपनो न खोले
बात बेरी आंन जी केहो। छपके चितांग के फलांग
के परोये प्रान। हरस हमेस जैसे पुत पारथो के है।
गर कन बार कन मित्र धरम करम कन। गुर केन
पीर कन बार हम देखे नीच। मुंह के मुलाम ~~बार हम देखे नीचा~~। गुलाम करनो के हो। जानत
जीहान हमे मानत सब राव रांने के। करत सुन
मांन दांन रीझ तुर ओड़े को। सभा मे जावे रीझावे

सुर बारन का। खातर खेत नहि हस धग मगन गुन बोलते। गुन जु सुनत न रीझोय। देवो धकबीन सोच। सोच धक धर्म न आवय। धरम जु धक बिन दया। दया धक अर कोई अवय। अरो धक चीत न सालहो। मती धक केसब गंन बीम। जग्नं जु धक बीन हरी भजो। धक मे हे कात न सोच जीन। सुमन केसे रमे कोवता कमाने काहर। मुरख का बास में पंडित का ज चीये। नागा का नगन मांहे धोबी कहा धपाय खात। गरंम गध राहु जामे बेस्या काहर बसीये। सेव अंदे सुर दास जा कोम आरसी को काहर। ग्ररंड के बाग मे केसर कहा राचीये। बेरी के बास मोहे रंग राग कोन सुने। मुरख अजांण आगे कवीता काहर सचीये॥३॥

कवित्त॥—— जीमेनो बकालन को। पर धरम जीमत ने। माप लेत देख हो कवा में बड वार को। लडू तेल राईल में के रार कर राय ताते जूजत अर बीकार फार मुरख फारा को। भेज भगवांन देखो कता कंद खात केसे। जोर का कफार देत फुहु खीर खादा के। माल के नरे ते फेर जोय रहे वाहि पात चाटा भेस। चोर जैसे चार जात खारा को॥

दूहे।—— वदगा जीन वार। आछो बडंगा अब आसो। रीज कोयो रावजी। जके खाली कीम जासो। नत आगा नी सेरे। अचरज पण आवे। खेव बडो ~~राज~~ रजपुत। सेमे देखती रोवे। जणांता जु हो नौकरी जरद। जद बीव रोरो कां। राज रोरो को टारा। बता रोरो बडो सरब नोरो सीर दारां। रज वार बीच तो मोटो रख। रोरो भगल केहरो। नीसेर कम छोरो नहीं। करडो रोरो केहरो। छंद रोरो छोरीयां। रूप रोरो रणवासां। सुरख रोरो [illegible]। [illegible] रोरो अंब कासां। गुन रोरो [illegible]

तीन रागमेन तोड़े। रोटो अंब कासा। ~~हुन~~ रोटो
भोजन क्रो। सदा रावर रे सोड़े। अंगोरा नजर
आवे ऊसो। रोटो मीत्तेन रावजो॥

श्री गुणेशाय नमः प्रासादातु ओसवस साडा चीतो
सर साह की मची लीरवते: — कीरत श्री सोग
की करवां॥ ध्यान जसो बसगती को धरां। सदा
भुवानी समर सगती। सची आंसे मे सांची। ओस
वंस की कीरत आरवू। ~~अत~~ उगती दीजो आछी।
नजर आई सामा हो नेरे सुर। राजा ओ यल राजे
जबर रवांप पुवारज जोंठो। छत्र धारां सीर छाजे।
तारा तंबोल नगर सुतका। पु प्रभु रतन पधारे।
छोड़ दियो सब मारग छगो। धरम जांन जद
धारे। ओस वाल आई पना बीये बाइसा। काची।
रुयनी रचना देव न रुची। सतंग रत्ना लोयां साथ
साड़ा चीमोतर साह संग में। जबर हुवा पज जोंठे
सवा सुख जस संका रो सदता। हदता यत हुता
साठो। पेला साह श्री मालजु। पदवी साह की
पावो। कोई नांम हाल सु कीरत। लारवां दूबेंहुतो
चोरड़ीया मे साह जु चीवो। मरद पाटण मांही।
गुजरात मे नंदी जो कसे चकाई। रवेवे सरा पदवी
साह रवरते। रीत ऊसी बिद रारवो। जो पाट
सोना का नजर। सोकर जोरी सारवी। सोला
सुतन सेवंगा सम पीठा कुर पदवी गई। पनड़ो
तरा माहीने पर सीद जगडु. ~~रक~~ जोमाई। बीसल
साह कीत सब रीज। आबु गद पर अंबी।
~~जन~~साह रोपो धर पंगां। हो खुदा हो नेवी॥8
पोर वाड़ धनां ने पर सीद। दरसण अरिहत
दीना। राण पुरा का मंदिर रुड़ा। कांना रचो
कीन॥१०॥ बोहोंगे क्रम चंद बरवाणे। मालम चहुं
दीस मेले। लारव प्रसाव कीरत रे ले रवे। दुनियां

हुं तज दैतो। चग कोट गढ़ साहज चुडो। मंड
हद मारी। अंन बार अड़ खटो आंको। पल परका
उबरी। हीरानंद न पुना हुव हो। मिली लक्ष्मी मात
बावन लारव प्रसाँव बापज। समप्या देरव सुमाल।
बागैर चंदन चढता बांटी। सुदर पांच सरारा।
ओसल साह गुणां रा गहक। धन धन कहे
धरारा। पोर वाड़ धरणा धर ऊपर। सो जग आरंभ
संज्या। तेज पाल वरत पालत कासु बेहु साज
निवाज्या॥१५॥ कवर पाल सोम पाल कहीजे
जेसल मेर जलाला। हेवर पचीस सम्यापा हातां।
वाता अमर विलाला। पेम चंद डुगर पर पर
सीद। सद तास वजे सनी। कर कर जंग वरी
हपा कबीयां। जोम रतीन जे जंगी॥१७॥ उदियां
पुर के बीच ओरव। भलो कावड़ो भामो। जगन
हजारी आया जांचण। करे राण गर कानो। लारव
प्रसाव देणज जलाँ। कवियां • मात जके के।
हे कोई भाजन जगन हजारी। ढगारी हु देवे॥१८
साहा भामा कला दसत क्रवी। दुरस चोगुणो दुर।
गांव अकोला मांहि गुडुडे। सप्यो सी सज सुरी॥
सुरा सारा देरव सी सनग भये मुठा सुमारेवा।
आदर तारी बणो नी आवे। तुरत परो तुला को।
भोमे लरवत कड़ावा ~~ओरो~~। ~~तु~~ ~~मेजा~~ मेज्या।
मुलक की मेवाड़ जमये। दस बिस गांमा लरव
दीना। अब को रवेर आये। सेर कोठार मे
नोर सुरांणो। पुगत से वगा पोले। लरवत
फाड़ मेयारा लरवीया। गावण गाणा रा गोले।
पोरवर पा सेवग को पर सीद। मुदत मनोहर
मंडीयो। सोदेल तणा वर दहे सेसा वहल।
धन कहे कनह छीडियो। साह दीयाल जोत
सुर परियो। राज सीके जद रांणा। बिसनु

सीव जान प्रेम साबत। हीया अचक कम ठाऊं। मां पाती माली हुमेर लहु। दिल मे सादर साथे। मेरण मुर धर तैंगा। गुण सेवगां गाया। जो थाने लोडुं जांगा। चीरत उठ मेकीदो। दस सेस की पुन्या देखे दान साहिमल पीदी॥

~ सम्पूरण ~

Khalaf

24.6.47.